3 राजधानी
सौम्या की मां ने दोषियों के लिए उम्रकैद की मांग की

6 अभिमत
नियंत्रणों से डिस्काम पर संकट

10 विदेश
इजराइल को और सैन्य सहायता भेज रहा अमेरिका

12 स्पोर्ट्स
रोहित वनडे रैंकिंग में छठे पायदान पर पहुंचे

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 11 अंक 341
नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 19 अक्टूबर, 2023
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

अनिश्चितताओं के लिए सदैव तैयार रहे सेना

राष्ट्रीय-11

गाजा के अस्पताल पर हुए हमले से मोदी दुखी

- कहा- हमले की जवाबदेही तय हो, दुनिया भर के कई नेताओं ने घटना की निंदा की
- अमेरिका के राजनयिक प्रयास पटरी से उतरे, बाइडन व अरब नेताओं के बीच प्रस्तावित शिखर सम्मेलन रद्द
- बाइडन ने कहा, लगता है हमला इजराइल ने नहीं किया, मिस्र को गाजा तक मानवीय सहायता पहुंचाने की अनुमति देगा तेल अवीव

बेन गुरियोन हवाई अड्डे पर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन का स्वागत करते इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू।

पीएनएस/एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को गाजा के एक अस्पताल पर हुए हमले में लगभग 500 लोगों की मौत पर दुख व्यक्त किया और पीड़ितों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। उन्होंने यह भी कहा कि इस कृत्य में शामिल लोगों को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। इस घटना की दुनिया भर के कई नेताओं ने निंदा की है। संयुक्त राष्ट्र ने भी हमले पर दुख जताया है। वहीं इजराइल पहुंचे अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने बुधवार को कहा कि उन्होंने जो देखा, उसके आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि गाजा अस्पताल में जानलेवा विस्फोट किसी दूसरी टीम ने किया था, न कि इजराइली सेना ने।

बाइडन ने विस्फोट के लिए फलस्तीनी उग्रवादी समूह इस्लामिक जिहाद को जिम्मेदार ठहराने के इजराइल के दावे को स्वीकार किया। बाइडन ने कहा कि कई लोग ऐसे हैं जिन्हें इस बारे में पक्की जानकारी नहीं है कि गाजा के बीचोंबीच स्थित अल-अहली बाप्टिस्ट अस्पताल में विस्फोट किसने किया। अस्पताल में विस्फोट होने के बाद इजराइल के उसकी रक्षा के अधिकार के लिए समर्थन जुटाने के अमेरिका के नेतृत्व वाले राजनयिक प्रयास पटरी से उतर गए हैं और जॉर्डन के अम्मान में राष्ट्रपति बाइडन तथा अरब नेताओं के बीच प्रस्तावित शिखर सम्मेलन रद्द कर दिया गया है। जॉर्डन के विदेश मंत्री आयमान सफादी ने ऐलान किया कि अम्मान में बुधवार को बाइडन की होने वाली बैठकों को रद्द कर दिया गया है। इस बीच, इजराइल ने बुधवार को कहा कि वह मिस्र को गाजा पट्टी में मानवीय सहायता की सीमित खेप पहुंचाने की अनुमति देगा। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने कहा कि इजराइल की यात्रा पर आए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के नुरोध पर यह फैसला लिया गया है। मोदी ने एक्स पर कहा कि गाजा के अल अहली अस्पताल में लोगों की दुखद मौत से गहरा सदमा लगा है। पीड़ितों के परिवारों के प्रति हमारी हार्दिक संवेदना और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना। प्रधानमंत्री ने कहा कि मौजूदा संघर्ष में नागरिकों का हताहत होना गंभीर और निरंतर चिंता का विषय है।

इसमें शामिल लोगों को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। संयोगवश, मोदी उन पहले विश्व नेताओं में से एक थे जिन्होंने 7 अक्टूबर को इज़राइल पर हमास द्वारा किए गए हमले को आतंकवादी हमला बताया था। इजराइल और हमास के बीच शत्रुता तब शुरू हुई जब गाजा पट्टी में स्थित सशस्त्र हमास आतंकवादियों ने 7 अक्टूबर को जमीन, हवा और समुद्र के रास्ते इजराइल पर अभूतपूर्व हमला किया। जंग शुरू होने के बाद से करीब 2,778 फलस्तीनी मारे गए हैं। मीडिया रिपोर्टों में आधिकारिक इजराइली सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि इज़रायल में कम से कम 1,400 इज़रायली और विदेशी नागरिक मारे गए हैं। हमास द्वारा 20 मिनट में इज़राइल पर 5,000 रॉकेट दागने और 7 अक्टूबर को ज़मीन, हवा और समुद्र से बहु-आयामी हमला शुरू करने के तुरंत बाद एक पोस्ट में, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि वह 'इज़राइल में आतंकवादी हमलों की खबर से गहरे सदमे में हैं।' उन्होंने मुश्किल घड़ी में देश के साथ भारत की एकजुटता व्यक्त की।

मोदी ने 10 अक्टूबर को इज़राइल के लिए अपना समर्थन दोहराया। उन्होंने पोस्ट किया था कि इज़राइल के प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने उन्हें फोन किया था और उन्हें भीषण संघर्ष पर नवीनतम जानकारी दी थी। मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया कि मैं प्रधानमंत्री नेतन्याहू को उनके फोन कॉल और मौजूदा स्थिति पर अपडेट देने के लिए धन्यवाद देता हूं। भारत के लोग इस कठिन समय में इजराइल के साथ मजबूती से खड़े हैं। भारत दृढ़ता से और स्पष्ट रूप से आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों की निंदा करता है। उसी सप्ताह नई दिल्ली में जी20 संसदीय अध्यक्षों के शिखर सम्मेलन में बोलते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि दुनिया में कहीं भी और किसी भी रूप में आतंकवाद मानवता के खिलाफ है और इस बात पर जोर दिया कि यह शांति और भाईचारे का समय है। दुनिया से मानव-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने का आह्वान करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया के किसी भी हिस्से में संघर्ष और टकराव हर किसी को प्रभावित करते हैं और किसी को फायदा नहीं पहुंचाते हैं। ताजा घटना की बात करें तो गाजा शहर के अल-अहली अस्पताल में हुए धमाके में कम से कम 500 लोग मारे गए हैं. हमास ने दावा किया कि यह विस्फोट इजराइली सेना के हवाई हमले का नतीजा था। हालाँकि इज़राइल रक्षा बल ने कहा कि उनका इस घटना से कोई संबंध नहीं है और कहा कि विस्फोट फलस्तीनी सशस्त्र समूह, इस्लामिक जिहाद द्वारा मिसाइल मिसफायर के कारण हुआ।

ई देशों के प्रमुखों और संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों ने इस घटना पर दुख व्यक्त किया। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के महासचिव एंटोनियो गुतारेस ने कहा कि वह 'सैकड़ों नागरिकों की हत्या से भयभीत हैं' उन्होंने हमले की कड़ी निंदा की और कहा कि उनका 'दिल जान गंवाने वालों के परिवारों के साथ है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि वह गाजा अस्पताल में विस्फोट से 'क्रोधित' हैंऔर उन्होंने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा टीम को वास्तव में जो हुआ था उसके बारे में जानकारी इकट्ठा करने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राज्य (शेष पेज 9)

पंचम स्कंदमाता

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥

पहाड़ों पर रहकर सांसारिक जीवों में नवचेतना का निर्माण करने वालीं स्कंदमाता। नवरात्र में पांचवें दिन इन देवी की पूजा-अर्चना की जाती है। कहते हैं कि इनकी कृपा से मूढ़ भी ज्ञानी हो जाता है। स्कंद कुमार कार्तिकेय की माता के कारण इन्हें स्कंदमाता नाम से अभिहित किया गया है। इनके विग्रह में भगवान स्कंद बालरूप में इनकी गोद में विराजित हैं। इन देवी की चार भुजाएं हैं। यह दायीं तरफ की ऊपर वाली भुजा से स्कंद को गोद में पकड़े हुए हैं। नीचे वाली भुजा में कमल का पुष्प है। बायीं तरफ ऊपर वाली भुजा में वरदमुद्रा में हैं और नीचे वाली भुजा में कमल पुष्प है। इनका वर्ण एकदम शुभ्र है। यह कमल के आसन पर विराजमान रहती हैं। इसीलिए इन्हें पद्मासना भी कहा जाता है। सिंह इनका वाहन है।

आचार समिति ने सांसद निशिकांत और वकील देहाद्रई को बुलाया

- मौखिक साक्ष्य के लिए 26 अक्टूबर को समिति के समक्ष पेश होने को कहा

महुआ मोइत्रा मामला

महुआ मित्रा की फाइल फोटो

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

लोकसभा की आचार समिति ने तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की सांसद महुआ मोइत्रा पर सवाल पूछने के बदले धन लेने के आरोप के संबंध में बुधवार को भाजपा सांसद निशिकांत दुबे और वकील जय अनंत देहाद्रई से कहा कि वे मौखिक साक्ष्य के लिए 26 अक्टूबर को उसके समक्ष पेश हों।

लोकसभा सचिवालय द्वारा भेजे गए पत्र का विषय है, संसद में सवाल पूछने के बदले धन लेने में कथित प्रत्यक्ष संलिप्तता को लेकर सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ 15 अक्टूबर को दी गई अपनी शिकायत के संबंध में सांसद डॉ. निशिकांत दुबे का मौखिक साक्ष्य। सचिवालय के एक अधिकारी द्वारा भेजे गए पत्र में कहा गया है, उन्हें यह सूचित करने का निर्देश दिया गया है कि आचार समिति ने उपरोक्त मामले में बृहस्पतिवार, 26 अक्टूबर को व्यक्तिगत रूप से आपकी बात सुनने का फैसला किया है।

दुबे ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर मोइत्रा पर संसद में सवाल पूछने के बदले एक उद्योगपति से रिश्वत लेने का आरोप लगाया है और बिरला से आग्रह किया है कि इन आरोपों की जांच के लिए समिति का गठन किया जाए। मोइत्रा ने पलटवार करते हुए कहा है कि वह लोकसभा अध्यक्ष द्वारा उनके (दुबे) खिलाफ लंबित आरोपों के निस्तारण के बाद अपने खिलाफ किसी भी कदम का स्वागत करती हैं। मोइत्रा ने दुबे, देहाद्रई और कई सोशल मीडिया मंचों तथा मीडिया प्रतिष्ठानों को उनके खिलाफ कोई भी कथित फर्जी और अपमानजनक सामग्री पोस्ट करने, प्रसारित करने या प्रकाशित करने से रोकने का अनुरोध करते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है।

दुबे ने बिरला को लिखे पत्र में वकील देहाद्रई से मिले पत्र का हवाला देते हुए कहा कि वकील ने तृणमूल नेता और एक व्यवसाई के बीच रिश्वत की लेन-देन के अकाट्य सबूत साझा किए हैं। भाजपा सांसद ने आरोप लगाया है कि हाल तक लोकसभा में मोइत्रा द्वारा पूछे गए 61 में से 50 प्रश्न अडाणी समूह पर केंद्रित थे, जिस पर तृणमूल सांसद ने अकसर कदाचार का आरोप लगाया है। उनका आरोप है कि मोइत्रा एक प्रतिद्वंदी व्यवसाई के इशारे पर अडाणी समूह को निशाना बना रही हैं।

आयुर्वेद दिवस को वैश्विक उत्सव की तरह मनाएंगे

- 10 नवंबर को धन्वंतरि जयंती के साथ आयुर्वेद दिवस करीब 100 देशों में वैश्विक स्तर पर मनाया जाने वाला है, इसे दुनिया के अन्य हिस्सों में फैलाने की है योजना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दस नवंबर को धन्वंतरि जयंती के साथ 'आयुर्वेद दिवस' लगभग 100 देशों में वैश्विक स्तर पर मनाया जाने वाला है, जिसमें केंद्रीय आयुष मंत्रालय इसकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए सभी राष्ट्रीय मंत्रालयों से समर्थन जुटाने के मिशन पर है। वर्तमान में 30 से अधिक देशों ने आयुर्वेद को पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के रूप में स्वीकार कर लिया है।

सरकार की योजना 100 देशों में आयुर्वेद दिवस समारोह मनाने की है तथा इसे दुनिया के अधिक हिस्सों में फैलाने और वैकल्पिक चिकित्सा प्रणाली को मान्यता देने की योजना है। मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि इसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के प्राचीन ज्ञान का प्रचार और प्रसार करना है। इसमें केंद्रीय विषय 'एक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद'। इसके तीन प्रमुख स्तंभ होंग 'छात्रों के लिए आयुर्वेद', 'किसानों के लिए आयुर्वेद', 'सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद।' इस संबंध में केंद्रीय आयुष मंत्रालय ने हाल ही में डी-डे के सफल आयोजन को सुनिश्चित करने के लिए कई विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए विभिन्न मंत्रालयों की एक बैठक की। बैठक की अध्यक्षता करते हुए आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कोटेचा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप आयुर्वेद दिवस को देश के सभी मंत्रालयों के आपसी सहयोग और समर्थन से एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में आयोजित किया जाना चाहिए। मुख्य रूप से गृह, संस्कृति, विदेश, जनजातीय, जल संसाधन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, सीएसआईआर आदि जैसे मंत्रालयों और विभागों ने अपने विचार साझा किए तथा डिजिटल प्रौद्योगिकी की शक्ति का उपयोग करके और विभिन्न भागीदारी को जुटाकर 'आयुर्वेद दिवस' को एक वैश्विक उत्सव बनाने पर जोर दिया।

गतिविधियाँ। आयुष मंत्रालय के तहत केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), 2023 में आयुर्वेद दिवस कार्यक्रमों के लिए समन्वय एजेंसी होगी। दस अक्टूबर को, केंद्रीय आयुष मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा था कि 'हर दिन सभी के लिए आयुर्वेद' थीम का चयन कृषि-आयुर्वेद को बढ़ावा देने, लोगों को सशक्त बनाने और स्वयं-भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करके स्वास्थ्य को बढ़ावा देने तथा आयुर्वेद की क्षमता का दोहन करने के लिए पेशेवरों को प्रोत्साहित करने पर ध्यान देने के साथ किया गया है।

उन्होंने कहा था कि इसमें टिकाऊ कृषि, मानव, पशु, पौधे, वन और जलीय कृषि स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा आदि पर ध्यान केंद्रित करने वाले कई क्षेत्र शामिल हैं। पिछले आठ वर्षों में मोदी सरकार आयुर्वेद सहित आयुष को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठा रही है। कोटेचा ने बताया कि राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत कुल 12,500 आयुष स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से 8095 पहले से ही चालू हैं। इसके अलावा, केंद्र सरकार की प्रमुख दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (डीडीयू-जीकेवाई) के तहत, भारत भर के ग्रामीण इलाकों की महिलाओं और युवाओं को आयुर्वेद पाठ्यक्रमों में कौशल प्रदान किया जा रहा है और विभिन्न कल्याण केंद्रों में नौकरियों में रखा जा रहा है।

विश्व कप क्रिकेट

- **परिणामः** न्यूजीलैंड ने अफगानिस्तान को 149 रन से हराया
- **आजः** भारत और बांग्लादेश

क्विक न्यूज

रघुवर दास को ओडिशा, इंद्र सेना रेड्डी नल्लू को त्रिपुरा का राज्यपाल बनाया गया

नई दिल्ली। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास को ओडिशा और भारतीय जनता पार्टी के नेता इंद्र सेना रेड्डी नल्लू को त्रिपुरा का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। राष्ट्रपति भवन से बुधवार को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को ए नियुक्तियां करते हुए खुशी हो रही है। इसमें कहा गया है कि दोनो पदो पर नियुक्ति उस तारीख से प्रभावी होगी जब दास और नल्लू अपने-अपने कार्यभार संभालेंगे।

सौम्या विश्वनाथन हत्याकांड के सभी आरोपी दोषी करार

- साकेत कोर्ट ने रवि कपूर, अमित शुक्ला, बलजीत मलिक, अजय कुमार और अजय सेठी को दोषी माना, 15 साल पहले महिला पत्रकार की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी
- 26 अक्टूबर को हो सकता है दोषियों के लिए सजा का ऐलान

एजेंसी। नई दिल्ली

वर्ष 2008 में टीवी पत्रकार सौम्या विश्वनाथन की हत्या के मामले में साकेत कोर्ट ने सभी पांच आरोपियों को दोषी करार दिया है। कोर्ट ने रवि कपूर, अमित शुक्ला, बलजीत मलिक, अजय कुमार और अजय सेठी को दोषी माना। इस मामले की अगली सुनवाई 26 अक ?टूबर को होगी। उसी दिन पांचों दोषियों के लिए सजा का ऐलान हो सकता है। दोषियों को मकोका, हत्या और लूट में दोषी करार दिया गया है। साथ ही अजय सेठी को दोषियों की मदद करने और मकोका में दोषी करार दिया गया है। विश्वनाथन की 15 साल पहले कार्यालय से घर लौटते समय गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस बीच सौम्या की मां माधवी विश्वनाथन ने बेटी की हत्या के जुर्म में दोषी ठहराए गए सभी दोषियों के लिए आजीवन कारावास की मांग की है। साथ ही कहा कि उन्हें वही भुगतना चाहिए जो उनके परिवार को भुगतना पड़ा है।

अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश रवींद्र कुमार पांडे ने रवि कपूर, अमित शुक्ला, बलजीत और अजय कुमार को महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम (मकोका) के प्रावधानों के तहत भी दोषी ठहराया। पांचवें आरोपी अजय सेठी को भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 411 (बेईमानी से चोरी की संपत्ति प्राप्त करना) और मकोका प्रावधानों के तहत संगठित अपराध को अंजाम देने, सहायता करने या जानबूझकर इसे बढ़ावा देने और संगठित अपराध की आय प्राप्त करने की साजिश रचने के लिए दोषी ठहराया गया। न्यायाधीश ने कहा कि अभियोजन पक्ष ने आरोपियों के खिलाफ आरोपों को बिना किसी संदेह के साबित कर दिया। विश्वनाथन की 30 सितंबर, 2008 को गोली मारकर तब हत्या कर दी गई जब वह तड़के करीब साढ़े तीन बजे काम के बाद कार से घर लौट रही थीं। पुलिस ने दावा किया था कि हत्या का मकसद लूटपाट था। हत्या के आरोप में पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया था और वे मार्च 2009 से हिरासत में हैं। पुलिस ने कहा कि आईटी पेशेवर जिगिशा घोष की हत्या में इस्तेमाल किए गए हथियार की बरामदगी से विश्वनाथन की हत्या के मामले का खुलासा हुआ। मलिक द्वारा त्वरित सुनवाई के लिए वर्ष 2019 में दिल्ली उच्च न्यायालय का रुख करने के बाद इसने निचली अदालत से एक रिपोर्ट मांगी, जिसमें पूछा गया कि साढ़े नौ साल पहले आरोपपत्र दाखिल होने के बावजूद मुकदमे का निपटारा क्यों नहीं हुआ। निचली अदालत ने उच्च न्यायालय को सूचित किया था कि देरी मुख्य रूप से अभियोजन पक्ष के गवाहों की गैर-मौजूदगी और विशेष लोक अभियोजक की नियुक्ति में लगने वाले समय के कारण हुई। निचली अदालत ने अगस्त 2016 में जिगिशा घोष हत्या मामले में कपूर और शुक्ला को मौत की सजा तथा मलिक को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। हालांकि, जनवरी 2018 में, हाईकोर्ट ने कपूर और शुक्ला के मृत्युदंड को उम्रकैद में बदल दिया।

यूपी के गांवों में जल्द डिजिटल डॉक्टर क्लीनिक

- ऑनलाइन वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से डॉक्टरों के परामर्श के साथ प्रयोगशाला की सुविधाओं के साथ सस्ती दवाएं भी उपलब्ध होंगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश सरकार राज्य के ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए गांवों में 'डिजिटल डॉक्टर क्लिनिक' स्थापित करेगी।

ये 'डिजिटल डॉक्टर क्लिनिक' प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की तरह काम करेंगे, जहां न केवल ऑनलाइन वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से डॉक्टरों का परामर्श उपलब्ध होगा, बल्कि प्रयोगशाला सुविधाओं के साथ दवाएं भी उपलब्ध होंगी। वर्तमान में, डिजिटल डॉक्टर क्लिनिक एक पायलट प्रोजेक्ट का हिस्सा है और जल्द ही लखनऊ और बुलंदशहर में 20 केंद्रों में खोला जाएगा।

इसके बाद इसका विस्तार पूरे प्रदेश में किया जाएगा। सरकार ने इस प्रोजेक्ट के लिए ओबडू ग्रुप के साथ 350 करोड़ रुपये का एमओयू साइन किया है। ओबडू ग्रुप के सीईओ संजय कुमार ने कहा कि फिलहाल इसके लिए पांच डॉक्टरों को काम पर रखा गया है, जबकि 10 अन्य डॉक्टरों को लाइन में लगाया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि वे स्टार्टअप को लेकर कुछ अन्य निवेशकों के साथ बातचीत कर रहे हैं और उनका लक्ष्य इस एमओयू को 1,000 करोड़ रुपये तक बढ़ाना है।

डिजिटल डॉक्टर क्लिनिक एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र है जो दोनों टेलीमेडिसिन शाखाओं (परामर्श केंद्र और विशेष केंद्र) को जोड़ता है। इसे न केवल ऑनलाइन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग बल्कि एक योग्य स्वास्थ्य देखभाल सहायक प्रदान करके ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल में सुधार करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो रोगी की देखभाल करेगा और डॉक्टर और रोगी के बीच संचार की सुविधा प्रदान करेगा। ब्लॉकचेन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक का उपयोग करके, सर्वश्रेष्ठ एमबीबीएस डॉक्टर तकनीक के माध्यम से गांवों और दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में मरीजों तक पहुंचेंगे और सही उपचार और आवश्यक दवाएं प्रदान करेंगे। इन क्लीनिकों में इलाज के दौरान मरीजों को सभी प्रकार की (शेष पेज 9)

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, निर्माण शाखा,
उत्तराखण्ड पेयजल निगम, रामनगर (नैनीताल) पिन कोड-244715
(ई–मेल : eecdujnramnagar@gmail.com, फोन : 05947-251259)

पत्रांक : 2063/विविध–14/98 दिनांक : 17.10.2023

अल्पकालीन निविदा सूचना

एतद्द्वारा जनपद–नैनीताल के विकासखण्ड–रामनगर, बेतालघाट एवं कोटाबाग की निम्न पेयजल योजनाओं के निर्माण (मरम्मत कार्य) एवं तत्सम्बन्धी कार्यों हेतु उत्तराखण्ड पेयजल निगम विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से पृथक–पृथक एकल निविदा पद्धति निविदा प्रणाली के अन्तर्गत मुहरबन्द निविदायें टैण्डर बॉक्स के माध्यम से दिनांक 31.10.2023 को अपरान्ह् 3:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। प्राप्त निविदाऐं दिनांक 31.10.2023 को ही अपरान्ह् 03:30 बजे उपस्थित निविदादाताओं अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधि के समक्ष अधोहस्ताक्षरी द्वारा इस कार्यालय में खोली जायेंगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 30.10.2023 की सायं 05:00 बजे तक बिक्री किये जायेंगे।

क्र0 सं0	विकास खण्ड	योजना का नाम	धरोहर धनराशि रुपये	निविदा प्रपत्र का मूल्य (18% GST सहित) रुपये	कार्य पूर्ण करने की अवधि	विभाग में न्यूनतम पंजीकरण की श्रेणी
01	02	03	04	05	06	07
1	बेतालघाट	धारी खैरनी पेयजल योजना (निर्माण व मरम्मत कार्य) (जे.जे.एम.)	20,000.00	1180.00	डेढ़ माह	क्लास 'डी0' पाईप लाईन
2	बेतालघाट	मझेड़ा ब्यासी पेयजल योजना (निर्माण व जल संयोजन) (जे.जे.एम.)	20,000.00	1180.00	डेढ़ माह	
3	कोटाबाग	नन्दपुर खेमपुर पेयजल योजना (निर्माण व जल संयोजन कार्य) (नाबार्ड)	15,000.00	1180.00	डेढ़ माह	
4	रामनगर	उदयपुरी बन्दोबस्ती पेयजल योजना (फ्लोरिंग कार्य) (जे.जे.एम.)	6,500.00	590.00	डेढ़ माह	
5	रामनगर	कार्यायल परिसर में मरम्मत फ्लोरिंग कार्य (जिला योजना)	20,000.00	1180.00	डेढ़ माह	

नोट– 1. निविदा शर्तो का अवलोकन किसी भी कार्य दिवस में शाखा नोटिस बोर्ड पर चस्पा निविदा सूचना में किया जा सकेगा।
2. निविदा क्रय करने हेतु आवेदन पत्र के साथ पंजीकरण प्रमाण–पत्र एवं ठेकेदार का जी0एस0टी0 में पंजीकरण होना अनिवार्य है। शेष शर्ते निविदा प्रपत्र के अनुसार रहेंगी।

अधिशासी अभियन्ता

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, निर्माण शाखा,
उत्तराखण्ड पेयजल निगम, रामनगर (नैनीताल) पिन कोड-244715
(ई–मेल : eecdujnramnagar@gmail.com, फोन : 05947-251259)

पत्रांक : 2064/विविध–14/99 दिनांक : 17.10.2023

अल्पकालीन निविदा सूचना

एतद्द्वारा जनपद–नैनीताल के विकासखण्ड–बेतालघाट एवं कोटाबाग की निम्न पेयजल योजनाओं के निर्माण (मरम्मत कार्य) एवं तत्सम्बन्धी कार्यों हेतु उत्तराखण्ड पेयजल निगम विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से पृथक–पृथक एकल निविदा पद्धति निविदा प्रणाली के अन्तर्गत मुहरबन्द निविदायें टैण्डर बॉक्स के माध्यम से दिनांक 31.10.2023 को अपरान्ह् 3:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। प्राप्त निविदाऐं दिनांक 31.10.2023 को ही अपरान्ह् 03:30 बजे उपस्थित निविदादाताओं अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधि के समक्ष अधोहस्ताक्षरी द्वारा इस कार्यालय में खोली जायेंगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 30.10.2023 की सायं 05:00 बजे तक बिक्री किये जायेंगे।

क्र0 सं0	विकास खण्ड	योजना का नाम	धरोहर धनराशि रुपये	निविदा प्रपत्र का मूल्य (18% GST सहित) रुपये	कार्य पूर्ण करने की अवधि	विभाग में न्यूनतम पंजीकरण की श्रेणी
01	02	03	04	05	06	07
1	बेतालघाट	चापड़ पेयजल योजना (संचालन एवं रखरखाव कार्य) (जिला योजना)	5,400.00	590.00	पाँच माह	क्लास 'डी0' पाईप लाईन
2	बेतालघाट	मल्ला गांव पेयजल योजना (संचालन एवं रखरखाव कार्य) (जिला योजना)	4,600.00	590.00	पाँच माह	
3	बेतालघाट	धारी खैरनी पेयजल योजना (संचालन एवं रखरखाव कार्य) (जिला योजना)	10,600.00	1180.00	पाँच माह	
4	बेतालघाट	भतरौंज रिची थापल पेयजल योजना (संचालन एवं रखरखाव कार्य) (जिला योजना)	10,600.00	1180.00	पाँच माह	
5	कोटाबाग	नन्दपुर खेमपुर पेयजल योजना (संचालन एवं रखरखाव कार्य) (जिला योजना)	5,000.00	590.00	पाँच माह	

नोट– 1. निविदा शर्तो का अवलोकन किसी भी कार्य दिवस में शाखा नोटिस बोर्ड पर चस्पा निविदा सूचना में किया जा सकेगा।
2. निविदा क्रय करने हेतु आवेदन पत्र के साथ पंजीकरण प्रमाण–पत्र एवं ठेकेदार का जी0एस0टी0 में पंजीकरण होना अनिवार्य है। शेष शर्ते निविदा प्रपत्र के अनुसार रहेंगी।

अधिशासी अभियन्ता

कार्यालय जिला पंचायत ऊधमसिंह नगर

पत्रांक : 4065/विज्ञप्ति/2023–24 दिनांक : 17.10.2023

निविदा सूचना

जिला पंचायत उधमसिंह नगर में निर्माण कार्यों के लिए इस कार्यालय में पंजीकृत आर्थिक स्थिति से सुदृढ़ ठेकेदारों से राज्य वित्तआयोग/पन्द्रहवॉ वित्त आयोग मद के अन्तर्गत स्वीकृत निम्नलिखित निर्माण कार्यों की निविदा दिनॉक 09.11.2023 को आमंत्रित की जाती हैं, जो जिला पंचायत उधमसिंह नगर के कार्यालय में दिनांक 09.11.2023 को अपरान्ह 3.00 बजे टैण्डर खोलने हेतु गठित समिति द्वारा उपस्थित निविदादाताओं अथवा उनके प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जायेंगी। निविदा प्रपत्र दिनॉक 08.11.2023 तक प्रातः 10.00 बजे से अपरान्ह 4.00 बजे तक जिला पंचायत कार्यालय उधमसिंह नगर से प्राप्त किये जा सकते हैं।

क्र0 सं0	कार्य का नाम	विकास खण्ड का नाम	स्वीकृत धनराशि	धरोहर धनराशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	ग्राम कंठगरी में एन0एच074 से मस्जिद होते हुए मौहम्मद अहमद के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	9.90	19800.00	1000+ GST	6 माह
2	ग्राम सिसैया के भट्टे पर पुलिया से लेकर हसीन के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	7.00	14000.00	700+ GST	6 माह
3	ग्राम कुंवरपुर में हल्दुवा रोड़ से वीरेन्द्र के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	9.90	19800.00	1000+ GST	6 माह
4	ग्राम नयागांव में सलीम के घर से सुलेमान अन्सारी के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	2.10	4200.00	200+ GST	6 माह
5	ग्राम नयागाव में एन0एच074 से मस्जिद होते हुए आजम के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	9.90	19800.00	1000+ GST	6 माह
6	ग्राम पण्डरी मे बाजपेयी जी के घर से डा0 महेन्द्र सिंह के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	9.90	19800.00	1000+ GST	6 माह
7	ग्राम पण्डरी मे जितेन्द्र के घर से सुरेन्द्र के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	7.00	14000.00	700+ GST	6 माह
8	ग्राम पण्डरी मे मेवालाल के घर से हरीश चन्द्र के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	7.00	14000.00	700+ GST	6 माह
9	ग्राम भिटौरा में ईदगाह की चाहरदीवारी कार्य	सितारगंज	6.00	12000.00	600+ GST	6 माह
10	ग्राम दडहा मे लिक रोड़ से गुरविन्दर सिंह के घर तक सी०सी० मार्ग निर्माण कार्य	सितारगंज	7.00	14000.00	700+ GST	6 माह

निविदा की शर्तें–
1 निविदा प्रपत्र के साथ रू0 100.00 का नॉन ज्यूडिशियल स्टॉम्प पेपर वैद्यता की शर्तों के साथ जिसके उपर एक रू0 के रसीदी टिकट के साथ ठेकेदार का हस्ताक्षर युक्त संग्लन होना चाहिए। निविदा प्रपत्र तथा अन्य संलग्न अभिलेखों पर ठेकेदार के मूल हस्ताक्षर अनिवार्यतः होने चाहिए।
2 निविदा के साथ धरोहर धनराशि राष्टीय बचत पत्र/एफ0डी0आर0 के रूप में अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत उधमसिंहनगर के पदनाम से बन्धक करते हुए संलग्न करना अनिवार्य होगा।
3 सफल निविदादाओं को अनुबन्ध गठित करने से पूर्व धरोहर धनराशि को सम्मिलित करते हुए 10 प्रतिशत की धनराशि राष्टीय बचत पत्र/एफ0डी0आर0 के रूप में अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत उधमसिंह नगर के पदनाम से बन्धक कर प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।
4 मैनुवल फार्म संख्या 76/जी0पी0डब्लू0–9 जो लागू हो की समस्त शर्तें निविदा में मान्य होगी।
5 निविदादाता को प्रत्येक कार्य की धरोहर धनराशि पृथक–पृथक एफ0डी0आर0/एन0एस0सी0 निविदा प्रपत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य होगा।
6 अध्यक्ष जिला पंचायत उधमसिंह नगर/अधोहस्ताक्षरी को बिना कारण बताये किसी भी निविदा अथवा समस्त निविदाओं को निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित है।
7 उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य शर्तें जिला पंचायत कार्यालय मे किसी भी कार्य दिवस मे देखी जा सकती है।

अपर मुख्य अधिकारी
जिला पंचायत उधम सिंह नगर

15 मिनट के अंतराल पर मिलेगी रैपिडएक्स

दुहाई से साहिबाबाद की यात्रा का अधिकतम प्रीमियम 100 रुपये व स्टैडर्ड 50 रुपये किराया होगा

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

रैपिडएक्स ट्रेनों का परिचालन 21 अक्टूबर को शुरू हो जाएगा। दुहाई और साहिबाबाद के बीच हर 15 मिनट के अंतराल में ट्रेन मिलेगी। परिचालन सुबह 6 बजे से रात 11 बजे के बीच होगा। यात्रा का किराया भी निर्धारित कर दिया गया है। साहिबाबाद से दुहाई के लिए प्रीमियम किराया 100 रुपये होगा व स्टैंडर्ड किराया अधिकतम 50 रुपये होगा।

रीजनल रैपिड ट्रांसिट सिस्टम (आरआरटीएस) एक हाई-स्पीड, हाई-फ्रीक्वेंसी परिवहन प्रणाली है जो 160 किमी प्रति घंटा की परिचालन गति से एनसीआर के निवासियों को क्षेत्र में निर्बाध रूप से यात्रा करने की सुविधा प्रदान करेगा। इसका 82 किमी लंबा प्रथम कॉरिडोर दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ के बीच निर्माणाधीन है। इस कॉरिडोर का साहिबाबाद और दुहाई डिपो के बीच स्थित 17 किमी लंबा खंड, प्राथमिकता खंड है, जिसे उद्घाटन के बाद दिनांक 21.10.2023 से जनता के लिए आरंभ कर दिया जाएगा।

इस खंड में पांच स्टेशन हैं, साहिबाबाद, गाजियाबाद, गुलधर, दुहाई और दुहाई डिपो। प्रत्येक रैपिडएक्स ट्रेन में 6 डिब्बे हैं जिनमें लगभग 1700 यात्री एक साथ यात्रा कर सकते हैं।इसमें दोनों, बैठकर एवं खड़े होकर यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या शामिल है। हर स्टैंडर्ड कोच में 72 सीटें और प्रीमियम कोच में 62 सीटें उपलब्ध हैं। ट्रेन में एक कोच महिलाओं के लिए आरक्षित है, यह प्रीमियम कोच के बाद दूसरा कोच होगा। ट्रेन के अन्य कोचों में भी महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित हैं। साथ ही, प्रत्येक कोच में विकलांग यात्रियों/वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी सीटें आरक्षित हैं। प्रत्येक रैपिडएक्स ट्रेन में एक प्रीमियम कोच भी है जिसमें रिक्लाइनिंग सीटें, कोट हुक, मैगजीन होल्डर और फुटरेस्ट जैसी कई अतिरिक्त यात्री-केंद्रित सुविधाएं होंगी। दिल्ली से मेरठ की ओर जाने वाला पहला कोच और मेरठ से दिल्ली की ओर जाने वाला अंतिम कोच प्रीमियम कोच होगा। ट्रेन में एक प्रीमियम कोच होगा जिसमें रिक्लाइनिंग सीटें, कोट हुक, मैगजीन होल्डर और फुटरेस्ट जैसी कई अतिरिक्त यात्री-केंद्रित सुविधाएं होंगी।

दिल्ली से मेरठ की ओर जाने वाला पहला कोच और मेरठ से दिल्ली की ओर जाने वाला अंतिम कोच प्रीमियम कोच होगा। कोच से यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए प्लेटफार्म स्तर पर एक प्रीमियम लाउंज प्रदान किया गया है जिसके माध्यम से ही प्रीमियम कोच में प्रवेश मिलेगा। आरामदायक गद्देदार सीटों से सुसज्जित, इस लाउंज में एक वेंडिंग मशीन की सुविधा होगी जहां से स्नैक्स या पेय खरीदे जा सकते हैं।

स्टेशनों के पास भीड़भाड़ से बचने के लिए मुख्य कैरिजवे से दूर, स्टेशनों के प्रवेश/निकास पर अच्छी तरह प्रकाशित, समर्पित पिक-अप और ड्रॉप क्षेत्र बनाए गए हैं। इसके अलावा, यातायात को प्रबंधित करने और स्टेशन के अंदर और उसके आसपास वाहनों की सुचारू और व्यवस्थित आवाजाही के लिए, जहां भी संभव हो।

चेक बुक चोरी करके खाते से उड़ाये लाखों

नोएडा। थाना सेक्टर-20 में एक महिला ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है कि अज्ञात लोगों ने उसके घर से उनका चेक बुक चोरी करके, उसकी सहायता से साढे तीन लाख रुपया बैंक से निकाल लिया है।

घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है। थाना सेक्टर-20 के प्रभारी निरीक्षक डीपी शुक्ला ने बताया कि शकुंतला निवासी सेक्टर-19 ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है कि अज्ञात चोरों ने उनके घर से उनकी चेक बुक चोरी कर ली, तथा चेक के माध्यम से उनके खाते से 3.5 लाख रुपया निकल लिया है। थाना प्रभारी ने बताया कि घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

प्रदूषण को लेकर यातायात पुलिस का विशेष अभियान

पुलिस की छह टीमें को गठन, नियमों का उल्लंघन करने वालों के वाहन होंगे जब्त

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

प्रदूषण को लेकर यातायात पुलिस की ओर से 15 दिनों का विशेष अभियान चलाया जाएगा। जिसमें प्रतिबंधित और नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों के चालान और उनको सीज किया जाएगा। इसके लिए सहायक पुलिस आयुक्त, यातायात प्रथम एवं द्वितीय के पर्यवेक्षण और यातायात निरीक्षक के नेतृत्व में 6 टीमों का गठन किया गया है। यहां जोन स्तर पर ग्रेप की रोकथाम के लिए नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी।

इसमें संयुक्त टीम में संभागीय परिवहन विभाग और प्रदूषण नियंत्रण के अधिकारी भी शामिल होंगे। दरअसल, नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना क्षेत्र में ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान ग्रेप लागू है।

हर साल एक अक्टूबर इसे लागू किया जाता है ताकि प्रदूषण के स्तर को नियंत्रित किया जा सके। इसके लिए अलग-अलग फेज में प्रतिबंध लगाए जाते है। अभी स्टेज-1 लागू है। ये आगे न बढ़े इसलिए यातायात पुलिस और बाकी टीम मिलकर 15 दिनों का स्पेशल अभियान चला रही है। इन पर जुर्माना, चालान और सीज करने की कार्रवाई की जाएगी। ग्रेप के नियमों का उल्लंघन करने पर प्राधिकरण के प्रोजेक्ट इंजीनियर आरके शर्मा की अगुआई में 14 टीम शहर में निरीक्षण कर रही है।

इनके विरूद्ध की जाएगी कार्रवाई

- 10 वर्ष पुराने डीजल वाहन
- 15 वर्ष पुराने पेट्रोल वाहन
- वायु प्रदूषण प्रमाण पत्र समाप्त हुए वाहन
- सरकारी फिटनेस प्रमाण पत्र समाप्त हुए वाहन

कार के आगे फायर गन के साथ कपल डांस

नोएडा के एलिवेटेड रोड का बताया जा रहा वीडियो, हो सकता था हादसा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा में एक कपल के फायर गन के साथ सेलिब्रेशन का मामला सामने आया है। वीडियो एलिवेटेड रोड का बताया जा रहा है।

31 सेकेंड के वीडियो में कपल गाड़ी के सामने खड़े होकर डांस करता हुआ दिखाई दे रहा है। युवती के हाथ में एक फायर गन है। जिसमें से अनार जैसी फुलझड़ी निकल रही है। जिसे युवती सड़क पर चारों ओर घुमाती दिख रही है। सड़क पर कई लोग भी गुजर रहे थे लेकिन इससे बेपरवाह दोनों चारों ओर फायर गन को घुमा रहे थे।

वहीं वीडियो वायरल होने के बाद लोग सोशल मीडिया पर पुलिस से कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। इस सड़क पर पहले भी कई भीषण सड़क हादसे हो चुके हैं। 31 सेकेंड के इस वीडियो में कपल गाड़ी के सामने जमकर डांस करते हुए दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान सड़क पर सफेद रंग की कार भी वहां से गुजरती है। लेकिन इसके बाद भी कपल को कोई फर्क नहीं पड़ता और युवती की फायर गन से फुलझड़ी जलाती रहती है। इस तरह से सड़क पर लापरवाही करने पर बड़ा हादसा हो सकता था। एलिवेटेड रोड पर पहले भी कई सड़क हादसे हुए हैं, जिनमें कई लोगों की मौत हो चुकी है। 23 जुलाई को हुए सड़क हादसे में भी एक युवती की मौत हो गई थी।

इस सड़क पर बार कार और बाइक से स्टंटबाजी के कई वीडियो सामने आ चुके हैं, जिसमें लोगों ने कार्रवाई करते हुए पुलिस ने चालान करते हुए कई गाड़ियां भी सीज की थीं। लेकिन लेकिन फिर भी लोग इस पर स्टंटबाजी करने से बाज नहीं आ रहे हैं।

ठगी करने के मामले में 6 युवती समेत 14 गिरफ्तार

पायनियर समचार सेवा। नोएडा

नोएडा पुलिस और साइबर हैल्प लाइन की टीम ने छह युवती समेत कुल 14 लोगों को गिरफ्तार किया है। ये सभी लोन दिलाने के नाम पर ठगी करते थे। इस लोगों ने सेक्टर-6 के सी-3 में एक कॉल सेंटर खोला था।

वहीं से फोन के जरिए ये ठगी करते थे। इनके पास से 06 की पेड मोबाइल फोन, 04 स्मार्ट मोबाइल फोन, 74 शीट कलिंग डेटा और 11 लाख रुपए नगद बरामद किए है। बताया गया कि ये लोग सैकड़ों लोगों को ठगी का शिकार बना चुके है। इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस टीम, मैनुअल इंटेलिजेंस व गोपनीय सूचना के आधार पर इन सभी को नोएडा के सेक्टर.6 स्थित सी.3 से गिरफ्तार किया गया। इनकी पहचान हसीन, विकास शर्मा, राजेश, आशीष, वारिस, सोहिल, कुनाल, सलमान, आशुतोष वहीं युवतियों में निशा, सुगरा, सुरभि, ट्वींकल, कुसुम, खुशबू को गिरफ्तार किया है।

ये लोग मोबाइल के जरिए खुद को कोटेक महिंद्रा और एचडीएफसी बैंक के कर्मचारी बताते थे। इसके बाद चोरी किए गए डेटा के जरिए उन लोगों को फोन करते थे जिनको लोन की जरूरत होती थी। उनके आधार, पैन, ईमेल आईडी जानकारी लेकर तमाम कागजी काम करवाते थे। मामले की जांच जारी है।

60 लाख के चोरी के कपड़ों के साथ सात धरे

नोएडा। नोएडा की थाना फेज.2 पुलिस ने 24 घंटे में चोरी के मामले में सात बदमाशों गिरफ्तार कर 60 लाख रुपए का माल बरामद किया है। बदमाशों ने चोरी होजरी कंप्लैक्स के बी-28 गोदाम से की थी। इसमें गोदाम के गार्ड की मिलीभगत भी सामने आई है। उसकी तलाश की जा रही है। चोरी में प्रयुक्त की गई लीलैंड गाड़ी भी बरामद की गई।

एडीसीपी सेंट्रल नोएडा हृदयेश कठेरिया ने बताया कि 17 अक्टूबर को पीड़ित ने थाना फेज-2 पुलिस को सूचना दी कि 16 अक्टूबर को अज्ञात चोरों ने फेज-2 स्थित बी-28 गोदाम में घुसकर 8/8.50 टन कपड़ा चोरी कर लिया। तुरंत एफआईआर दर्ज करते हुए थाना फेस 2 नोएडा पुलिस ने 2 टीमों का गठन किया।

ग्रेनो में बनेगा एसटीएफ का प्रशासनिक भवन

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी के निर्देश पर ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने जमीन आवंटित की

एसटीएफ का पहला स्थाई ऑफिस ग्रेटर नोएडा में बनने जा रहा है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने एसटीएफ को बीजेडपी एरिया में 3000 वर्ग मीटर जमीन आवंटित कर दी है। एसटीएफयहां प्रशासनिक भवन और ट्रांजिट हॉस्टल बनाएगा। दरअसल, एसटीएफ की नोएडा इकाई के अंतर्गत चार जिले गौतमबुद्ध नगर, गाजियाबाद, हापुड़ और बुलंदशहर आते हैं।

एसटीएफ इन चार जिलों में संगठित अपराध की कमर तोड़ने का काम करती है। फिलहाल इसका अस्थाई कार्यालय सूरजपुर कोतवाली परिसर में बना हुआ है। एसटीएफ से लंबे समय से ग्रेटर नोएडा में प्रशासनिक भवन और ट्रांजिट हॉस्टल के लिए जमीन के लिए प्रयास कर रहा था। उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी के निर्देश पर ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने बीजेडपी एरिया में भूखंड संख्या एफ06बी 3000 वर्ग मीटर जमीन आवंटित कर दी है। इसकी सबलीज डीड जल्द होने जा रही है। इसके बाद नक्शा स्वीकृत कराकर एसटीएफ इस पर प्रशासनिक भवन और ट्रांजिट हॉस्टल का निर्माण कराएगा। एसटीएफ को 3000 वर्ग मीटर जमीन आवंटन से प्राधिकरण को भी लगभग 6.61 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होगा। इस बारे में एसटीएफ के अधिकारियों का कहना कि ग्रेटर नोएडा में स्थाई प्रशासनिक भवन और ट्रांजिट हॉस्टल बन जाने अपराधियों के खिलाफ और प्रभावी ढंग से कार्रवाई करने में मदद मिलेगी।

वहीं, ग्रेनो प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार का कहना है कि संगठित अपराध को रोकने में एसटीएफ अहम रोल निभा रहा है। ग्रेटर नोएडा में एसटीएफ का प्रशासनिक भवन और ट्रांजिट हॉस्टल बनने से न सिर्फगौतमबुद्ध नगर, गाजियाबाद, हापुड़ और बुलंदशहर, बल्कि प्रदेश भर में अपराधियों पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

संक्षिप्त समाचार

सीआरसी क्रिकेट लीग में फोनिक्स फ्लायर्स की विजेता टीम कप के साथ।

सीआरसी लीग में फोनिक्स फ्लायर्स 9 विकेट से जीता

नोएडा। नोएडा के ओपी स्पोर्ट्स क्रिकेट ग्राउंड पर सीआरसी ग्रुप द्वारा आयोजित सुपर लीग मुकाबले में फोनिक्स फ्लायर्स ने स्पार्क स्ट्राइकर्स को 9 विकेट से हरा दिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए स्पार्क स्ट्राइकर्स ने 15 ओवर में 8 विकेट पर 107 रन बनाए। जवाब में फोनिक्स फ्लाइर्स ने 8.3 ओवर में एक विकेट खोकर यह लक्ष्य हासिल कर लिया। इस मुकाबले में फोनिक्स फ्लायर्स की ओर से सैंडी ने सबसे अधिक नाबाद 50 रन बनाए और उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया, जबकि फोनिक्स फ्लायर्स की ओर से गेंदबाज नकुल ने 2 ओवर में 24 रन देकर 2 विकेट लिए।

डीएम ने कंपोजिट विद्यालय का किया स्थलीय निरीक्षण

नोएडा। डीएम मनीष कुमार वर्मा ने कंपोजिट विद्यालयों में शिक्षा गुणवत्ता मानकों के अनुरूप बनाए रखने एवं पढ़ने वाले छात्राओं को सभी मूलभूत सुविधाएं निर्धारित मानकों के अनुरूप उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कंपोजिट विद्यालय लुक्सर ग्रेटर नोएडा का स्थलीय निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान विद्यालय में अध्यापकों से शिक्षण कार्यों के संबंध में गहनता के साथ जानकारी प्राप्त की जोकि संतोषजनक प्राप्त हुई। एसएमसी कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से सीएसआर फंड द्वारा कराए गए विद्यालय भवन के निर्माण कार्य एवं मूलभूत सुविधाएं क्लासरूम, स्मार्ट क्लास आदि सुविधाओं का जिलाधिकारी ने गहनता के साथ समीक्षा की। इस दौरान जिलाधिकारी ने सीएसआर फंड द्वारा कराए जा रहे निर्माण कार्य पर संतोष प्रकट करते हुए कार्यों की प्रशंसा की।

सलाम नमस्ते में युवा फॉर स्वच्छता कार्यक्रम

नोएडा। आईएमएस नोएडा के सामुदायिक रेडियो सलाम नमस्ते में युवा फॉर स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन हुआ। बुधवार को सेक्टर 62 स्थित संस्थान परिसर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान बतौर अतिथि नोएडा प्राधिकरण जन स्वास्थ्य विभाग के डीजीएम एसपी सिंह ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। वहीं कार्यक्रम के दौरान संस्थान के छात्रों को स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 के लिए जागरूक किया गया। बुधवार को कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए सलाम नमस्ते की स्टेशन हेड बर्षा छबारिया ने बताया कि स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 में नोएडा को अव्वल स्थान दिलाने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वहीं आज कार्यक्रम के दौरान स्वच्छ नोएडा स्वास्थ्य नोएडा पोस्टर मेकिंग प्रतिस्पर्धा का भी आयोजन हुआ। जिसमें संस्थान के तीन प्रतिभागी रिया ढींगरा, रिया चौधरी एवं कोशिश चौहान को सम्मानित किया गया। वही कार्यक्रम के दौरान एसपी सिंह ने कहा कि नोएडा को अव्वल स्थान पर लाने में युवाओं का अहम योगदान हो सकता है।

पूर्व सांसद डीपी यादव की भाभी का निधन

नोएडा। पूर्व सांसद और मंत्री डीपी यादव की बड़ी भाभी श्रीमती शांति देवी 77 वर्ष का आज निधन हो गया। वह कैंसर रोग से ग्रसित थी। सेक्टर 50 स्थित अपने बड़े बेटे पूर्व एमएलसी जितेंद्र यादव के घर पर उन्होंने आज अंतिम सांस ली। उनके आकस्मिक निधन की सूचना पाकर क्षेत्र के भारी संख्या में लोग, राजनेता, सामाजिक संगठन के लोग उनके आवास पर पहुंचे। पूर्व सांसद डीपी यादव भी क्षेत्र में थे। वहां से वह नोएडा वापस लौटे। वह अपने पीछे तीन बेटों और एक बेटी का भरा.पूरा परिवार छोड़ गई है। उनके बड़े बेटे जितेंद्र यादव पूर्व एमएलसी रहे हैं। मौजूदा समय में वह भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य हैं, जबकि उनकी बहू वर्षा यादव बदायूं से जिला पंचायत अध्यक्ष हैं। छोटे बेटे सतेंद्र यादव सुभाष युवा मोर्चा पार्टी के अध्यक्ष है और तीसरे नंबर के बेटे भाजपा के युवा नेता विक्रांत यादव हैं। उनकी पत्नी कीर्ति यादव जनपद बदायू के सहसवान से ब्लॉक प्रमुख हैं। उनकी एक बेटी वंदना यादव है।

पायनियर
नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 19 अक्टूबर, 2023

बेटी को खोया, दोषियों को हो उम्रकैद: सौम्या की मां

● 'हत्यारे वहीं भुगते जो परिवार को सहना पड़ा'

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पत्रकार सौम्या विश्वनाथन की मां माधवी विश्वनाथन ने बुधवार को उनकी बेटी की हत्या के जुर्म में दोषी ठहराए गए सभी के लिए आजीवन कारावास की मांग करते हुए कहा कि उन्हें वही भुगतना चाहिए जो उनके परिवार को सहना पड़ा।

माधवी ने मीडिया से बातचीत में कहा, हमने अपनी बेटी को खो दिया। हम दोषियों के लिए आजीवन कारावास की मांग करते हैं, उन्हें वही भुगतना चाहिए जो हमने सहा। विशेष पुलिस आयुक्त (विशेष शाखा) एच जी एस धालीवाल भी दिवंगत पत्रकार सौम्या के परिवार के सदस्यों के साथ अदालत में मौजूद थे। धालीवाल पूर्व में पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) दक्षिण के रूप में तैनात थे और उनकी टीम ने ही सौम्या विश्वनाथन हत्या मामले का खुलासा किया था। धालीवाल ने कहा कि यह बहुत ही चुनौतीपूर्ण मामला था और इसे सुलझाने में छह महीने से अधिक का समय लगा। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, सौम्या विश्वनाथन के परिवार के सदस्यों ने दिल्ली पुलिस पर भरोसा रखा और नहीं चाहते थे कि मामला किसी केंद्रीय एजेंसी को स्थानांतरित किया जाए। हालांकि, मामला चुनौतीपूर्ण था क्योंकि पीड़िता और आरोपी के बीच कोई संपर्क नहीं था। चलती गाड़ी से एक गोली चलाई गई जो सौम्या को लगी और उनकी मौत हो गई। धालीवाल ने कहा कि सौम्या के परिवार के सदस्य घटना वाले दिन से लेकर मामला सुलझने तक मामले की हर समीक्षा बैठक में शामिल हुए।

मीडिया से बात करते विशेष पुलिस आयुक्त जीएस धालीवाल व सौम्या का परिवार।

कब क्या हुआ

1. 28 मार्च, 2009 रवि कपूर, अमित शुक्ला, बलजीत मलिक, अजय कुमार और अजय सेठी को विश्वनाथन की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

2. 22 जून 2009 पांचों आरोपियों के खिलाफ पहला आरोपपत्र दाखिल किया गया।

3. 6 फरवरी, 2010 आरोपियों के खिलाफ आरोप तय किए गए।

4. 9 मई, 2011 मकोका में आरोप तय

5. 23 अप्रैल, 2010 मुकदमा शुरू हुआ,

6. 27 फरवरी, 2019 दिल्ली उच्च न्यायालय ने शीघ्र सुनवाई का आदेश दिया और निचली अदालत को सप्ताह में कम से कम तीन बार मामले की सुनवाई करने का निर्देश दिया।

7. 6 अक्टूबर, 2023 बचाव और अभियोजन पक्ष की अंतिम दलीलें समाप्त हुईं। 13 अक्टूबर, 2023 अदालत ने अपना फैसला सुरक्षित रखा।

8. 18 अक्टूबर, 2023 रवि कपूर, अमित शुक्ला, बलजीत मलिक और अजय कुमार को हत्या और मकोका प्रावधानों के तहत दोषी ठहराया गया।

मंगोलपुरी में पिक-अप वैन ने स्कूटी को मारी टक्कर, दो युवकों की मौत

● सड़क दुर्घटना के बाद आरोपी चालक फरार, एफआईआर दर्ज

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मंगोलपुरी इलाके में बुधवार को सुबह एक पिक-अप वैन ने स्कूटी को टक्कर मार दी। हादसे में दोपहिया वाहन पर सवार दोनों व्यक्तियों की मौत हो गई। पुलिस को संदेह है कि दोनों ने हेलमेट नहीं पहना था। इस संदर्भ में मामला दर्ज कर लिया गया है। दुर्घटना के बाद पिक-अप वैन का चालक वहां से भाग गया। मृतकों की पहचान हिमांशु और प्रियांशु के रूप में हुई है।

एक पुलिस अधिकारी ने कहा, बाहरी दिल्ली के रिंग रोड स्थित वेस्ट एनक्लेव के पास बुधवार सुबह भीषण सड़क हादसा हुआ। इस दुर्घटना में पिकअप वैन मधुबन चौक से पीरागढ़ी की तरफ आ रही थी। इस दौरान जैसे ही पिकअप वैन मंगोलपुरी फ्लाइओवर के नीचे पहुंची उसी दौरान वहां से एक स्कूटी पर सवार दो युवक यूटर्न ले रहे थे। तभी पिकअप वैन ने स्कूटी में जोरदार टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि टक्कर लगने के बाद स्कूटी सवार दोनों युवक दूर जाकर गिरा, जिससे उनके सिर पर गंभीर चोट आई।

सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने आनन-फानन में दोनों को संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। मृतकों की पहचान हिमांशु और प्रियांशु उर्फ प्रथम के रूप में हुई है। दोनों ही सुलतानपुरी डी4 ब्लॉक के रहने वाले थे। सड़क दुर्घटना के बाद आरोपी चालक वहां से भाग गया। मंगोलपुरी थाना पुलिस इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया है।

औद्योगिक प्रदूषण पर लगाम लगाएगी सरकार

● 20 अक्टूबर से 20 नवंबर तक चलाया जाएगा अभियान : राय

● निगरानी के लिए डीपीसीसी और डीएसआईआईडीसी की 66 टीमें रहेंगी तैनात

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राजधानी दिल्ली को औद्योगिक प्रदूषण से मुक्त कराने में केजरीवाल सरकार जुट गई है। औद्योगिक प्रदूषण के खिलाफ सरकार एक महीने तक अभियान चलाएगी। निरीक्षण के लिए डीपीसीसी और डीएसआईआईडीसी की 66 टीमों की तैनाती की जाएंगी। औद्योगिक अपशिष्ट की डंपिंग की निगरानी के लिए पूरी दिल्ली में गश्त टीम तैनात की जाएगी। सरकार ने दावा किया है कि दिल्ली की 1753 पंजीकृत औद्योगिक इकाइयों को पीएनजी में परिवर्तित कर दिया गया हैं।

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय की अध्यक्षता में बुधवार को दिल्ली को औद्योगिक प्रदूषण से मुक्त करने के लिए समीक्षा बैठक की। इस बैठक में डीपीसीसी, पर्यावरण विभाग, डीएसआईआईडीसी समेत अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। बैठक के बाद राय ने बताया कि औद्योगिक प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए 20 अक्टूबर से 20 नवंबर तक औद्योगिक प्रदूषण के विरूद्ध अभियान चलाया जाएगा। राय के अनुसार सर्दी के मौसम में होने वाले प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए 29 सितम्बर को सीएम द्वारा 15 फोकस प्वाइंट पर आधारित विंटर एक्शन प्लान की घोषणा की गई थी।

वायु प्रदूषण में और सुधार लाने के लिए विंटर एक्शन प्लान के तहत औद्योगिक प्रदूषण पर निगरानी और उसके अपशिष्ट प्रबंधन का कार्य शुरू हो गया है। डीपीसीसी और डीएसआईआईडीसी की टीमें औद्योगिक इकाइयों के लगातार निरीक्षण के कार्य में तैनात की गई है। यह सभी टीमें औद्योगिक इकाइयों पर निगरानी रखने और उनके द्वारा प्रदूषण को रोकने के लिए त्वरित कदम उठाने का कार्य करेगी। जिसकी रिपोर्ट समय-समय पर पर्यावरण विभाग को भेजी जाएंगी।

डीपीसीसी की इस टीम को औद्योगिक इकाइयों द्वारा पर्यावरण नियमों के उल्लंघन करने पर सख्त कार्रवाई करने का आदेश जारी किया गया हैं। औद्योगिक क्षेत्रों से औद्योगिक कचरे का नियमित उठान और उचित वैज्ञानिक निपटान सुनिश्चित करना।

उद्योगों का आर्थिक शोषण होना निश्चित : सचदेवा

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि मंत्री गोपाल राय को हर दूसरे दिन प्रदूषण पर एक नई घोषणा करने की आदत है और इसके तहत उन्होंने आज औद्योगिक प्रदूषण विरोधी अभियान की घोषणा की है। दिल्ली में कोई भी बड़ा उद्योग नहीं है। चिन्हित औद्योगिक क्षेत्रों में जो हल्के उद्योग चल रहे हैं, वे पहले से ही उद्योग विभाग द्वारा नियमित निगरानी में हैं और इसलिए औद्योगिक प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए 66 टीमों के गठन के पीछे के तर्क को समझना मुश्किल है। दिल्ली में बमुश्किल 20 चिन्हित औद्योगिक बेल्ट हैं। मंत्री राय में प्रदूषण नियंत्रण के प्रति गंभीर नहीं है, वह आये दिन सिर्फ प्रदूषण सूचकों का इस्तेमाल कर समाचारों में बने रहते हैं।

गीतिका शर्मा की मां की आत्महत्या के मामले में हाई कोर्ट ने मांगा रिकॉर्ड

नई दिल्ली। उच्च न्यायालय ने दिवंगत विमान परिचारिका गीतिका शर्मा की मां को आत्महत्या के लिए उकसाने के मामले में निचली अदालत से रिकार्ड तलब किया है।

निचली अदालत द्वारा पूर्व मंत्री गोपाल कांडा का समन रद्द करने के आदेश को चुनौती वाली राज्य सरकार की याचिका पर उच्च न्यायालय ने यह कदम उठाया है। गीतिका की मौत के छह महीने बाद उनकी मां की मौत हो गई थी। न्यायमूर्ति ने कहा कि निचली अदालत के रिकॉर्ड 31 अक्टूबर तक डिजिटल रूप में तलब किया जाए। कांडा को निचली अदालत के 26 अक्टूबर 2020 के आदेश को चुनौती देने वाली राज्य की पुनरीक्षण याचिका भी 31 अक्टूबर को सुनवाई हुई।

एमसीडी का अवैध निर्माण के खिलाफ अभियान

● दिल्ली नगर निगम ने सभी 12 क्षेत्रों में 301 संपत्तियां तोड़ी, 77 की सील

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली नगर निगम ने बुधवार को अवैध निर्माणों पर बुलडोजर चलाया। इसके अलावा कई साइटों को सील भी किया। निगम अवैध निर्माण पर रोक लगाने के लिए यह अभियान चलाया है। एमसीडी ने अपने सभी 12 जोन में 301 स्थानों पर तोड़फोड़ की कार्रवाई की। साथ ही 77 साइट को सील किया है। निगम का यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।

दिल्ली नगर निगम के अनुसार, निगम अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले सभी 12 क्षेत्रों में अनाधिकृत निर्माण की रोकथाम के लिए कठोर कार्रवाई कर रहा है। निगम का फील्ड स्टाफ गैर कानूनी निर्माण की रोकथाम के लिए तोड़फोड़ की कार्रवाई कर रहा है। निगम का फील्ड स्टाफ क्षेत्र का दौरा कर बिल्डरों द्वारा कराए जा रहे अनाधिकृत निर्माण को चिन्हित कर रहे हैं। दिल्ली नगर निगम ने पिछले 15 दिनों में 301 संपत्तियों में तोड़फोड़ एवं 77 सीलिंग की कार्रवाई की हैं।

यह कार्रवाई मुख्य रूप से अनाधिकृत कॉलोनियों एवं कृषि भूमि पर की गई है। इसी कड़ी में बुधवार को मोहन गार्डन, राजपुर खुर्द स्थित विकास नगर, जेवीटीएस गार्डन छतरपुर, पुष्प विहार, मदनगीर, वसंत कुंज,जामिया नगर, जैतपुर, जगतपुरी, त्रिलोकपुरी, ढिचाओं एनक्लेव, निर्मल विहार, सुलतान गार्डन (दीचाओं कलां), मौर्या एनक्लेव संत नगर बुराडी, लक्ष्मी पार्क, नांगलोई, रोहिणी सेक्टर 15 इलाके में 21 सम्मपतियों पर तोड़ फोड़ की कार्रवाई की गई।

कार्रवाई में भवनों को इस प्रकार तोड़ा गया कि वे किसी भी प्रकार के इस्तेमाल एवं पुनर्निर्माण के लायक न रहें। ढांचों को गिराने के लिए जेसीबी मशीन एवं अन्य उपकरणों की सहायता ली गई। इसके अलावा 21 भूस्वामियों, कब्जेदारों पर आपधारिक देनदारी के अभियोजन दायर किए गए। यह सुनिश्चित करने के लिए कि अनाधिकृत निर्माण इसमें रहने वाले किसी भी रूप में इस्तेमाल न कर पाएं, बिजली वितरण कंपनियों एवं दिल्ली जल बोर्ड को उनके बिजली पानी कनेक्शन काटने के संबंध में भी अवगत करा दिया गया है। तोड़फोड़ की कार्रवाई के दौरान सुरक्षा के समुचित उपाय कर लिए गए थे।

महापौर शैली ने विज्ञान मेले में शिक्षकों को किया सम्मानित

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

महापौर शैली ओबरॉय ने शाहदरा उत्तरी क्षेत्र के ब्रह्मपुरी स्थित निगम प्रतिभा विद्यालय में आयोजित विज्ञान मेले में शिरकत की। यहां पर उन्होंने उत्कृष्ट शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया।

शैली ने कहा कि वह खुद शिक्षा क्षेत्र से संबंधित रहीं हैं। ऐसे शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम हमेशा रोमांचित करते हैं। आम आदमी पार्टी की सरकार की प्राथमिकता हमेशा से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा रही है और आने वाले समय में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट मॉडल देंगे। उन्होंने कहा कि निगम के स्कूल हमेशा से ही उपेक्षित रहे हैं लेकिन अब सीएम केजरीवाल के नेतृत्व में दिल्ली नगर निगम के स्कूलों का कायाकल्प होने वाला है। इस दिशा में कार्य शुरू कर दिया गया है। दिल्ली सरकार की तर्ज पर एमसीडी स्कूलों को भी निजी स्कूलों से बेहतर बनाया जायेगा। कुछ स्कूल बहुत अच्छे और आधुनिक सुविधाओं से लैस कर दिए गए हैं। लेकिन बहुत से स्कूलों में खामियां देखने को मिली हैं। स्कूलों में स्टॉफ की कमी है। इसके अलावा सुरक्षा कर्मी, डाटा एंट्री ऑपरेटर और सेनिटेशन स्टॉफ की कमी है।

कश्मीरी प्रवासियों के लिए राहत राशि 27,000 रुपये प्रति माह की गई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने कश्मीरी प्रवासियों परिवारों के लिए तदर्थ मासिक राहत राशि बढ़ाने को दी मंजूरी

उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने राष्ट्रीय राजधानी में कश्मीरी प्रवासियों के लिए तदर्थ मासिक राहत राशि को 10,000 रुपए से बढ़ाकर 27,000 रुपए प्रति माह करने की मंजूरी दे दी है। राज निवास के अधिकारियों के मुताबिक तदर्थ मासिक राहत राशि (एएमआर) आखिरी बार 2007 में बढ़ाई गई थी जब प्रति परिवार के लिए 1995 में निर्धारित राशि को 5,000 रुपए से बढ़ाकर दोगुना कर दिया गया था।

केंद्र सरकार की सुरक्षा संबंधी व्यय (राहत और पुनर्वास) योजना के तहत आतंकवाद प्रभावित परिवारों की सहायता के लिए कश्मीरी प्रवासियों को एएमआर प्रदान किया जाता है। अधिकारियों ने कहा कि एएमआर के लिए पात्र परिवार के सदस्यों की जानकारियों को आधार संख्या से जोड़ना अनिवार्य होगा। राहत का भुगतान केवल आधार पेमेंट ब्रिज सिस्टम के माध्यम से होगा। मौजूदा समय में, राष्ट्रीय राजधानी में लगभग 2,000 परिवारों को एएमआर का भुगतान किया जा रहा है। इस पर मासिक खर्च 2.5 करोड़ रुपए आता है।

फैक्ट्री में आग लगी, कोई हताहत नहीं

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बाहरी दिल्ली के बवाना इलाके में बुधवार को सुबह एक फैक्ट्री में आग लग गई। अग्निशमन अधिकारियों ने यह जानकारी देते हुए बताया कि आग से कोई हताहत नहीं हुआ। दिल्ली दमकल सेवा को सुबह करीब साढ़े दस बजे बवाना की एक दो-मंजिला इमारत से फोन आया और आग लगने की सूचना दी गई। कम से कम 26 दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। एक अधिकारी ने बताया, आग पहली मंजिल से शुरू हुई और जल्द ही इसने पूरी इमारत को अपनी चपेट में ले लिया। आग बुझाने का काम जारी है।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

डीडीए भूखंड, मोबाइल टावर साइट की करेगा ई-नीलामी

● इनमें 20 धार्मिक स्थल, 12 औद्योगिक प्लॉट, 46 आवासीय भूखंड, 28 वाणिज्यिक भूखंड और रोहिणी में 19 छोटे आकार के आवासीय प्लाट शामिल हैं

दिल्ली विकास प्राधिकरण अगले महीने प्रमुख स्थलों पर प्लॉट, दुकानों, कियोस्क और मोबाइल टावर साइट और अन्य संपत्तियों की नीलामी करेगा। इन संपत्तियों की ऑनलाइन नीलामी सात से नौ नवंबर तक होगी। डीडीए ने 50 संस्थागत प्लॉट या भूखंड के लिए बोलियां आमंत्रित की हैं।

इनमें लीजहोल्ड आधार पर 20 धार्मिक स्थल, 12 औद्योगिक प्लॉट, 46 आवासीय भूखंड, दो समूह आवास भूखंड, 28 वाणिज्यिक भूखंड और रोहिणी में 19 छोटे आकार के आवासिय प्लाट शामिल हैं। दिल्ली विकास प्राधिकरण के एक अधिकारी ने बताया कि इसके अलावा दो सीएनजीहरित ईंधन साइट और चार गैस गोदामों तथा 145 फ्रीहोल्ड निर्मित दुकानों, 13 फ्रीहोल्ड जनक प्लेस दुकानों, 15 कियोस्क, 16 मोबाइल टावर साइट तथा 105 समारोह स्थलों के लिए भी बोलियां आमंत्रित की गई हैं। यह डीडीए की बड़ी ई-नीलामी का 18वां चरण है। डीडीए ने इस नीलामी से संबंधित पूछताछ के लिए नागरिक सुविधा केंद्र, विकास सदन में एक हेल्प डेस्क बनाया है। हेल्प डेस्क से सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 11 बजे से शाम पांच बजे के बीच संपर्क किया जा सकता है।

संक्षिप्त समाचार

प्रदर्शन में कला शिल्पों को निहारते स्कूली छात्र।

राष्ट्रीय बाल भवन में तीन दिवसीय प्रदर्शनी

नई दिल्ली। स्वच्छता थीम पर आधारित बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट की तीन दिवसीय प्रदर्शनी राष्ट्रीय बाल भवन में 18 से 20 अक्टूबर तक आयोजित की जा रही है, जहां बच्चों ने नियमित रूप से अपशिष्ट पदार्थों से बनाये गए शिल्प प्रदर्शित किए। इस प्रदर्शनी में पुराने अखबारों से गुड़िया, घर और साइकिल, मकई और पेंसिल के छिलकों से फूल, धागों और पुरानी चूड़ियों से झूमर, पुरानी सीडी से कोस्टर और टोकरियाँ, बचे हुए कपड़ों से बैग और खिलौने, नारियल से कछुए सीपियाँ और कई अन्य दिलचस्प शिल्प शामिल है। एनबीबी की निदेशक मुक्त अग्रवाल ने कहा कि बच्चों और प्रशिक्षकों ने एक स्थायी वातावरण बनाने के लिए सरकार के फोकस को ध्यान में रखा और आने वाली पीढ़ियों के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं के लिए पुनर्नवीनीकृत वस्तुओं को कैसे आकार दिया जा सकता है। इस प्रदर्शनी में करीब 300 से अधिक बच्चे शामिल हुए और उनके साथ उनके माता-पिता तथा शिक्षकगण भी पधारे।

आप के दो पूर्व नेता कांग्रेस में शामिल

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के दो पूर्व नेता और एक भूतपूर्व निर्दलीय पार्षद बुधवार को यहां कांग्रेस में शामिल हो गए। इस मौके पर कांग्रेस की दिल्ली इकाई के प्रमुख अरविंदर सिंह लवली मौजूद थे। वे यहां दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में पार्टी में शामिल हुए। इस मौके पर संवाददाताओं से बातचीत करते हुए लवली ने आप के पूर्व नेताओं पृथ्वी सिंह राठौड़ और जयप्रकाश चौहान तथा पूर्व निर्दलीय पार्षद राजीव वर्मा का पार्टी में स्वागत किया।

ब्रॉडवे रामलीला 3डी मंच के साथ रामायण का करेगी मंचन

संगीत, ध्वनि, नृत्य, लाइट, मंच और वेशभूषा को आधुनिक तकनीक व आकर्षक तरीके से पेश किया जाएगा

● पीतमपुरा के नेताजी सुभाष प्लेस मे 23 अक्टूबर को होगी समाप्त

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

ब्रॉडवे रामलीला संगीत, ध्वनि, नृत्यसंयोजन, प्रकाश व्यवस्था, मंच डिजाइन और वेशभूषा के मामले में आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कर रामायण की गाथा को बुधवार से आकर्षक तरीके से पेश करेगी।

पीतमपुरा के नेताजी सुभाष प्लेस में आर्यन हेरिटेज फाउंडेशन द्वारा आयोजित तीन घंटे की इस संपूर्ण रामायण में भगवान राम के जन्म से लेकर उनके राज्याभिषक तक की पौराणिक गाथा को दर्शकों के सामने पेश किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में अत्याधुनिक 3डी मंच डिजाइन जैसी आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। ब्रॉडवे रामलीला के गाने उदित नारायण, कैलाश खेर, कुमार विशु और जीतेंद्र सिंह जैसे कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं और गाथा मुकेश खन्ना द्वारा सुनाई गई है। ब्रॉडवे रामलीला के निर्माता राजेंद्र मित्तल ने कहा, इस रामलीला में बहुत ही सरल भाषा का इस्तेमाल किया गया है ताकि चार वर्ष का बच्चा भी इसे आसानी से समझ सके। प्रस्तुति का मंच एवं ग्रामीण डिजाइन इतना भव्य है कि दर्शकों को ऐसा लगता है मानो वे स्वयं त्रेता युग में हों। ब्रॉडवे रामलीला 23 अक्टूबर को समाप्त होगी।

रामलीला मंचन के दौरान विश्वामित्र की भूमिका में अश्विनी चौबे।

विश्वामित्र बनकर आए मंत्री अश्विनी चौबे

रामलीला का क्रेज आज भी बरकरार है। आलम यह है कि बड़े-बड़े नेता भी रामलीला में पाठ करने के लिए आते हैं। इस बार मशहूर लवकुश राम लीला में केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे, भाजपा के विधायक विजेंद्र गुप्ता समेत कई बॉलीवुड कलाकार भी हिस्सा ले रहे हैं। मोदी सरकार में मंत्री अश्विनी कुमार चौबे वैसे तो उपभोक्ता मंत्रालय देख रहे हैं लेकिन जब वह मंच पर महर्षि विश्वमित्र की भूमिका में दिखे तो लोग मोबाइल से वीडियो बनाने लगे। लव कुश रामलीला का इंतजार दिल्ली वालों को सालभर रहता है। लाल किला मैदान पर होने वाली देश की प्रसिद्ध रामलीलाओं में शामिल लव कुश रामलीला में इस बार कई मशहूर हस्तियां रोल निभा रही हैं। बॉलीवुड के कलाकारों के साथ केंद्रीय मंत्री और नेताओं को भी रोल मिला है। मंगलवार रात लव कुश रामलीला में उस समय लोगों की उत्सुकता बढ़ गई जब केंद्रीय उपभोक्ता मामलों के राज्य मंत्री अश्विनी कुमार चौबे मंच पर नजर आए। उस समय राम, लक्ष्मण और सीता आशीर्वाद की मुद्रा में थे। इसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। बॉलीवुड के मशहूर कलाकार भी मंत्री जी को अपने बीच पाकर काफी खुश दिखे। बृजेंद्र काला ने बक्सर से सांसद और केंद्रीय मंत्री के साथ फोटो खिंचवाई।

मात्र 13 साल के बालक अंगद ने 19000 फीट की ऊंचाई पर जमाया पैर

लद्दाख में विश्व के सबसे ऊंचे क्षेत्र उमलिंग ला में सर्वाइबल व सैन्य प्रशिक्षण करके हासिल की यह उपलब्धि

इस सफलता के साथ ही अंगद ने बनाया नेशनल रिकॉर्ड

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

राम की लीलाएं देशभर में हो रही हैं। कहीं अंगद पैर जमाने वाले हैं तो कहीं हनुमान जी लंका जलाने वाले हैं। ऐसे ही समय में मात्र 13 साल के बाल अंगद ने भी अपने बुलंद हौंसलों से 19024 फीट की ऊंचाई पर पहुंचकर पैर जमाया है। अंगद ने लद्दाख में विश्व के सबसे ऊंचे क्षेत्र उमलिंग ला में सर्वाइबल व सैन्य प्रशिक्षण लेकर यह नेशनल रिकॉर्ड बनाया है।

लद्दाख में विश्व के सबसे ऊंचे क्षेत्र उमलिंग ला पर पहुंचा बालक अंगद।

सिक्स सिगमा हेल्थकेयर के सीईओ हरियाणा निवासी डा. प्रदीप भारद्वाज एवं डा. अनीता भारद्वाज के पुत्र अंगद भारद्वाज को माता-पिता अपनी तरह ही दुर्गम क्षेत्रों में भेजकर शारीरिक, मानसिक मजबूत बना रहे हैं। दुर्गम क्षेत्रों में चाहे धार्मिक यात्राएं हों या कोई प्राकृतिक आपदा, हर जगह पर चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने वाले डा. प्रदीप भारद्वाज का मानना है कि बच्चों को बचपन से ही मानसिक, शारीरिक रूप से मजबूत बनाना आज के समय में बहुत जरूरी है। मात्र 13 साल की उम्र में राष्ट्रीय स्तर का रिकॉर्ड बनाना वाला अंगद भारद्वाज आज देश के बच्चों के सामने जांबाजी का बड़ा उदाहरण हैं।

सात दिन लिया कड़ा प्रशिक्षण

माऊंट ऐवरेस्ट बेस कैम्प से भी अधिक ऊंचाई पर भारत का उमलिंग ला पास बना है। जिसकी ऊंचाई 19024 फीट है। ऐसे स्थान पर ऑक्सीजन ना के बराबर होती है। इसके बावजूद मात्र 13 साल के बालक ने वहां 7 दिन रहकर कड़ा प्रशिक्षण लिया। अपने माउंटेनियरिंग के कठोर कार्य से हैरान कर देने वाले अंगद भारद्वाज ने भारत - चाइना बॉर्डर पर देश का मान बढ़ाया है। जिस ऊंचाई (19024 फीट) पर हवा भी ना पहुंचे, वहां इस बाल वीर अंगद ने सबसे कम उम्र में सर्वाइवल ट्रेनिंग करके एक बेहद मुश्किल रिकॉर्ड इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज कराया है। अंगद ने यह ट्रेनिंग बॉर्डर रोड संस्थान संस्थान के साथ की है। अंगद ने विषम परिस्थितियों व माइनस तापमान में बेहद कठोर ट्रेनिंग रक्षा मंत्रालय के सीमा सड़क संगठन के साथ 19 अगस्त से 25 अगस्त 2024 तक की। अंगद भारद्वाज भारत का एक मात्र बालक है, जो कि भारतीय वायु सेना, आईटीबीपी द्वारा पर्वतारोहण में प्रशिक्षण प्राप्त है।

परिवार के लिए गर्व की बात: डा. अनीता

अंगद की मां डा. अनीता भारद्वाज कहती हैं कि अंगद का राष्ट्रीय रिकार्ड बनाना परिवार के लिए गर्व की बात है। आज तक वर्ल्ड में किसी बच्चे ने 19000 फीट से अधिक ऊंचाई पर माउंटेन सर्वाइवल व फौजी ट्रेनिंग हासिल नहीं की है। चीन सीमा के पास अंगद ने हिन्दुस्तान जिंदाबाद और भारत माता के जयकारे लगाकर कम उम्र में बड़ा कारनामा कर दिखाया। अंगद माऊंट सैंट मैरी स्कूल से पढ़ाई कर रहा है। भविष्य में भारतीय सेना में अधिकारी बनना उसका सपना है।

स्मार्ट सिटी का वादा करने वालों ने शहर को बनाया कचरा शहर: पंकज डावर

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पंकज डावर ने गुरुग्राम में बिगड़ी सफाई व्यवस्था को लेकर तंज कसते हुए कहा कि साइबर सिटी गुरुग्राम को स्मार्ट सिटी से

पंकज डावर।

स्मार्टर सिटी बनाने वाले नेता, मंत्री, विधायक आखिर सब कहां गायब हो गए। बीते कई महीनों से साइबर सिटी की सफाई व्यवस्था चरमराई हुई है। यहां सफाई कर्मचारी बार-बार धरने प्रदर्शन पर बैठ रहे हैं, लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। सरकार स्थिति को संभाल नहीं पा रही है।

पंकज डावर ने कहा कि भाजपा

भाजपाई अब नहीं करते स्मार्ट सिटी की बात

के नेता सिर्फ गुमराह करने और झूठे वादे करने पर ही विश्वास रखते हैं।

आखिर 9 साल के शासनकाल में प्रदेश और देश की सरकारों ने कितनी स्मार्ट सिटी बनाई, जनता जानना चाहती है। पंकज डावर ने कहा कि कांग्रेस के शासनकाल में शहर चमचमाता रहता था। यहां ना तो कभी प्रदूषण की इतने बड़े लेवल पर समस्या थी और ना ही इतनी गंदगी, जब से भाजपा की सरकार बनी है तब से ही प्रदेश की जनता प्रदूषण की मार झेल रही है। गुरुग्राम शहर का कोई भी ऐसा सेक्टर या कॉलोनी नहीं है, जहां सफाई व्यवस्था दुरुस्त हो।

गुरुग्राम पुलिस महिलाओं की सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्ध है : वीरेंद्र विज

जीयू में महिलाओं को जागरूक करने के लिए कार्यक्रम आयोजित

112 नंबर डायल करें 10 मिनट में पुहंच जाएगी पुलिस

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम विवि की आंतरिक शिकायत समिति ने गुरुग्राम पुलिस के सहयोग से महिला सुरक्षा पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि गुरुग्राम के पुलिस उपायुक्त वीरेंद्र विज, विशिष्ट अतिथि सहायक पुलिस आयुक्त डॉ. कविता, इंस्पेक्टर सुमन एवं डीन अकादमी अफेयर्स प्रो. सुभाष कुंडू, प्रो. सीमा महलावत ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। सेक्टर-50 थाना एसएचओ राजेश कुमार ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

गुरुग्राम विवि में महिलाओं के लिए सुरक्षा के प्रति जागरुकता कार्यक्रम मंचासीन अतिथि।

पुलिस उपायुक्त वीरेंद्र विज ने गुरुग्राम विवि की छात्राओं को महिला सुरक्षा के लिए डायल 112, दुर्गा शक्ति वाहिनी, महिलाओं, बच्चों के विरुद्ध होने वाले अपराधों व साइबर अपराधों के बारे में विस्तृत जानकारी देकर जागरूक किया।

उन्होंने कहा कि महिलाओं द्वारा किसी भी समय असुरक्षित स्थिति महसूस करने पर वो 112 नंबर डायल करें। पुलिस सहायता करने के लिए 10 मिनट में पहुंच जाएगी। उन्होंने बताया कि गुरुग्राम आयुक्तालय में इस समय महिला सुरक्षा के लिए 650 महिला पुलिस कार्यरत हैं। गुरुग्राम पुलिस महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों की रोकथाम तथा उनकी सुरक्षा के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। हमारा लक्ष्य गुरुग्राम जिले को महिलाओं के लिए सुरक्षित बनाना है।

इस मौके पर छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि सहायक पुलिस आयुक्त डॉ. कविता ने दहेज अधिनियम, साइबर क्राइम, पॉक्सो एक्ट तथा कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ होने वाले यौन उत्पीड़न के खिलाफ कड़े कानूनी प्रावधानों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि महिलाएं किसी भी प्रकार से अपने आप को कमजोर न समझें। गुरुग्राम पुलिस आपकी सहायता के लिए सदैव तैयार है।

बाल महोत्सव में बाल कलाकारों ने जमाया रंग

गुरुग्राम। सिविल लाइन्स स्थित स्वतंत्रता सेनानी जिला परिषद सभागार में जिला स्तरीय बाल महोत्सव-2023 के दूसरे दिन बुधवार को बच्चों में सांस्कृतिक, पेंटिंग व क्ले मॉडलिंग आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया। इस चार दिवसीय महोत्सव में 60 से अधिक स्कूलों की टीमें भाग ले रही हैं।

बुधवार को सोलो डांस, क्लासिकल डांस, बेस्ट ड्रामेबाज, ऑन द स्पॉट स्केचिंग स्पर्धाएं करवाई गई। ग्रुप एक, दो, तीन और चार वर्ग की टीमें बांटकर दो मंचों पर ये प्रतियोगिता करवाई गईं। जा रही हैं। जिला रेडक्रास सोसायटी के सचिव विकास कुमार, समाजसेवी साधु सिंह इस मौके पर मौजूद रहे। उन्होंने प्रतियोगिताओं में भाग ले रहे बच्चों का उत्साहवर्धन किया। धार्मिक व लोक गीतों पर आधारित गीतों पर बच्चों ने अपने नृत्य की प्रस्तुति से दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। निर्णायक मंडल में महेश वत्स, दिनेश चौधरी, पूजा कुमारी, मनीषा अग्रवाल, पूनम वत्स, टेकचंद, प्रवीण यादव, नवीन यादव ने बच्चों के प्रदर्शन का अवलोकन किया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग की कोऑर्डिनेटर बिंदु दक्ष, रामकिशन वत्स, ओमप्रकाश, डा. वंदना दुबे, अनीता, जितेंद्र, मीनाक्षी, समिता बिश्नोई, गीता बत्रा, मीना शर्मा, किरण डागर इत्यादि मौजूद रहे।

ऑनलाइन जनसेवाओं से आसान हुई जनता की राह: विनोद वर्मा

पांच दिवसीय पोर्टल ट्रेनिंग कैंप में पार्षदों को दी जानकारी

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

बागवानी विभाग के सभागार में जनप्रतिनिधि और सरकारी कर्मचारियों को अंत्योदय सरल व अन्य सरकारी पोर्टल की तकनीकी जानकारी दी जा रही है। जिससे कि पोर्टल के प्रति आम जनता में व्याप्त भ्रांतियां दूर हो सकें। हरियाणा नागरिक संसाधन विभाग (क्रिड) की ओर से आयोजित जिलास्तरीय पांच दिवसीय इस प्रशिक्षण शिविर के तीसरे दिन बुधवार को स्थानीय निकायों के पार्षदों को सरकारी पोर्टल पर काम करने का तरीका विस्तार से समझाया गया।

क्रिड के डीएसईओ विनोद वर्मा ने गुरुग्राम नगर निगम, पटौदी-मंडी व सोहना नगर परिषद सहित नगर पालिका फर्रूखनगर से आए पार्षदों को बताया कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने प्रदेश में सुशासन की स्थापना के लिए आम जनता के लिए नागरिक सेवाओं को ऑनलाईन शुरू करवाया है। जिससे आम नागरिक बिचौलियों का सहारा ना लेकर स्वयं भी सरकारी

बागवानी विभाग के सभागार में नगर पार्षदों को ऑनलाइन पोर्टल की ट्रेनिंग देते नागरिक संसाधन विभाग के अधिकारी।

सेवाओं का लाभ ले सकें। ऑनलाईन सेवाओं के शुरू होने के बाद हर जिला में आसानी से लोगों के सरकारी दस्तावेज बन रह रहे हैं। सरकार ने करीब 600 जनसेवाएं ऑनलाईन कर दी हैं और जल्दी ही सरकार का जनसहायक एप आने वाला है, जिस पर सभी विभागों की सेवाएं उपलब्ध रहेंगी। विनोद वर्मा ने कहा कि हरियाणा सरकार की नीति के अनुसार विवाहित युगल को तीस दिन में अपना मैरिज सर्टिफिकेट बनवाना होता है, जो कि शादी ई दिशा.कॉम पर केवल 100 रुपये का शुल्क अदा कर बनवाया जाता है। सर्टिफिकेट जारी होने के बाद सरकार दुल्हन के खाते में 1100 रुपये भिजवाती है। उन्होंने बताया कि हर एक विभाग की योजनाओं को पारदर्शी ढंग से चलाने के लिए सरकार ने उसे ऑनलाईन किया हुआ है। जिससे कि एक योग्य पात्र को ही योजना का लाभ मिले।

उन्होंने पशुधन बीमा योजना, फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना, आपकी बेटी हमारी बेटी, मेरी फसल मेरा ब्यौरा, सीएम विंडो, परिवार पहचान पत्र, ई-भूमि पोर्टल, नगर योजनकार विभाग का पोर्टल, जमाबंदी, ऑनलाईन बस टिकट, टूरिज्म बुकिंग, आनलाईन एफआईआर दर्ज करवाने जैसी सेवाओं के बारे में नगर पार्षदों को विस्तार से बताया। इस अवसर पर पीपीपी की जिला नोडल अधिकारी दीपिका तेवतिया, सहायक रुचि, सरकारी विभागों के नोडल अधिकारी भी उपस्थित रहे।

हनुमान चालीसा पाठ का आंकड़ा पहुंचा 3 लाख 81 हजार पार

डॉ. सुधा यादव के जन्मदिन के उपलक्ष्य में हनुमान चालीसा पाठ

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

समाजसेवी बोधराज सीकरी की अगुवाई में सदस्य केंद्रीय संसदीय बोर्ड एवं केंद्रीय चुनाव समिति डा. सुधा यादव के जन्मदिन के उपलक्ष्य में हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन किया गया। पालम विहार जे-ब्लॉक की वाटिका में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस आयोजन को मिलाकर 135 स्थानों पर हनुमान चालीसा पाठ हो चुके हैं। हनुमान चालीसा का आंकड़ा 3 लाख 81 हजार पार कर गया।

चुनाव समिति की अचानक बैठक में व्यस्त होने के चलते डा. सुधा यादव ने अपने पुत्र सिद्धार्थ यादव को कार्यक्रम में भेजा। गजेंद्र गोंसाई ने संगीतमय तरीके से समां बांधा। श्याम ने अपने भजन कीर्तन से बृजमय माहौल बना दिया। योगीराज कृष्ण ने संगीतमय भजनों से सबको खूब नचाया। बोधराज सीकरी ने

हनुमान चालीसा पाठ में भाग लेती महिलाएं।

बताया कि 26 अक्टूबर को उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में उनके 13 मित्र मिलकर हनुमान चालीसा के माध्यम से पूर्व संध्या पर 25 अक्टूबर को समारोह आयोजित करेंगे। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ओमप्रकाश धनखड़, स्वामी धर्मदेव, विधायक सुधीर सिंगला, विधायक सत्य प्रकाश जरावता, जिला अध्यक्ष गार्गी कक्कड़ शिरकत करेंगे।

डॉ. सुधा यादव कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगीं। सुशांत लोक फ्लायर पार्क में 10 लोगों ने 5-5 बार हनुमान चालीसा का पाठ सुबह किया। जामपुर शिव मंदिर ईस्ट ऑफ कैलाश में 50 लोगों ने 5-5 बार पाठ शाम को किया। इस अवसर पर धर्मेन्द्र बजाज, डॉ. सर्वानंद आर्य, प्रधान अरोड़ा खत्री बिरादरी, डॉ. परमेश्वर अरोड़ा, रमेश चुटानी, गंगागिरी कुटिया की पूरी टीम, महेश यादव, रमेश कामरा, प्रमोद सलूजा, यदुवंश चुग, आरडी कवातरा, दिनेश नागपाल, नरेंद्र यादव, नरेश चावला, अभिषेक खनेजा, पूनम भटनागर, ज्योत्सना बजाज, पुष्पा नासा, सीमा पाहूजा, कपिल दुआ, रचना बजाज, सिमरन बजाज, सुरेश सीकरी, एमआर कुमार समेत अनेक सदस्य मौजूद रहे।

आयुष ग्राम योजना के तहत चिन्हित गांव खवासपुर में औषधीय पौधे वितरित करती डा. मोनिका सिंह।

आयुष विभाग ने ग्रामीणों को भेंट किए औषधीय पौधे

ग्राम खवासपुर में जागरूकता कार्यक्रम

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

जिला में राष्ट्रीय आयुष मिशन की आयुष ग्राम योजना के तहत चिन्हित गांव खवासपुर में डीसी निशांत कुमार यादव के मार्गदर्शन व जिला आयुष अधिकारी डॉ. मंजू के दिशा निर्देशन में विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

इसी क्रम में बुधवार को जिला आयुष विभाग द्वारा औषधीय पौधों के गुणकारी फायदों के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से गांव खवासपुर में पौधा वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्र में जिला आयुष विभाग की चिकित्सक डा. मोनिका सिंह ने ग्रामीणों को औषधीय पौधों के महत्व और विविधता के बारे में जागरूक करते हुए कहा कि प्रकृति के दिए गए वरदानों में पेड़-पौधों का विशेष स्थान है। उन्होंने कहा कि मानवीय जीवन चक्र को संतुलित रखने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसका कोविड-19 जीवंत उद्धाहरण है। डॉ. मोनिका ने कहा कि हमारे शरीर को निरोगी बनाए रखने में औषधीय पौधों का अत्यधिक महत्व होता है, यही वजह है कि हमारे ऐतिहासिक धर्मग्रंथों में इसके उपयोग के अनेक साक्ष्य मिलते हैं।

चलते ऑटो से गिरने पर 65 वर्षीय वृद्व की मौत

सोहना। चलते हुए ऑटो में से गिरने से 65 वर्षीय वृद्व व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक अज्ञात व्यक्ति की 24 घंटा बीत जाने के बाद भी पहचान नहीं हो सकी है। मृतक का शव गुरुग्राम के नागरिक अस्पताल में पहचान के लिए रखा गया है।

सोमवार की शाम करीब 5 बजे एक अज्ञात युवक करीब 65 वर्षीय वृद्व व्यक्ति को गंभीर हालत में स्थानीय नागरिक अस्पताल में उपचार के लिए लेकर आया था। युवक वृद्व व्यक्ति को नागरिक अस्पताल के आपातकाल वार्ड में उपचार के लिए छोड़कर चला गया था। उसके बाद डॉक्टरों ने अज्ञात लावारिश व्यक्ति को उपचार देना शुरु कर दिया। लेकिन हालत अधिक खराब होने के कारण उसे गुरुग्राम के सेक्टर -10 में स्थित नागरिक अस्पाताल भेज दिया था। वृद्व व्यक्ति ने गुरुग्राम पहुंचने से पहले बीच रास्ते में ही दम तोड़ दिया था। डॉक्टर प्रवीण यादव ने बताया कि वृद्व व्यक्ति को लाने वाले युवक ने उन्हे बताया था कि वृद्व व्यक्ति चलते हुए ऑटो में से गिर गया था। जिसके कारण उसकी हालत गंभीर हो गई। सोहना शहर थाना पुलिस ने डॉक्टर की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस अज्ञात ऑटो चालक की तलाश कर रही है।

जैन समाज की रामलीला में पति-पत्नी ही निभा रहे पात्रों की भूमिका

गुरुग्राम स्थित जैन बारादरी में रामलीला मंचन करते जैन समाज के महिलाएं, पुरुष।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

आपने रामलीलाएं तो खूब देखी होंगी, लेकिन गुरुग्राम की जैन बारादरी में जो रामलीला है वह सबसे अलग है और खास है। इस रामलीला में बाहर से बुलाए गए कलाकार नहीं, बल्कि जैन समाज के अनुयायी ही पात्रों की भूमिका निभा रहे हैं। इस पर एक और खास बात यह कि यहां पात्रों में पति-पत्नी की भूमिका असली पति-पत्नी ही निभा रहे हैं। यही कारण है कि इस रामलीला की दूर-दूर तक चर्चा हो रही है।

जैन समाज के प्रवक्ता अभय जैन एडवोकेट के मुताबिक नवरात्रि के पावन शुभ अवसर पर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर जैकबपुरा में पदम पुराण आधारित जैन रामलीला का मंचन किया जा रहा है। 15 से 24 अक्टूबर तक पाठशाला प्रणेता मुनि

पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में आयोजन का मंचन

अनुमान सागर जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से रोजाना शाम साढ़े 7 बजे से जैन समाज के कलाकारों द्वारा मंचन किया जा रहा है।

पहले दिन राजा श्रेणिक रमेश चंद संदीप जैन प्रधान ने महाराजश्री से रामलीला पर आधारित कई सवाल पूछे। पांडाल उद्घाटन कपिल जैन राजा जैन मंदिर मालिबू टाउन ने किया। संयोजक निर्दोष जैन, मनोज जैन रहे। रामलीला मंचन से पहले चित्र आवरण, दीप प्रज्जवलन, मंगलाचरण से शुरुआत होकर राजा श्रेणिक बने प्रमोद जैन रेवाड़ी वाले एवं सुभाष चंद गोपी राम जैन रेवाड़ी वाले द्वारा प्रश्न पूछ गये।

रावण के बाद अब राजा दशरथ के रोल में बनवारी लाल हुए हिट

जैकबपुरा श्री दुर्गा रामलीला में राम वनवास की लीला ने किया श्रद्धालुयों को किया भाव विभोर

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

जैकमपुरा स्थित श्री दुर्गा रामलीला के पांचवें दिन राम के राजतिलक की तैयारियों से लेकर उनके वनवास तक की लीला का मंचन किया गया। रानी कैकेयी द्वारा राम को वनवास और भरत को अयोध्या का राजा बनाने के वर मांगने से लेकर राम, लक्ष्मण व सीता के वनवास होने तक की लीला दिखाई गई। इस लीला ने सभी को भावुक कर दिया। वर्षों तक रावण की दमदार भूमिका निभाने के बाद इस बार बनवारी लाल सैनी ने राजा दशरथ का रोल किया और हिट हो गए।

लीला में दिखाया गया कि अयोध्या नगरी में खुशी-खुशी दिन बीत रहे थे। अयोध्या में राम के

गुरुग्राम में राम वनवास की लीला का दृश्य।

राजतिलक की तैयारियां चल रही थी। इसी बात को रानी कैकेयी से सांझा करने के लिए जब दशरथ उनके महल में जाते हैं तो वहां अंधेरा छाया होता है। इसका कारण वे मंथरा दासी से पूछते हैं तो वे कुछ नहीं बताती। इसके बाद राजा दशरथ खुद उनके महल में जाते हैं तो रानी कैकेयी कोप भवन में लेटी हुई थी। इसका कारण वे बार-बार पूछते हैं, तो रानी उन्हें उनके द्वारा दो वचनों की याद दिलाती है। राजा दशरथ दोनों वचन मांगने को कहते हैं, लेकिन रानी राजा दशरथ को पहले राम की कसम खाने की बात पर कहती हैं-ये चिकनी चुपड़ी बातें करके अबला को न बहलाएं, सच्चे हैं तो रघुवंशी सौगंध राम की खाएं। इस पर राजा दशरथ राम की कसम खाते हैं। फिर कैकेयी बोली-लो सुनो प्राणपति प्राणनाथ ये दासी आज मांगती है, कौशल्या नंदन के बदले निज सुत को राज मांगती है। प्रण जो कि दूसरा है मेरा लो सुन लो-ये राम जो राजा होते हैं तो राजा नहीं उदासी है। इसलिए राम को कल से ही 14 वर्षों के बनवास पर भेज दिया जाए। यह सुनकर दशरथ अचेत हो जाते हैं। वनवास की बात पर राम कहते हैं यह तो खुशी की बात है कि माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का उन्हें सौभाग्य मिल रहा है। मां कौशल्या राम को वनवास में भेजने को तैयार नहीं होती।

इसके बाद माता कौशल्या उन्हें वन में जाने से एक बार फिर रोकती है तो राम इसे अपना धर्म बताकर वन में जाने की बात पर अडिग रहते हैं। जिद करने पर वे सीता को भी साथ चलने की आज्ञा दे देते हैं। वनवास की बात सुनकर लक्ष्मण भी राम के पास आते हैं और साथ चलने की जिद करते हैं। राम उसे भी साथ लेकर चलने को राजी हो जाते हैं और तीनों राम, लक्ष्मण व सीता भगवा धारण करके वनवास की ओर चले जाते हैं।

करीना कपूर खान ने कोरियाई स्किनकेयर ब्रांड 'क्रेंच बॉटैनिक्स' लॉन्च करने के लिए शुगर कॉस्मेटिक्स के संस्थापकों के साथ साझेदारी की

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारतीय स्किन और वेदर की कंडीशन के अनुकूल प्रीमियम कोरियाई स्किनकेयर ब्रांड को सभी लीडिंग बड़े फॉर्मेट वाले रिटेलर और ईकॉमर्स प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से बेचा जाएगा। भारतीय मूवी आइकॉन करीना कपूर खान ने लीडिंग मेकअप ब्रांड, शुगर कॉस्मेटिक्स के फॉउंडर विनीता सिंह और कौशिक मुखर्जी के साथ एक स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप की है, ताकि भारतीय स्किन और वेदर के अनुकूल तैयार एक प्रीमियम कोरियाई स्किनकेयर ब्रांड 'क्रेंच बॉटैनिक्स लॉन्च किया जा सकें। आइकानिक सुपरस्टार, को-ऑनर और इंवेस्टर के रूप में 'क्रेंच टीम में ज्वाइन हुईं और ब्रांड को देश के

सबसे बड़े और सबसे पसंदीदा ब्यूटी ब्रांडों में से एक बनाने के विज़न के साथ अपनी एंट्रेप्रेन्योरिअल जर्नी को आगे बढ़ाया।

हाई-क्वालिटी, स्किन-रिज्युवेटींग करने वाले कोरियाई स्किनकेयर प्रोडक्ट की अपनी रेंज के साथ, क्रेंच बॉटैनिक्स का लक्ष्य प्रमुख भारतीय स्किन संबंधी समस्याओं को दूर करना है। इफेक्टीव नेचरल इंग्रेडियेंट से बने, जो 100 प्रतिशत वेजिटेरियन हैं, क्रेंच वर्तमान में पाइपलाइन में अधिक इनोवेशन के साथ 90+ हाई पर्फामिंग प्रोडक्ट ऑफर करता है। जेन जेड और मिलेनियल्स पर फोकस करते हुए, क्रेंच प्रोडक्ट रेंज अर्फोडेबल प्राइज़ पर उपलब्ध है।

करीना कपूर खान, अपने टेलेंट, स्टाइल और ब्युटी के लिए स्क्रीन पर ऑन और ऑफ, क्रेंच बॉटैनिक्स में अपने निवेश के साथ अपने इंट्रोप्रिन्युरियल आबजेक्टिव को मजबूत कर रही हैं। अपने शानदार करियर के दौरान ट्रेंड सेट करने के लिए जानी जाने वाली करीना क्रेंच बॉटैनिक्स की टीम के साथ मिलकर काम करेंगी ताकि इसे एक ट्रयू ओमनीचैनल ब्युटी ब्रांड के रूप में बढ़ा करने के विज़न को साकार किया जा सके जो भारतीय कन्जुमर की रियल नीडस् को पूरा करता है।

करोड़ों खर्च करने के बाद भी पलवल का ट्रांसपोर्ट नगर साबित हुआ सफेद हाथी

20 साल बाद भी सेक्टर में सुविधाओं का अभाव बना हुआ है

पदम सिंह घुघेरा। पलवल

करोड़ों रुपये खर्च करने के 20 साल बाद भी पलवल का ट्रांसपोर्ट नगर सेक्टर-21 शहरवासियों के लिए सफेद हाथी साबित हुआ है। हुडा विभाग के अधिकारियों के गैर जिम्मेदार रवैये के कारण सेक्टर में अभी भी जन सुविधाओं का अभाव बना हुआ है। जिसकी वजह सेक्टर बनने के दो दशक बाद भी पलवल के ट्रांसपोर्ट नगर को शहर के ट्रांसपोर्टर प्रयोग नहीं कर पा रहे है। जिससे ट्रांसपोर्टर आज भी पलवल शहर की सड़कों पर अपने ट्रक, केंटर व टेंकर आदि को खड़े करने को मजबूर हैं। इससे शहर में हर रोज जाम के हालात रहते हैं। शहरवासियों का कहना है कि विभाग को जल्द से जल्द सेक्टर मे ट्रांसपोर्टरों के लिए सुविधाओं का प्रबंध करना चाहिए। जिससे ट्रांसपोर्टर अपने वाहनों को वहां खड़े कर सके, शहरवासियों को जाम से छुटकारा मिल सके।

पलवल शहर के लोगों को बेहतरीन यातायात सुविधा दिलाने व शहर की सड़कों को भारी वाहनों से छुटकारा दिलाने के लिए हुडा विभाग की तरफ से पलवल शहर में दो दशक पहले दिल्ली-मथुरा मार्ग पर गांव अगवानपुर के पास ट्रांसपोर्ट नगर के निर्माण का फैसला हुडा विभाग की तरफ से लिया गया। इसके लिए हुडा विभाग की तरफ करोड़ों रुपये खर्च करके लगभग 350 एकड़ से अधिक भूमि का अधिकरण किया गया था। परंतु सेक्टर बनने की घोषणा के 20 साल बाद भी यहां पर जन सुविधाओं का अभाव बना हुआ है। जिससे सेक्टर पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ है। इसकी वजह से आज भी ट्रांसपोर्टर अपने वाहनों को पलवल शहर के नए जीटी रोड, पुराने जीटी रोड, हुडा सेक्टर दो, रेलवे रोड, नई अनाज मंडी, सब्जी मंडी, पुरानी अनाज मंडी, माल गोदाम रोड, सोहना रोड, हथीन रोड, नूंह आदि मार्गों पर खड़े करने को मजबूर हैं। इन मार्गों पर ट्रांसपोर्टरों के ट्रक, केंटर, डंफर, फोर व्हीलर, टेंकर आदि खड़े रहने से पलवल शहर में हर रोज जाम के हालात बने रहते हैं। शहरवासियों का कहना है कि यदि हुडा विभाग समय पर सेक्टर 21 में पीने के पानी के टयूबवेल, पानी की लाइन, सीवर लाइन, रेन वाटर हारवेस्टिंग लाइन व सड़कों का निर्माण करा देता तो शहर के ट्रांसपोर्टर यहां अपने वाहनों को खड़ा कर सकते थे। जिससे शहर की सड़कें वाहनों से फ्री रहती। ऐसा होने से शहर में हर रोज लगने वाले जाम से शहरवासियों को निजात मिलती। इससे लोग शहर के हर कोने में थोड़े समय में होकर वापस लौट सकते थे। परंतु अब शहर के एक कोने से दूसरे कोने में आने-जाने में लोगों को घंटों लग जाते हैं। वहीं इससे ट्रांसपोर्टर भी अपने वाहनों को लेकर चिंतित बने रहते है। कई बार सड़कों के किनारे वाहनों से चोरी तक हो जाती है।

हुडा द्वारा शहर के ट्रांसपोर्टरों के लिए बनाए ट्रांसपोर्ट नगर में 20 साल बाद भी सुविधाओं का अभाव बना हुआ है। जिससे शहर में जाम के हालात रहते हैं। हुडा विभाग के अधिकारियों के गैर जिम्मेदार रवैये का खामियाजा शहर के लोग उठाने को मजबूर हैं।
-रामेश्वर नरवाल, ट्रांसपोर्टर

सेक्टर 21 पलवल में जल्द ही सड़कों, सीवर लाइन व दूसरे विकास कार्य करवाए जाएंगे। जिससे शहर के ट्रांसपोर्टर अपने वाहनों को वहां पर खड़ा कर सकें। इससे शहर में जाम से छुटकारा मिल सकेगा।
-मेहरचंद, कनिष्ठ अभियंता हुडा विभाग

सैकड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी पलवल का ट्रांसपोर्ट नगर शहरवासियों के लिए सफेद हाथी साबित हुआ है। यहां पर आज भी सड़कों, पीने के पानी, सीवर लाइन आदि तक नहीं बिछाई गई है। जिससे ट्रांसपोर्टर अपने वाहनों को सड़कों पर खड़े करने को मजबर हैं। जिससे शहर में जाम रहता है।
-सुरजीत डागर, ट्रांसपोर्ट

बिजली कर्मचारियों ने 19 सूत्री मांगों पर एक्सईएन से चर्चा की

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

सेक्टर-68 स्थित हरियाणा स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड वर्कर यूनियन ग्रेटर फरीदाबाद यूनिट के प्रधान सुनील चौहान और यूनिट सचिव रवि दत्त शर्मा के नेतृत्व में यूनियन का प्रतिनिधिमंडल एक्सईएन विकास मोहन दहिया से मिला। बिजली कर्मचारियों की प्रमुख अहम समस्याओं के 19 सूत्रीय मांग पत्र चर्चा की।

कार्यकारी अभियंता ने एक माह में सभी संसाधन उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया है। कर्मचारी नेताओं ने बताया कि ज्यादातर फील्ड व पावर हाउसों में काम करने वाले कर्मियों के पास पर्याप्त मात्रा में उपकरण व संसाधनों नहीं हैं। 33 केवी पावर सब स्टेशनों की हालात दयनीय हैं। जिनकी छतों से बरसात के समय पानी टपकता है। 11 केवी व 33 केवी लाइनों आदि के उपकरणों को चालू करने और बंद करने में करंट लगने का खतरा बना रहता है। कर्मचारियों की मांग है कि सभी दफ्तरों के बिजली शिकायत केंद्र और दफ्तरों में फर्नीचर, पीने के पानी, टेबल, कुर्सी, मेज आदि की अव्यवस्था होना।

एक्सईएन ग्रेटर फरीदाबाद विकास मोहन दहिया ने सभी समस्याओं को एक माह में पूरा करने का आश्वासन दिया गया। बैठक में एसडीओ जवाहर सांगवान, नीरज त्यागी व एसडीओ अंकित अग्रवाल सहित मदन गोपाल शर्मा, लेखराज चौधरी, सुरेंदर सिंह, दिगम्बर लाम्बा, शौकीन खान, सोनू गोला कर्मचारी नेता मौजूद रहे।

जिला स्तरीय सांस्कृतिक महोत्सव में नौवीं से बारहवीं के विद्यार्थियों ने मचाई धूम

विजयी टीमों को प्रशस्ति पत्र व इनाम देकर किया सम्मानित

प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली टीम राज्य स्तरीय महोत्सव में लेगी भाग

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में कक्षा पांच से आठ तथा कक्षा नौ से 12 की टीमों ने भाग लिया। सांस्कृतिक महोत्सव के दूसरे दिन के कार्यक्रम का आयोजन राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पलवल कैंप परिसर में कक्षा नौवीं से 12वीं के विद्यार्थियों ने भाग लेकर धूम मचाई। दूसरे दिन के कार्यक्रम का शुभारंभ जिला शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार बघेल ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया। जिला स्तरीय महोत्सव में प्रत्येक खंड से आई लगभग 48 टीमों ने हिस्सा लिया। जिला पलवल से लगभग 340 बच्चों ने इस प्रतियोगिता में अपनी प्रस्तुति दी। जिला सांस्कृतिक कार्यक्रम में चार इवेंट को शामिल किया गया, जिनमें फोक डांस सोलो, फोक डांस ग्रुप, रागिनी और स्किट शामिल रहे। चारों तरह के इवेंट्स में बच्चों ने अपनी योग्यता का लोहा मनवाया। प्रत्येक टीम बहुत ही अच्छी तैयारी के साथ इस कार्यक्रम में आई और उन्होंने भव्य प्रदर्शन किया।

जिला स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रम के समापन अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी ने प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को प्रशस्ति पत्र देकर व इनाम देकर सम्मानित किया। उन्होंने विजेता टीमों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दीं और राज्य स्तर के लिए अच्छी तैयारी करने के लिए आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सभी बच्चे राज्य स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करके जिला पलवल का नाम रोशन करें। कार्यक्रम के जिला नोडल अधिकारी सुखराम ने कहा कि जो टीम जिला स्तर पर प्रथम आई हैं। वहीं टीम राज्य स्तर के लिए जाएगी। प्रत्येक इवेंट में प्रथम आने वाली टीम अपनी पूरी तैयारी के साथ राज्य स्तर के महोत्सव में भाग लेवें। इस मौके पर डीपीसी सुखबीर, सभी खंड शिक्षा अधिकारी और बीआरसी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

कमाई का लालच देकर ठगे एक लाख

फरीदाबाद। सेक्टर-86 निवासी एक व्यक्ति से साइबर ठगों ने रोजाना एक हजार से पांच हजार रुपये कमाई का लालच देकर करीब एक लाख रुपये ठग लिए। साइबर सेंट्रल थाना पुलिस जांच में जुटी है। पीड़ित पंकज कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया एक मार्च को उसके सोशल मीडिया अकाउंट पर टास्क का एक लिंक आया। उसमें हर दिन एक हजार से पांच हजार रुपये कमाने का ऑफर था। लिंक पर क्लिक करने के बाद सोशल मीडिया पर कुछ लोग चैटिंग करने लगे और ऑनलाइन टास्क पूरा करने पर आरोपियों ने 10 हजार रुपये भी दिए। मोटे मुनाफे की बात कहकर आरोपियों ने ऑनलाइन टास्क के लिए निवेश करने का झांसा दिया। आरोपियों की बातों में आकर पीड़ित ने विभिन्न बैंक खाता से आरोपियों के बैंक खाते में करीब एक लाख रुपये भेज दिए। इसके बाद ठगों ने चैटिंग करना बंद दिया। ठगी का अहसास होने पर पीड़ित ने पुलिस में शिकायत दी।

स्मार्ट सिटी में मिस्टर एंड मिस ब्लिस की हुई लांचिंग

फरीदाबाद के लोगों को डिजाइनर शॉपिंग के लिए नहीं जाना पड़ेगा दिल्ली

एक छत के नीचे मिलेंगे, डिजाइनर वियर, होमफर्नीशिंग सहित अन्य उत्पाद

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

फरीदाबाद के लोगों को अब डिजाइनर शॉपिंग के लिए दिल्ली के जाम के झाम में नहीं फंसना पड़ेगा। अब फरीदाबाद में ही लोग डिजाइनर वियर की शॉपिंग कर सकते हैं। फरीदाबाद में राष्ट्रीय राजमार्ग पर विजय सेल्स के साथ में मिस्टर एंड मिस ब्लिस शोरूम की लांचिंग हुई। इस शोरूम में महिलाओं व पुरुषों के डिजाइनर परिधान, फैबरिक के साथ-साथ होम फर्नीशिंग, इंटीरियर, एक्सटीरियर आदि एक छत के नीचे उपलब्ध हैं। इस मौके पर शोरूम के संचालक नितेष गुप्ता ने बताया कि त्योहारी सीजन शुरु होने के साथ ही लोगों में खरीदारी को लेकर चिंता बढ़ जाती है, क्योंकि दिल्ली के जाम में शॉपिंग करना अपने आपमें चुनौतीपूर्ण है। ऐसे में उनकी पत्नी वाणी गुप्ता जोकि स्वयं फैशन डिजाइनर हैं, के साथ उन्होंने फरीदाबाद के लोगों के लिए दिल्ली से बेहतर वैरायटी के साथ डिजाइनर शॉपिंग उपलब्ध करवाई है। उन्होंने कहा कि यहां लोगों को अपने आयोजनों के लिए कपड़ों से लेकर घर की सजावट सहित अन्य उत्पाद मिल सकेंगे, जिससे लोगों के समय और पैसे की भी बचत होगी। उन्होंने बताया कि विशेष बात यह है कि यहां महिलाओं और पुरुष दोनों के डिजाइनर परिधानों व फैबरिक्स की बड़ी रेंज है। इस मौके पर शहर के अनेक प्रतिष्ठित लोगों ने शिरकत की और कहा कि फरीदाबाद में इस तरह का यह पहला शोरूम है और अब निश्चित रूप से लोगों को डिजाइनर शॉपिंग के लिए दिल्ली की ओर नहीं जाना पड़ेगा।

कंपनी के 1.53 लाख लेकर कर्मचारी फरार

फरीदाबाद। गांव मुझेड़ी स्थित एक कंपनी से कर्मचारी 1.53 लाख रुपये लेकर फरार हो गया। कंपनी मालिक की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। सेक्टर-28 निवासी मनीष अग्रवाल ने पुलिस को दी शिकायत में बताया उनकी मुझेड़ी गांव रोड पर एक कंपनी है। यहां करीब एक दर्जन युवक काम करते हैं। मुकेश कौशिक नामक कर्मचारी बाहर से पेमेंट आदि लाने का काम करता है। 10 अक्तूबर को उसने मुकेश कौशिक को बल्लभगढ़ सिही गेट स्थित एक दुकान से पैसे लेने भेजा था। दुकान मालिक ने उसे 1.53 लाख रुपये दे दिए। आरोप है कर्मचारी पैसे लेकर फरार हो गया। इतना ही नहीं आरोपी ने कंपनी मालिक से 1.30 लाख रुपये एडवांस भी ले रखे हैं। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

एसडी कॉलेज में खादी के महत्व पर हुआ अतिथि व्याख्यान

डॉ.रानी सांगवान ने विद्यार्थियों को दी जानकारी

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

स्थानीय गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म महाविद्यालय पलवल में एनएसएस यूनिट द्वारा खादी महोत्सव में खादी के महत्व विषय पर सरस्वती महिला महाविद्यालय पलवल की राजनीति विज्ञान की विभागाध्यक्ष डॉ. रानी सांगवान द्वारा अतिथि व्याख्यान दिया गया। उन्होंने बताया कि गांधी जी ने खादी को राष्ट्रवाद, समानता और आत्मनिर्भरता के रूप में प्रस्तुत किया और खादी दिवस प्रत्येक वर्ष सात अगस्त को मनाया जाता है। उनका मानना था कि समाज का पुनर्निर्माण और विदेशी शासन के विरुद्ध प्रभावी सत्याग्रह खादी के माध्यम से ही संभव है। खादी केवल घर में बनाए जाने वाला कपड़ा ही नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी विचार भी है। डॉ. सांगवान ने अपने व्याख्यान में खादी का संदेश देते हुए कहा कि खादी भारतीयों की आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि खादी या खद्दर भारत में हाथ से बनने वाले वस्त्र को कहते हैं। खादी के वस्त्र गर्मी में ठंडा और सर्दी में गर्म रहते हैं। खादी के वस्त्र न केवल रोजगार के अवसर बढ़ाते हैं,बल्कि निर्यात की क्षमता भी बढ़ाते हैं। खादी एक ऐसा वस्त्र है, जिसका महत्व वही समझता है, जो जन जीवन के महत्व को समझता है। खादी को चार कैटेगरी में बांटा जाता है-कॉटन खादी, वूलन खादी, सिल्क खादी व पोली खादी। पोली खादी में विभिन्न प्रकार के कपड़े डिमांड के हिसाब से बनाए जाते हैं। उन्होंने सभी स्वयंसेवकों से जीवन में खादी अपनाने की शपथ भी दिलवाई और अपने व्याख्यान में कहा कि खादी के कपड़े वर्ष में एक बार हमें जरूर बनाने चाहिएं। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या प्रतिभा सिंगला ने डॉ. रानी सांगवान का धन्यवाद करते हुए खादी महोत्सव की प्रशंसा की और बताया कि हमें जागरूकता के कार्यक्रम समय-समय पर करते रहना चाहिए। एनएसएस कार्यक्रम प्रभारी डॉ. हरदीप ने मुख्य अतिथि डॉ. रानी सांगवान का धन्यवाद किया।

सरपंचों और ग्राम सचिवों को भारतीय मानकों की दी जानकारी

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

भारतीय मानक ब्यूरो फरीदाबाद द्वारा पलवल के लघु सचिवालय में भारतीय मानक ब्यूरो की सलाहकार तुलिका झा वा ममता धवन ने ग्राम पंचायतों के सरपंचों के साथ-साथ ग्राम सचिवों को प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी उपमा अरोड़ा ने की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला के समस्त सरपंचों व ग्राम सचिवों ने भाग लिया।

डीडीपीओ उपमा अरोड़ा ने कहा कि हम जो वस्तु अपने खानपान में शामिल कर रहे हैं, उनके बारे में हमें जागरूक होना बहुत जरूरी है। कुछ भी प्रोडक्ट लेते समय हमें इस उस सामान की वैधता तथा वह सामान किन-किन खाद्य पदार्थों से मिलकर बना है तथा वह सही मार्का है अथवा नहीं, इन सभी का भान अथवा ज्ञान होना चाहिए। इसके बारे में हमें खुद भी जागरूक होना है और अन्य लोगों को भी जागरूक करना है। इससे अन्य नागरिकों में भी जागरूकता का एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

बीआईएस की सलाहकार तुलिका झा ने प्रशिक्षण के दौरान ग्राम पंचायतों के सरपंचों और ग्राम सचिवों को भारतीय मानकों और गुणवत्ता पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में विस्तार से जानकारी देकर जागरूक किया। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए भारतीय मानकों का उपयोग करने के लिए क्षमता निर्माण दिशा में कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बीआईएस केयर ऐप की भी जानकारी दी।

ट्रॉमा सेंटर बनाने की मांग को लेकर समाजसेवियों ने सौंपा ज्ञापन

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

औद्योगिक नगरी फरीदाबाद में ट्रॉमा सेंटर बनाने की मांग दो वर्षों से चली आ रही है, बावजूद इसके आज तक केंद्र व राज्य सरकार ने इस मांग पर काफी गौर नहीं किया। आज फिर एक बार विश्व ट्रॉमा सेंटर दिवस पर फरीदाबाद के समाजसेवियों ने जिला सिविल सर्जन फरीदाबाद डॉ. विनय गुप्ता, सिविल अस्पताल की प्रधान चिकित्सा अधिकारी डॉ. सविता यादव को ट्रॉमा सेंटर बनाने की मांग का ज्ञापन सौंपा। ट्रॉमा सेंटर को लेकर पिछले दो वर्षों से सेवा वाहन के संचालक सतीश चोपड़ा लगभग 20 हजार लोगों के हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन मुख्यमंत्री के नाम पहले दे चुके हैं।

ज्ञापन देने वाले समाजसेवियों का नेतृत्व अनशनकारी बाबा रामकेवल ने किया। जबकि ज्ञापन देने वालों में समाजसेवी सतीश चोपड़ा, आम आदमी पार्टी के नेता संतोष यादव, सिद्धपीठ श्री महाकाली मंदिर के प्रधान राकेश, अजय सैनी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

ज्ञापन में कहा गया है कि जिला फरीदाबाद व जिला पलवल क्षेत्र में सरकारी ट्रॉमा सेंटर नहीं है व इन दोनों जिलों की कुल आबादी 40 लाख से अधिक है। इनमें से फरीदाबाद जिले की ही आबादी करीब 29 लाख है। फरीदाबाद, बल्लभगढ़ में स्लम बस्तियां व कॉलोनियां ज्यादा हैं, जिनमें ज्यादातर गरीब तबके के लोग रहते हैं। औद्योगिक नगरी होने के कारण गंभीर हादसे भी ज्यादा होते हैं। जैसे छत से गिरना, किसी मशीन की चपेट में आना, आग लगना, करंट लगना व सड़क हादसों में गंभीर रूप से घायल होना। इन परिस्थितियों में जब मरीज को सिविल अस्पताल पलवल व सिविल अस्पताल होडल लाया जाता है तो उनको फर्स्ट एड देकर दिल्ली रेफर कर दिया जाता है। बल्लभगढ़ के क्षेत्र में कोई सड़क हादसा होने पर पहले मरीज को बलालभगढ़ सिविल अस्पताल लाया जाता है, फिर सिविल अस्पताल से फरीदाबाद सिविल अस्पताल में रेफर कर दिया जाता है। जहां ट्रॉमा सेंटर व आईसीयू की सुविधा व विशेषज्ञ डॉक्टर न होने से उसे फर्स्ट एड देकर दिल्ली ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया जाता है, जो काफी दूर पड़ता है। इस दौरान मरीज का काफी समय बर्बाद हो जाता है और बहुत बार समय पर इलाज न मिलने की वजह से कई मरीजों की रास्ते में मौत तक भी हो जाती है।

छह करोड़ की लागत से हथीन शहर में बनेगा सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट

एसटीपी बनने के बाद शहर की सीवरेज प्रणाली होगी बेहतर

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

पलवल जिला के हथीन तहसील में बेहतर सीवरेज प्रणाली देने के लिए लगभग छह करोड़ रुपये की लागत से सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाए जाएगा। सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगने से हथीन शहर की लगभग 25 हजार की आबादी को सीवरेज की समस्या से निजात मिलेगी। इसके लिए हरियाणा शहरी विकास प्रधाकिरण से टेंडर लगाकर कार्य शुरू कर दिया गया। 2024 केमध्य तक इसका कार्य पूरा कर लिया जाएगा। सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगने से शहर के 13 वार्डों के लोगों को शहर में बहते सीवरेज के पानी से पूरी तरह से छुटकारा मिलेगा।

हुडा विभाग की तरफ से हथीन कस्बे के लोगों को सीवरेज व बरसात के पानी की बेहतर निकासी के लिए जल्द ही एसटीपी का निर्माण करवाया जाएगा। इसके लिए विभाग की तरफ से टेंडर लगाकर एसटीपी का कार्य शुरू कर दिया गया है। अब तक शहर मे ट्रीटमेंट प्लांट नहीं होने से शहर की सीवरेज के पानी की निकासी नहीं हो पाती थी। जिससे सीवरेज का पानी शहर के सभी 13 वार्डों में गलियों व सड़कों पर भरा रहता था। इससे कई बार तो लोगों का निकलना भी दूभर हो जाता है। इस समस्या से निजात के लिए कस्बे के लोगों ने प्रशासन व क्षेत्र के विधायक से सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाने की मांग की थी। इससे शहर में सीवरेज के पानी से लोगों को छुटकारा मिल सके।

लोगो की मांग पर अब हुडा विभाग की तरफ से सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाया जा रहा है। प्लांट लगने के बाद शहर के सीवरेज के पानी को आगे प्लांट में साफ करके किसानों को खेतों की सिंचाई के लिए दिया जाएगा। इससे जहां हथीन शहरी क्षेत्र साफ सुधरा रहेगा, वहीं आसपास के गांवों के किसान सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट से साफ पानी से खेती कर फसले उगा सकेंगे। इससे सीवरेज के पानी का सदुपयोग होगा।

हथीन में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगने से शहर की सीवरेज व्यवस्था दुरुस्त होगी। जिससे शहर की गलियां और सड़कें साफ सुथरी रहेंगी। इससे शहर के सभी 13 वार्डों के लोगों को फायदा मिलेगा।
-गंगा बिशन

हथीन में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगने के बाद हथीन शहर साफ सुथरा बनेगा। इससे शहर की हजारों की आबादी को इसका लाभ मिलेगा।
-देवेंद्र सिंह

हथीन शहर में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाने का कार्य चल रहा है। जल्द ही इसको पूरा करके एसटीपी को शहरवासियों को सौंप दिया जाएगा। इससे शहर को साफ-सुथरा बनने में सुविधा रहेगी।
-मेहरंचद जेई

बाइक सवार बदमाशों ने दूध विक्रेता से 14 हजार लूटे

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

सेक्टर 14-15 मार्ग पर शनिवार सुबह बाइक सवार दो बदमाशों ने एक विक्रेता से पैसों का भरा बैग लूट लिया। बैग में 14 हजार रुपये थे। पीड़ित के शोर मचाने पर आसपास के लोगों ने एक आरोपी को बाइक सहित दबोच लिया। जबकि दूसरा रुपयों से भरा बैग लेकर फरार हो गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया। सेंट्रल थाना पुलिस आरोपी के साथी की तलाश कर रही है।

शिकायतकर्ता सोमनाथ ने पुलिस को दी शिकायत में बताया सेक्टर-15 में उसकी दूध की दुकान है। सुबह वह स्कूटी से दुकान जा रहे थे। सेक्टर 14-15 मार्ग डिवाइडिंग रोड पर दो बाइक सवार बदमाशों ने उन्हें रोक लिया और रुपयों से भरा बैग छीनकर भागने लगे। सोमनाथ ने शोर मचा दिया और मदद की गुहार लगाई। आवाज सुनकर आसपास से सड़क पर गुजर रहे लोगों ने बदमाशों का पीछा करना शुरू कर दिया। भीड़ देखकर आरोपियों की बाइक का संतुलन बिगड़ गया और दोनों सड़क पर गिर गए। पीछा कर रहे लोगों ने एक आरोपी को पकड़ लिया। इससे पहले कि दूसरे आरोपी को काबू किया जाता वह फरार हो गया।

निठारी हत्याकांड

पीड़ित परिवार

निठारी हत्याकांड के प्रमुख संदिग्धों को उच्च न्यायालय से राहत मिलने से पीड़ित परिवार न्याय से वंचित हो गए हैं। यह एक प्रकार से हमारी न्याय प्रदाता व्यवस्था, न्यायिक प्रणाली तथा समाज के रूप में हमारी आदत बन गई है। जेसिका से आरुषि तक निठारी हत्यांकाड के 19 गरीब बच्चे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र-एनसीआर से थे। उनकी जघन्यतम हत्याओं का खुलासा हुआ था, लेकिन अंतत: हमारी विद्वान अदालतों ने कहा कि जांचकर्ता यह नहीं सिद्ध कर पाए कि संदिग्ध-आरोपी इसमें संलिप्त थे। इसलिए उनको रिहा करने के आदेश दे दिए गए। जांचकर्ताओं का स्थानान्तरण हो गया, पदोन्नति हो गई, वे सेवानिवृत्त हो गए या मर गए, इसलिए उनकी भी कोई जवाबदेही नहीं है। निठारी हत्याकांड में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के अनुसार घरेलू नौकर सुरिंदर कोली तथा उसके मालिक मोनिंदर सिंह पंधेर को बरी कर दिया गया है। नोयडा में यह घटना 2005-06 में हुई थी और इसके विस्तृत विवरण सामने आने में सालों लगे थे। निठारी हत्याकांड खासकर इसलिए जघन्यतम है क्योंकि इसमें बड़ी निर्ममता से मासूम बच्चों की हत्या हुई थी जिनमें से अनेक की लाशें नजदीकी नाले से मिली थीं। बहुत सी लाशों के भीतरी अंग निकाल लिए गए थे जिससे संगठित 'मानव अंग व्यापार' का शक होता है। लेकिन अधकचरी जांच में अनेक कमियां थीं जिससे न्यायिक व्यवस्था में आरोपियों के बरी होने का रास्ता खुल गया। हालांकि, कोली और पंधेर को 2009 में दोषी पाया गया था, पर उच्च न्यायालय ने हाल ही में इस फैसले को उलट दिया क्योंकि उसके विचार से इसमें समुचित सबूत तथा कथित गवाहों की सटीक गवाही नहीं थी।

भारत में अपराधों के इतिहास में निठारी सीरियल हत्याकांड एक दिल दहला देने वाला कांड है जिसमें मानवीयता का घोर पतन सामने आता है। इस हत्याकांड ने पूरे देश को दहला दिया था क्योंकि इसमें अनेक लड़कियों व बच्चों को अकल्पनीय क्रूरता का शिकार बनाया गया था। निठारी हत्याकांड में अनेक अपहरण, यौन अपराध व हत्यायें समाहित हैं। पीड़ित अचानक गायब हो जाते थे और अपने पीछे परेशान परिवार छोड़ देते थे। जांच के समय पुलिस ने पंधेर व कोली के खिलाफ मजबूत सबूत एकत्र किए थे। उनका घर एक कत्लगाह की तरह था जिसमें अनेक गायब लोगों की लाशों के हिस्से मिले थे। सीबीआई ने नजदीकी नाले से अनेक लाशें और उनके हिस्से बरामद किए थे। उसने प्रमुख संदिग्धों के खिलाफ इस मामले को 'फूलप्रूफ' बताया था। लेकिन ऐसा लगता है कि न्याय प्रभावशाली व गरीब लोगों पर समान रूप से लागू नहीं होता है। हत्याकांड के अधिकांश पीड़ित उत्तर प्रदेश व बिहार के प्रवासी थे जो अपनी रोजमर्रा की कमाई पर किसी प्रकार जीवित थे, व्यवस्था में उनका कोई दखल नहीं था और मुकदमा लड़ने के संसाधन उनके पास नहीं थे।

निठारी हत्याकांड निश्चित रूप से भारतीय न्याय प्रणाली का सुस्त, विकृत एवं निराशाजनक चेहरा पेश करता है। निठारी हत्याकांड कोई स्थानीय त्रासदी न होकर राष्ट्रीय शर्म का विषय माना जा सकता है। इससे वे व्यवस्थागत मुद्दे सामने आते हैं जो दंड न्याय प्रणाली को प्रभावित कर रहे हैं। इनमें जवाबदेही की कमी, फारेंसिक संसाधनों की कमी तथा फैसला मिलने में बहुत अधिक विलम्ब शामिल हैं। इस प्रकरण से भारतीय दंड न्याय प्रणाली में तत्काल व समग्र सुधारों की आवश्यकता प्रकट होती है। ऐसा होने पर ही हम न्याय के पथ में विकृतियों से बच सकते हैं। प्रमुख संदिग्धों को रिहा करने का निर्णय समाज की सामूहिक चेतना पर हमला है।

नियंत्रणों से डिस्काम पर संकट

राज्य नियंत्रणों से मुक्ति तथा विद्युत वितरण को स्वतंत्र करने पर ही डिस्काम मुनाफे में आ सकते हैं। उनको राज्यों द्वारा दी गई 'खैरातों' से संकट का सामना करना पड़ता है।

उत्तम गुप्ता
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

केन्द्र सरकार विद्युत वितरण कंपनियों या डिस्काम को वित्तीय संकट से बाहर निकालने तथा उनको स्वस्थ बनाने के सभी प्रयास कर रही है, लेकिन राज्य सरकारें इन प्रयासों में बाधा डालती हैं।। ये विद्युत सप्लाई श्रृंखला में केन्द्रीय स्थान पर हैं और बिजली पैदा करने वाली कंपनियोंया जेनकोस से बिजली खरीद कर उनको उपभोक्ताओं को वितरित करती हैं। डिस्काम का वित्तीय संकट मुख्यत: इस कारण है कि वे अपने द्वारा खरीदी बिजली के भुगतान हेतु समुचित राजस्व नहीं एकत्र कर पाती हैं। दो दशक से ज्यादा समय से वे साल दर साल घाटा उठा रही हैं। इन नुकसानों की भरपाई के लिए उन्होंने बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से कर्ज लिया है तथा उनके बिल बकाया रहते हैं। वित्त वर्ष 2021-22 के अंत में उनका कुल कर्ज 620,000 करोड़ रुपये था। डिस्काम द्वारा समुचित राजस्व एकत्र न कर पाने के दो मुख्य कारण हैं। इनमें समग्र तकनीकी व वाणिज्यिक नुकसान-एटीएंडसी घाटा शामिल है जिसे सीधी भाषा में बिजली की चोरी कहा जा सकता है।

इसके साथ ही उनको राज्यों को बिक्री से प्राप्त राजस्व में कमी का सामना करना पड़ता है जिसे एसीएस-एआरआर अंतर कहा जाता है। 2020-21 में एटीएंडसी नुकसान 22.32 प्रतिशत थे, जबकि एसीएस-एआरआर अंतर 0.54 रुपया प्रति केडब्लूएच था। इन दोनों समस्याओं का कारण डिस्काम के कामकाज में उनके स्वामी, यानी राज्य सरकारों का लगातार हस्तक्षेप है। बिजली चोरी इतने बड़े पैमाने पर होती है कि बिना राजनीतिक अवस्थापना की मिलीभगत के इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मलिन बस्तियों या झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वाले लोग बड़ा वोटबैंक हैं और सत्तारूढ़ पार्टी उनको मुफ्त बिजली तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए अवैध कनेक्शनों को प्रोत्साहित करती है। जहां तक दूसरी समस्या का सवाल है, राजनीतिक मालिक डिस्काम को उसकी बिजली का बड़ा हिस्सा घरों-एचएच व किसानों को सप्लाई लागत के एक हिस्से पर या मुफ्त सप्लाई करने का आदेश देते हैं और राज्य बिजली नियामक आयोगों या एसईआरसी का काम केवल टैरिफ तय करना या रबर स्टांप की तरह काम करना है। राज्य सरकारें इस अंतर की प्रतिपूर्ति करने का वादा डिस्काम से करती हैं, पर अधिकांश राज्य यह प्रतिपूर्ति नहीं करते हैं अथवा इसे आंशिक रूप से व काफी विलंब से करते हैं। बिजली चोरी से राज्य का चौथाई हिस्सा खो जाने या सब्सिडी का बड़ा हिस्सा प्रतिपूर्ति न होने के कारण डिस्काम का वित्तीय घाटा अपरिहार्य है। अब व्यवस्था में 'खैरातें' बांटने की बीमारी गहराई तक घर कर चुकी है जिससे पहले से ही गंभीर स्थिति और गंभीर हो गई है।

इस बारे में पंजाब की स्थिति पर गौर करें। पिछले साल आप सरकार द्वारा घोषित अनेक खैरातों में से मुख्यत: प्रति माह 300 यूनिट तक घरों-एचएच को मुफ्त बिजली देना शामिल है। सामान्य समझदारी के अनुसार राज्य को केवल उन एचएच की मदद करनी चाहिए जो लागत के आधार पर इसका भुगतान करने की स्थिति में न हों। इसका तरीका उन परिवारों की पहचान है जिनकी आय एक निर्धारित सीमा से कम हो। आप ने यह नहीं किया है। क्या यह अनुमान लगाया जा सकता है कि केवल कम आय वाले एचएच हीं 300 यूनिट से कम उपभोग करेंगे? मूल रूप से यह सहायता केवल उनको मिलनी चाहिए जो इसका खर्च उठाने की स्थिति में न हों। लेकिन एक गहन विश्लेषण से स्पष्ट है कि आप सरकार द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण भ्रामक है। इसका असली इरादा 'सबको खैरात' देने का लगता है। यदि कोई परिवार प्रति माह 300 यूनिट से कम बिजली खर्च करता है तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह परिवार कम आय वाला है। उदाहरण के लिए, ऐसे अनेक उच्च आय वर्ग वाले परिवारों के वृद्ध लोग होंगे जो प्रति माह 300 यूनिट से कम उपभोग करते होंगे।

इस सीमा से अधिक खर्च वाले अनेक उपभोक्ताओं में उसी एचएच में अनेक कनेक्शन लेने की भयानक प्रवृत्ति देखने में आई है। उदाहरण के लिए, यदि कोई परिवार-एचएच प्रति माह 900 यूनिट खर्च करता है और वह उपभोग 300 यूनिट से नीचे रखने के लिए तीन मीटर लगवा लेता है तो उसे कोई बिजली बिल नहीं देना होगा।

खबरें हैं कि 1,00,000 से अधिक मीटरों के स्थान पर दो या तीन मीटर लगाए गए हैं जिससे उच्च आयवर्ग वाले उपभोक्ताओं को भी मुफ्त बिजली मिल जाती है। इसके परिणामस्वरूप वर्तमान समय में पंजाब में 95 प्रतिशत से अधिक बिजली उपभोक्ताओं को सब्सिडी मिलती है। कनेक शनों की बढ़ती संख्या के कारण औसतन प्रति माह सब्सिडी 125 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। इसके परिणामस्वरूप वर्तमान वित्त वर्ष में कुल घरेलू सब्सिडी 8,813 करोड़ रुपये होगी जो शुरुआती अनुमान 7,313 करोड़ रुपये से 1,500 करोड़ रुपये अधिक है। दिल्ली में 200 यूनिट तक उपभोग वाले एचएच से कोई भुगतान नहीं लिया जाता है, जबकि 200 से 400 यूनिट प्रति माह तक उपभोग वाले एचएच के बिल में 800 रुपये की छूट दी जाती है। ऐसे में अधिकांश घरों द्वारा मुफ्त बिजली प्राप्त करने से इनकार नहीं किया जा सकता है। दूसरे राज्यों में भी स्थिति इससे ज्यादा अलग नहीं है।

इस तथ्य को देखते हुए कि राज्य की पूरी जनसंख्या को मुफ्त 'खैरात' मिलेगी जिसमें अमीर, करोड़पति व अरबपति शामिल हैं, बिजली सब्सिडी बिल के आसमान छूने की संभावना है। बजट सीमाओं का सामना करने के कारण राज्य लगातार पूरी प्रतिपूर्ति नहीं करेंगे तथा विलम्ब में प्रतिपूर्ति से डिस्काम का घाटा और बढ़ेगा। इस बीच केन्द्र सरकार डिस्काम के लिए द्वि-आयामी रणनीति पर काम कर रही है। 1. वह उनको समय पर भुगतान के लिए दबाव डाल रही है तथा 2. एटीएंडसी नुकसान व एसीएस-एआरआर अंतर कम करने के लिए उनकी सहायता कर रही है। उसने लेट पेमेंट सरचार्ज-एलपीएस व संबंधित नियम, 2022 में लागू किए हैं। इनके अनुसार डिस्काम को 3 जून, 2022 तक अपने पुराने बकाये समयबद्ध रूप से 12 समान मासिक किश्तों-ईएमआई में करने को कहा है। इस तिथि के बाद एलपीएस लागू नहीं होगा। यही नियम वर्तमान बकाए की समयबद्ध अदायगी पर लागू किए गए हैं।

दबाव की यह रणनीति कारगर रही है। बिजली सप्लाई श्रृंखला में सभी पक्षों पर पुराने बकाये जून, 2022 में 1,39,747 करोड़ रुपये से घट कर जुलाई, 2023 में 69,957 करोड़ रह गए हैं। एलपीएस की धमकी के कारण डिस्काम ने पीएफसी व आरईसी के अंतर्गत लिए कर्जों का भुगतान एलपीएस के अंतर्गत किया है। 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के अंतर्गत 130,000 करोड़ रुपये का प्राविधान किया गया है। इसके साथ ही जुलाई, 2021 में 'वितरण की सुधार-संबद्ध व परिणाम-आधारित योजना' लागू की गई थी। इसके अंतर्गत केन्द्र सरकार ने बिजली सप्लाई की विश्वसनीयता व गुणवत्ता में सुधार तथा डिस्काम की क्षमता में वृद्धि के लिए 300,000 करोड़ रुपये का प्राविधान किया है। इसमें अनिवार्य रूप से प्री-पेड व स्मार्ट मीटर आयाम पूरी बिजली श्रृंखला में लागू किया जाएगा जिसमें लगभग 250 मिलियन एचएच शामिल हैं। इस योजना ने बेहतर परिणाम प्रदर्शित किए हैं। डिस्काम के एटीएंडसी नुकसान 2020-21 में 22.32 प्रतिशत से घट कर 2022-23 में 13.5 प्रतिशत रह गए। एसीएस-एआरआर अंतर भी इसी अवधि में 0.54 प्रति केडब्लूएच से घट कर 0.15 केडब्लूएच रह गया है।

एटीएंडसी घाटे में 9 प्रतिशत की कमी भारी उपलब्धि है। केन्द्र इस बात पर दृढ़ है कि एसीएस-एआरआर कमी को मार्च, 2025 तक शून्य किया जाना चाहिए। इससे बिजली चोरी 'शून्य' हो जाएगी तथा राज्यों के समयबद्ध भुगतान के साथ सभी सब्सिडी बकाया वसूल हो जांएगे। लेकिन मोदी के प्रयास तभी सफल होंगे जब डिस्काम को राज्य के नियंत्रणों से मुक्त किया जाए, राज्य लाभार्थियों को सीधे सब्सिडी दें तथा बिजली वितरण को नियंत्रणों से बाहर कर दिया जाए।

इजरायल-हमास युद्ध और भारत का रुख

भारत का कूटनीतिक रुख, जो दो-राज्य समाधान का समर्थन करता है, को संघर्ष की उभरती गतिशीलता के मद्देनजर संशोधन की आवश्यकता हो सकती है।

उत्तम चक्रवर्ती
(लेखक, बंगलौर विवि में सह प्रोफेसर हैं)

जब वैश्विक अर्थव्यवस्था संकट से जूझ रही है, मध्य पूर्व में मौजूदा भूराजनीतिक संकट ने मुद्रास्फीति के स्तर को दोगुना कर दिया है। यह संकट हमास द्वारा इजराइल के खिलाफ शुरू किए गए अप्रत्याशित हमले के बाद उभरा, जिसके बाद इजराइल को युद्ध की घोषणा करनी पड़ी। चूँकि इज़राइल भारत का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार है, इसलिए प्रभाव बढ़ सकते हैं।

बेहद आश्चर्य की बात है कि सप्ताहांत में हमास द्वारा इज़राइल पर किए गए अप्रत्याशित हमले ने मध्य पूर्व में एक बड़े सशस्त्र युद्ध को जन्म दे दिया है। लड़ाई में अब तक 2300 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और सैकड़ों को बंदी बना लिया गया है। इजरायली प्रधानमंत्री ने कड़ी प्रतिक्रिया की चेतावनी दी है, इसलिए स्थिति में जल्द सुधार होने की संभावना नहीं है. इस संदर्भ में, इज़राइल के सबसे पुराने और महान सहयोगियों में से एक, भारत ने यहूदी राज्य के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया है और संकट के समय में सहायता करने का वादा किया है। भारत के प्रधान मंत्री ने समय पर आतंकवादी घटना पर दुख और निंदा व्यक्त की है। यदि इजरायल और फिलिस्तीन के बीच आतंकवादी हमले और प्रतिशोध पूर्ण पैमाने पर युद्ध में बदल गए तो दुनिया भर में मुद्रास्फीति संभव है। आर्थिक रूप से इसकी तुलना रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष की शुरुआत से की जा सकती है।

वर्तमान में, इज़राइल भारत का तीसरा सबसे बड़ा एशियाई व्यापार भागीदार है और वैश्विक स्तर पर भारत का 10वां सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। भारत और इज़राइल के बीच सैन्य व्यापार का मूल्य लगभग 74,000 करोड़ रुपये है, जो रूस के बाद भारत को सैन्य उपकरणों का दूसरा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बनाता है। इज़राइल को भारत का माल निर्यात भारत के कुल निर्यात का 1.8त्न है, जो ज्यादातर पेट्रोलियम उत्पादों की बिक्री से प्रेरित है। इजराइल भारत से 5.5 से 6 अरब डॉलर मूल्य के परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों का आयात करता है। वित्तीय वर्ष 2023 के दौरान, इज़राइल को भारत के निर्यात का कुल मूल्य 8.4 बिलियन डॉलर था। इसलिए, रुपये के अवमूल्यन की एक महत्वपूर्ण संभावना मौजूद है, जिसके लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को हस्तक्षेप की आवश्यकता है। ऐसे परिदृश्य में, मुद्रा सीमा 83-84 ब्रैकेट तक बढ़ने की उम्मीद है। इसके विपरीत, भारत इज़राइल से उपकरण, मोती, हीरे और अन्य मूल्यवान रत्नों के आयात में लगा हुआ है, जिसमें कीमती और अर्ध-कीमती दोनों प्रकार शामिल हैं।

भारत को इज़राइल का प्राथमिक निर्यात भारत के प्रमुख उद्योगों और कारखानों में उपयोग की जाने वाली आवश्यक सामग्री और मशीनरी हैं, जैसे कीमती पत्थर और धातु, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, उर्वरक, मशीनें, इंजन, पंप, चिकित्सा और तकनीकी उपकरण, कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन, नमक, सल्फर , पत्थर, सीमेंट, और प्लास्टिक। वर्तमान में, इज़राइल भारत को 3 अरब डॉलर से अधिक मूल्य की वस्तुओं और उपकरणों का निर्यात करता है। यदि आतंकवादी हमलों और संघर्ष के कारण दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार रुक जाता है, तो भारत 25,000 करोड़ रुपये की वस्तुओं से चूक सकता है, जिसके परिणामस्वरूप कई सामान्य घरेलू वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होगी।

इज़राइल और हमास के बीच चल रहे संघर्ष ने दुनिया भर के वित्तीय बाजारों में बेचैनी की भावना पैदा कर दी है, जिससे निवेशक अपने निवेश को सुरक्षित-संपत्ति की ओर पुनर्निर्देशित कर रहे हैं। निवेशक सतर्क रुख बनाए रखते हैं और वैश्विक विकास के जवाब में सतर्कता बरतते हैं, क्योंकि बाजार में जोखिम से बचने की मानसिकता व्याप्त है। भारतीय शेयर बाजार के संबंध में उच्च जोखिम वाले उद्यमों पर विचार करते समय निवेशक सावधानी बरत सकते हैं।

पिछले सप्ताह अन्य वैश्विक शेयर सूचकांकों के प्रदर्शन के साथ-साथ भारतीय शेयर बाजार में भी उल्लेखनीय गिरावट आई। यह गिरावट आतंकवादी समूह हमास द्वारा किए गए अप्रत्याशित बहुआयामी हमले से प्रभावित थी, जिसमें भूमि, वायु और समुद्री अभियान शामिल थे, जिसके परिणामस्वरूप इज़राइल में 1,000 से अधिक लोगों की जान चली गई। उपर्युक्त प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप भू-राजनीतिक तनाव में वृद्धि हुई है, साथ ही कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि हुई है और वैश्विक शेयर बाजारों में अस्थिरता बढ़ गई है। केवल पूर्वानुमान

वहां केवल निष्कर्षों के साथ भविष्यवाणियां होती हैं। इज़राइल और फ़िलिस्तीन में दक्षिणपंथी राजनीति समझौता अपनाने के प्रति अनिच्छा प्रदर्शित करती है। इससे बातचीत की प्रक्रिया में बाधा आती है. भारत के कूटनीतिक रुख, जो दो-राज्य समाधान का समर्थन करता है, को संघर्ष की उभरती गतिशीलता के मद्देनजर संशोधन की आवश्यकता हो सकती है। जानमाल के नुकसान को रोकने के लिए इज़राइल में फंसे भारतीय नागरिकों को जल्द से जल्द निकालने की आवश्यकता हो सकती है।

इन देशों में रहने वाले भारतीय प्रवासियों को भी अपने जीवन पर असर का अनुभव हो सकता है। व्यापक इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष के संदर्भ में, भारत ने हमेशा एक शांतिपूर्ण समाधान की वकालत की है जो सभी शामिल पक्षों के अधिकारों को बरकरार रखता है। लगातार युद्ध के परिणामस्वरूप भू-राजनीतिक तनाव बढ़ गया है। मुद्दे के शांतिपूर्ण समाधान की प्राप्ति के लिए वैश्विक समुदाय के सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता है। एक संतुलित दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल अरब देशों के साथ सकारात्मक संबंधों को विकसित करने में मदद करता है बल्कि उनके साथ उत्पादक और सार्थक बातचीत भी सुनिश्चित करता है।

आप की बात

समलैंगिक विवाह

सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिकों के विवाह को मान्यता देने से इनकार करते हुए कहा कि यह कार्य विधायिका के क्षेत्र में आता है। वैसे भी विधायिका ने अपना रूख कोर्ट में स्पष्ट कर दिया था कि समलैंगिक विवाह को मान्यता देने से बाद कई तरह की उलझने सामने आएगी। भारत में विवाह एक सशक्त संस्था है जो कि प्रकृति के नियमानुसार महिला-पुरुष विवाह संबंधों को ही स्वीकार करती है। हालांकि, न्यायालय ने समलैंगिक संबंधों को अपराध के दायरे से बाहर किया है, पर अभी भारतीय समाज संभवत: आधुनिकता में इतना आगे नहीं बढ़ा है कि अनेक पश्चिमी देशों की तरह समलैंगिक विवाहों को अनुमति दी जाए। देश की आबादी के अनुपात में मुट्ठी भर लोग ही समलैंगिक संबंधों में लिप्त हैं और इन्हें कोई रोक भी नहीं रहा है। देश की अधिकांश जनता ऐसे रिश्तों को हेय दृष्टि से देखती है। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को इस दृष्टिकोण से सही ही कहा जा सकता है कि जब समाज किसी चीज को व्यापक स्वीकृत न प्रदान करे तो न्यायपालिका उसके पक्ष में निर्णय देकर भी उसे समाज में स्वीकार्य नहीं बना सकती है। देश की सभी राजनीतिक पार्टियों तथा सामाजिक संगठनों ने उचित ही इस निर्णय का स्वागत किया है।

– **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

सपा की रणनीति

मध्य प्रदेश में सपा अकेले चुनाव लड़ेगी क्योंकि कांग्रेस से मिलकर चुनाव लड़ने पर सहमति नहीं बनी। इसी तरह छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भी वह अपने दम पर चुनावों में भाग लेगी। सपा के मुख्य प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने कहा कि अगले वर्ष होने वाले आईएनडीआईए में विपक्षी गठबन्धन पर कोई फर्क नहीं पडेगा। लेकिन यह बयान लोगों के गले नहीं उतर रहा है। जब विधानसभा चुनावों में ही सहमति नहीं बन रही है तब देश के चुनाव में कैसे सहमति बन जाएगी। यदि सपा का मध्य प्रदेश में अच्छा प्रदर्शन रहा तो इससे संभवत: कांग्रेस को नुकसान हो सकता है। मध्य प्रदेश में सपा के एक समय 7 विधायक रहे हैं, इसलिए कांग्रेस को उसे स्थान देने में उदारता दिखानी चाहिए। यदि कांग्रेस सपा के प्रति अपने प्रभुत्व वाले राज्यों में उदारता नहीं दिखाती है तो वह लोकसभा चुनाव मे अखिलेश यादव से उत्तर प्रदेश में ऐसी उम्मीद कैसे कर सकती है जहां सपा प्रमुख विपक्षी दल है तथा कांग्रेस के पास केवल एक सीट है। संभवत: सपा व अन्य गैर-कांग्रेस दलों की रणनीति अपने अधिकाधिक सांसद बना कर भावी राजनीति की तैयारी करना है।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

विपक्षी एकता

इंडिया गठबंधन में घटक दलों की अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग के कारण गठबंधन में दरार पड़ती लगती है। राजस्थान मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में आम आदमी पार्टी और समाजवादी पार्टी अपने प्रत्याशी खड़े कर रहे हैं, उससे लगता है कि विपक्षी एकता में समस्या पैदा हो गई है। पंजाब, दिल्ली, पश्चिम बंगाल व हरियाणा में भी इंडिया गठबंधन के घटक दलों में आरोप-प्रत्यारोप और हावी होने की प्रवृत्ति उभर रही है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव का यह कहना बेहद महत्वपूर्ण है कि यदि इन विधानसभा चुनावों में कांग्रेस गठबंधन नहीं करती है तो हम लोकसभा चुनाव मे गठबंधन नहीं करेंगे। उनके बयान से लगता है कि विधानसभा चुनावों के बाद इंडिया गठबंधन में बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। इससे राजग और इंडिया, दोनों गठबंधनों से बाहर रहने वाले दलों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। इससे उत्तर प्रदेश की राजनीति में बसपा की भूमिका बढ़ सकती है। वैसे बहुत कुछ विधानसभा चुनाव परिणामों पर निर्भर करेगा, लेकिन विपक्षी एकता की काठ की हांडी जलने के बाद बेकार हो जाएगी।

– **वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

भयानक हथियार

इजराइल द्वारा हमास पर सफेद बमों से जोरदार हमले की बात कही जा रही है। यह बम ऑक्सीजन के संपर्क में आते ही तुरंत प्रज्वलित हो जाता है और पानी से नहीं बुझता। यह बम फास्फोरस और रबर के मिश्रण से बनाया गया है। यह बम तुरंत प्रज्वलित हो कर आसपास की ऑक्सीजन को सोख लेता है। इसके परिणामस्वरूप लोग दम घुटने से मर सकते हैं। इस बम के दुष्प्रभाव से त्वचा के जलने, साँस लेने में दिक्कतों, अंगों के ख़राब होने आदि से लेकर हड्डियों के पिघलने तक की बात कही जा रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा पहली बार सफेद बम का प्रयोग द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी के खिलाफ किया गया था। इसके बाद जिनेवा कन्वेंशन के मुताबिक इस बम का इस्तेमाल 115 देशों ने बिना किसी ठोस वजह के किया, जबकि इसे प्रतिबंधित किया गया है। यदि सफेद बमों जैसे घातक व प्रतिबंधित हथियारों का प्रयोग किया जाता है तो यह युद्ध अपराध के साथ मानवता के खिलाफ किया जाने वाला अपराध भी है। सभी देशों को इस बारे में आपस में मिल बैठ कर निर्णय लेने की जरूरत है।

–**दत्तप्रसाद शिरोडकर,** मुंबई

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते है।

तकनीक से रोकें कर चोरी : योगी

● इंफोर्समेंट की कार्रवाई की गोपनीयता भंग करने वालों के खिलाफ होगी कठोर कार्रवाई

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को अपने सरकारी आवास पर एक उच्चस्तरीय बैठक में चालू वित्तीय वर्ष में कर-करेत्तर राजस्व प्राप्तियों की अद्यतन स्थिति की समीक्षा की। इस अवसर पर वित्त मंत्री सुरेश खन्ना और आबकारी मंत्री स्वतंत्र प्रभार नितिन अग्रवाल भी उपस्थिति रहे। मुख्यमंत्री ने बारी-बारी जीएसटी, वैट, आबकारी, स्टाम्प एवं पंजीयन, परिवहनए भू-राजस्व और ऊर्जा में राजस्व संग्रह के लक्ष्य और उसके सापेक्ष प्राप्तियों का विवरण प्राप्त किया। इसके साथ ही विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि नियोजित प्रयासों से प्रदेश के कर-करेत्तर राजस्व संग्रह में सतत वृद्धि हो रही है। वर्तमान वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही तक विविध माध्यमों से अब तक 92 हजार करोड़ से अधिक की राजस्व प्राप्ति हुई है। इसमें जीएसटी/वैट से 52 हजार करोड़/ एक्साइज टैक्स के रूप में 20 हजार करोड़, स्टाम्प एवं पंजीयन से 13 हजार करोड़ और परिवहन से 47 सौ करोड़ से अधिक का संग्रह हुआ है। यह स्थिति संतोषजनक कही जा सकती है। हर विभाग ने विगत वर्ष की पहली दो तिमाहियों के सापेक्ष अच्छा राजस्व संग्रहित किया है। यह जनता से एकत्रित राशि है जो प्रदेश के विकास और लोककल्याणकारी कार्यों में व्यय होगा।

योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में अपार संभावनाएं हैं। नियोजित प्रयासों से यहां मैन्युफैक्चरिंग की गतिविधियां भी बढ़ी हैं। प्रदेश को इसका लाभ मिलना चाहिए। राजस्व संग्रह बढ़ाने के लिए हमें नए स्रोत भी बनाने चाहिए। चालू वित्तीय वर्ष के लिए 2.62 लाख करोड़ के राजस्व संग्रह लक्ष्य के अनुरूप ठोस कोशिश की जाए। उन्होंने कहा कि राजस्व की चोरी राष्ट्रीय क्षति है। जीएसटी की चोरी/अपवंचन की कोशिशों को रोकने के लिए सजगता बढ़ा//जाने की जरूरत है। छापेमारी की कार्यवाही से पहले पुख्ता जानकारी इकठ्ठा करें। इंटेलिजेंस को और बेहतर करने की आवश्यकता है। इंफोर्समेंट के कार्यवाही की गोपनीयता और शुचिता से खिलवाड़ करने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों को चिन्हित करें और उनके विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की जाए।

विशेष अनुशासनिक इकाइयों और सचल दल इकाइयों की सक्रियता और बढ़ाए जाने की जरूरत है। यद्यपि हाल के समय में इनकी सजगता से कर चोरी/अपवंचन पर प्रभावी रोक लगाने में सफलता मिली है। फिर भी अभी कार्यशैली में व्यापक सुधार की जरूरत है। तकनीक का अधिकाधिक उपयोग करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि पर्व-त्योहार के माहौल में अवैध शराब बनाने व बेचने वालों के फिर सक्रिय होने की आशंका है। ऐसी गतिविधियों पर पूरी सख्ती की जाए। किसी भी जिले में ऐसी गतिविधि न हो। हर जिला-हर थाने की टीम एक्टिव मोड में इनकी निगरानी करे। खनन कार्य में संलग्न वाहनों में किसी भी दशा में ओवरलोडिंग न हो। यह नियम विरुद्ध भी है और दुर्घटनाओं का कारक भी बनता है। इस दिशा में सख्ती की जानी चाहिए। बालू, मोरम, गिट्टी जैसे उपखनिजों का आम आदमी से सीधा जुड़ाव है। इनकी कीमतों में अनावश्यक बढ़ोतरी न हो। विभिन्न विकास परियोजनाएं भी इससे प्रभावित होती हैं। ऐसे में उपखनिजों का कृत्रिम अभाव पैदा करने वाले कालाबाजारियों के खिलाफ विधिक कार्रवाई की जाए।

नक्सली गतिविधियों में संलिप्त दंपति देवरिया व छत्तीसगढ़ से गिरफ्तार

लखनऊ। आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने नक्सली गतिविधियों में संलिप्त दंपति को गिरफ्तार किया है। इनमें बृजेश कुशवाहा की गिरफ्तारी देवरिया से एवं उसकी पत्नी प्रभा की गिरफ्तारी रायपुर, छत्तीसगढ़ से की गई है। उनके घरों के सर्च की कार्यवाही की जा रही है। एटीएस के मुताबिक प्रभा को रायपुर, छत्तीसगढ़ में न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर नियमानुसार ट्रांजिट रिमांड पर लखनऊ लाने की कार्यवाही की जा रही है। बृजेश कुशवाहा एवं इसकी पत्नी प्रभा मजदूर किसान एकता मंच एवं और सावित्रीबाई फूले संघर्ष समिति से जुड़कर वामपंथी विचारधारा का समर्थन करने की आड़ में राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में शामिल थे।

● राष्ट्रविरोधी क्रियाकलापों और प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े कई दस्तावेज व लेटर बरामद

समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा, न बनने पाए हॉटस्पॉट, साफ-सफाई के लिए आमजन को भी करें जागरूक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को अपने सरकारी आवास पर एक उच्चस्तरीय बैठक में आयुष्मान भारत योजना के क्रियान्वयन, निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेजों की स्थिति और डेंगू की रोकथाम के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने निर्देशित किया कि डेंगू मरीजों के लिए अस्पतालों में आवश्यकतानुसार अतिरिक्त बेड की व्यवस्था कराई जाए। डेंगू पीड़ित हर मरीज को समय पर इलाज मिले। उन्होंने सतर्कता व सावधानी बढ़ाए जाने के भी निर्देश दिए। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि 293 चिकित्सा शिक्षकों और 1950 से अधिक स्टाफ नर्सों को शीघ नियुक्ति पत्र मिलेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हाल के दिनों में डेंगू के मामलों में वृद्धि देखी गई है। विगत कुछ दिनों में मुरादाबाद, कानपुर नगर, लखनऊ और गौतमबुद्ध नगर में डेंगू का प्रकोप बढ़ा है। यह सुनिश्चित किया जाए कि कहीं भी हॉटस्पॉट की स्थिति न बनने पाए। गांव हो या कि शहर कहीं भी एक भी संक्रमित मरीज इलाज के अभाव में परेशान न हो। सभी सरकारी व निजी अस्पतालों/मेडिकल कॉलेजों में नए रोगियों की नियमित रिपोर्टिंग जरूर हो। जनपदों में आउटब्रेक्स की स्थिति पर नियंत्रण के लिए ठोस प्रयास किए जाने आवश्यक है। नगर विकास, ग्राम विकास एवं पंचायती राज विभाग मच्छरों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए फॉगिंग एवं लार्वीसाइडल स्प्रे कराई जाए। सुबह सैनीटाइज़ेशन व शाम को फॉगिंग का कार्य निरंतरता के साथ कराएं। जल भराव का निस्तारण कराएं। योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना और मुख्यमंत्री जन अयोग्य योजना के लिए पात्र हर परिवार का आयुष्मान कार्ड जरूर बनाया जाए। इस संबंध में वर्तमान में संचालित अभियान के तहत उत्तर प्रदेश में अच्छा कार्य हो रहा है। अब तक 191.9 लाख परिवार इन योजनाओं से आच्छादित होकर 5 लाख वार्षिक के मुफ्त स्वास्थ्य बीमा सुविधा से लाभान्वित हो रहे हैं। योजना के बारे में आमजन के बीच जागरूकता भी बढ़ाई जाए।

उन्होंने बताया कि असेवित जिलों में मेडिकल कॉलेज स्थापना के लिए राज्य सरकार ने पीपीपी मोड की नीति अपनाई है। इसके तहत शामली, मऊ, महराजगंज और संभल में कार्य प्रारंभ हो चुका है जबकि बागपत, मैनपुरी, कासगंज, महोबा, हमीरपुर और हाथरस के लिए वायबिलिटी गैप फंडिंग के तहत भारत सरकार से अनुमोदन प्राप्त हो चुका है। सभी जगह शीघ्र ही कार्य प्रारंभ किए जाएं। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि विभिन्न चिकित्सा महाविद्यालयों में चयनित 293 शिक्षकों और 1950 से अधिक स्टाफ नर्सों को नियुक्ति पत्र प्रदान कर यथोचित तैनाती सुनिश्चित करें। राजकीय मेडिकल कॉलेजों में आचार्य, सह आचार्य और सहायक आचार्य के रिक्त पदों पर यथाशीघ्र योग्य चिकित्सकों की नियुक्ति की जाए। फेज-3 के अंतर्गत निर्माणाधीन बुलंदशहर, लखीमपुर खीरी, गोंडा, औरैया, ललितपुर, सोनभद्र, कानपुर देहात, पीलीभीत, बिजनौर, चंदौली, कौशाम्बी, कुशीनगर, सुल्तानपुर व अमेठी मेडिकल कॉलेजों के निर्माण कार्य पूरी गुणवत्ता के साथ समयबद्ध ढंग से पूरा किया जाए।

तेजी से उभर रहा मेडिकल टूरिज्म के रूप में यूपी: जयवीर

लखनऊ। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश बेहतर कनेक्टिविटी एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास के चलते मेडिकल टूरिज्म के हब के रूप में तेजी से उभर रहा है। पश्चिमी देशों की तुलना में यहां इलाज सस्ता होने के कारण विदेशी मरीज जटिल रोगों का उपचार कराने के लिए यूपी की ओर रूख कर रहे हैं। पीएचडी चैम्बर आफ कामर्स द्वारा जारी आंकड़ों के हिसाब से भारत आने वाले लगभग 88 प्रतिशत मरीज बंगलादेश, ईराक, मालद्वीप, अफगानिस्तान, ओमान एवं सूडान केन्या, नाइजेरिया तथा तंजानिया से है। बंगलादेश से आने वाले मरीजों की संख्या सर्वाधिक है।

मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि यूपी में नोयडा, गाजियाबाद, लखनऊ, कानपुर और वाराणसी जैसे शहरों में अच्छी चिकित्सा सेवाये देने वाले अस्पतालों तथा बेहतर कनेक्टिविटी के कारण मेडिकल टूरिज्म के रूप में उभर रहे हैं। सुदूर पश्चिमी देशों में प्रैक्टिस करने वाले चिकित्सक अब अमेरिका और रूस से भारत लौट रहे हैं और इन शहरों को बड़े अस्पतालों में सेवायें दे रहे हैं। यूपी में पश्चिमी देशों की तुलना में 60 से 80 प्रतिशत तक की बचत होती है। आने वाले दिनों में यहां चिकित्सा पर्यटन में कई गुना बढ़ोत्तरी हो सकती है। मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि यूपी में कई जाने माने मेडिकल कालेज और चिकित्सालय है। इसमें पॉच चिकित्सालय लखनऊ में स्थित है। इनमें एसजीपीजीआई, केजीएमयू, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, बीएचयू वाराणसी, जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कालेज अस्पताल कानपुर, अपोलोमेडिक्स सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल लखनऊ, मेदान्ता सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल लखनऊ, डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ तथा कैलाश हास्पिटल एण्ड हार्ट इंस्टीट्यूट सेक्टर 27 नोयडा है। पर्यटन मंत्री ने बताया कि देश विदेश से आने वाले पर्यटक कई प्रकार के जटिल रोगों का उपचार कराते हैं। इसमें हार्ट, आर्थोपेडिक सर्जरी, कॉस्मेटिक सर्जरी, कैंसर उपचार, दंत चिकित्सा, प्रजनन उपचार, वैकल्पिक चिकित्सा, बोनमैरो प्लान्टेशन, बाईपास सर्जरी तथा नेत्र चिकित्सा शामिल है। इसके अलावा कुछ पर्यटक आयुर्वेद से उपचार जैसे योग, पंचकर्म, कायाकल्प आदि के लिए भी आते हैं। क्योंकि यूपी में हार्ट रोगियों का सस्ता इलाज किया जाता है। यूपी में कुछ वर्षों से चिकित्सा पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय तेजी आई है।

मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के अनुसार वर्ष 2019 में राज्य में 15 लाख से अधिक चिकित्सा पर्यटकों का उपचार किया गया। यह संख्या सम्भावित रूप से बढ़ेगी, जिससे चिकित्सा पर्यटन स्थल के रूप में राज्य की प्रतिष्ठा को बल मिलेगा। फोर्टिस अस्पताल समूह में लगभग 2800 से 3000 विदेशों से मरीज उपचार हेतु आते हैं। उन्होंने बताया कि चिकित्सा पर्यटन में बढ़ोत्तरी के पीछे यूपी की बेहतर कानून व्यवस्था, कनेक्टिविटी एवं अस्पतालों में गुणवत्तापूर्ण एवं सस्ता इलाज है।

31 अक्टूबर तक सड़कों को गड्ढामुक्त करें: दुर्गा शंकर मिश्र

लखनऊ। मुख्य सचिव ने दुर्गा शंकर मिश्र ने कहा कि आगामी त्यौहार के दृष्टिगत ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में चिन्हित सभी सड़कों को गड्ढामुक्त करने का कार्य आगामी 31 अक्टूबर तक प्रत्येक दशा में पूरा कर दिया जाए। उन्होंने कहा कि विभागीय अधिकारियों द्वारा स्थलीय निरीक्षण कार्य में अपेक्षित प्रगति लायी जाये। ड्रोन कैमरे के माध्यम से फोटो मंगवायें जायें। बरसात के कारण अगर कहीं जलभराव होता है, तो वहां जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाये। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र की ने यह निर्देश बुधवार को गड्ढामुक्ति की प्रगति के संबंध में आयोजित समीक्षा बैठक में दिए।

उन्होंने सड़कों के नवीनीकरण व मरम्मत सम्बन्धी कार्यों की समीक्षा के लिये एक पोर्टल बनवाने का सुझाव दिया, जिसपर सड़कों के निर्माण से पूर्व व पश्चात के फोटो और वीडियो को अपलोड कराया जाए। उन्होंने कहा कि बेहतर कनेक्टिविटी प्रगति का माध्यम होती हैं। गांव हो या शहर, अच्छी सड़कें आम जनमानस का अधिकार है। सड़क सिंगल लेन हो अथवा दो, चार या छह लेन की, उसकी गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिए। समय.समय पर सड़कों की गुणवत्ता की जांच भी की जाए। बैठक में बताया गया कि लोक निर्माण विभाग, राष्ट्रीय मार्ग, पंचायती राज, सिंचाई विभाग, ग्राम्य विकास, नगर विकास, आवास एवं शहरी नियोजन, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास विभाग की समस्त श्रेणियों की 51060 किमी सड़कों को गड्ढ़ामुक्ति तथा 33720 किमी सड़कों को नवीनीकरण एवं रेस्टोरेशन के लिये चिन्हित किया गया है। लोक निर्माण विभाग द्वारा 20916 किमी सड़कों को गड्ढामुक्ति तथा 17978 किमी सड़कों के नवीनीकरण व रेस्टोरेशन का कार्य किया जा चुका है। इसी प्रकार राष्ट्रीय मार्ग की 604 किमी सड़कों को गढ़ामुक्त तथा 164 किमी सड़कों का नवीनीकरण तथा रेस्टोरेशन का कार्य कराया जा चुका है। इसी तरह से अन्य सम्बन्धित विभागों की 3090 सड़कों को गड्ढामुक्त तथा 19448 किमी सड़कों का नवीनीकरण व रेस्टोरेशन का कार्य पूरा हो चुका है। बैठक में प्रमुख सचिव अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास अनिल सागर, प्रमुख सचिव लोक निर्माण अजय चौहान समेत अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण आदि उपस्थित थे।

भाजपा व सपा के एक-एक पूर्व विधायक कांग्रेस में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा में आस्था व्यक्त करते हुए एवं कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी तथा महासचिव प्रभारी उत्तर प्रदेश प्रियंका गांधी के नेतृत्व संघर्ष से प्रेरित होकर भाजपा और सपा के एक-एक पूर्व विधायकों ने बुधवार को कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर आयोजित समारोह में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने भाजपा छोड़कर आए पूर्व विधायक पशुपतिनाथ राय और सपा से आए पूर्व विधायक गयादीन अनुरागी के गले में कांग्रेस तिरंगा पट्टिका पहनाकर और पार्टी का सदस्यता कार्ड देकर विधिवत रूप से पार्टी में शामिल कराया। दोनों पूर्व विधायकों के भारी संख्या में आए समर्थकों ने भी कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। पूर्व विधायक पशुपतिनाथ राय जनपद गाजीपुर के दिलदार नगर सीट से एवं गयादीन अनुरागी हमीरपुर से विधायक रहे हैं। आगन्तुकों का पार्टी में स्वागत करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि कांग्रेस की सोच और नीतियों से प्रभावित होकर लोग कांग्रेस से जुड़ रहे हैं। भाजपा की जनविरोधी नीतियों से त्रस्त प्रदेश की जनता कांग्रेस की तरफ आशा भरी निगांहों से देख रही है। समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर उनको आगे बढ़ाने की कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे एवं पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी जी की सोच में लोग भरोसा व्यक्त कर रहे हैं। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा, जो 4000 किलोमीटर कन्याकुमारी से कश्मीर तक, ने देश का मूड बदल दिया है, सभी जाति और धर्म के लोग भाजपा की समाज तोड़ो राज करो की नीति और नीयत से परिचित हो चुके हैं। अजय राय ने कहा कि बंटवारे की राजनीति करने वाले दलों को छोड़कर लोग कांग्रेस में विश्वास जता रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस लोगों को जोड़ने में विश्वास करती है। इसीलिए कांग्रेस का कारवां लगातार दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। प्रत्येक कार्यकर्ता प्रण ले चुका है कि संविधान समाप्त करने वाली भाजपा को 2024 में सत्ता से बाहर उखाड़ फेंकना है।

निवेश के लिए प्रस्तावों की नियमित समीक्षा करें डीएम, कमिश्नर: सीएस

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समस्त मंडलायुक्तों एवं जिलाधिकारियों के साथ साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। मुख्य सचिव ने ई-खसरा पड़ताल में 97.77 प्रतिशत प्लॉट्स के सर्वे का कार्य पूरा होने तथा 80 प्रतिशत से अधिक सर्वे सुपरवाइजर द्वारा सत्यापित होने पर अधिकारियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सुपरवाइजर द्वारा अस्वीकृत सर्वे का पुनः फील्ड भेजकर सर्वे करा लिया जाए। ई-खसरा पड़ताल की संपूर्ण कार्यवाही आगामी 20 अक्टूबर तक हर हाल में पूरी करा ली जाए। ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के लिए तैयार प्रस्तावों की समीक्षा के दौरान उन्होंने कहा कि जीबीसी दिवाली से पूर्व प्रस्तावित है, समय बहुत कम है, इसलिए इसे उच्च प्राथमिकता दी जाए। जिलाधिकारियों द्वारा सम्बन्धित विभागों द्वारा जनपद के लिए चिन्हित किए गए जीबीसी रेडी प्रस्तावों के वेरिफिकेशन की कार्यवाही जल्द से जल्द पूर्ण कराई जाए। सभी मंडलायुक्तों एवं जिलाधिकारियों द्वारा निवेश के लिए प्राप्त प्रस्तावों की नियमित रूप से समीक्षा की जाए और अधिक से अधिक उद्यमियों को फैसिलिटेट किया जाए। पीएम किसान योजना के संबंध में कहा कि योजना की 15वीं किश्त भारत सरकार द्वारा दिवाली से पूर्व लाभार्थियों के खाते में भेजा जाना प्रस्तावित है। जिन किसानों की लैंड सीडिंग, बैंक खाते के साथ आधार सीडिंग, ई केवाईसी का कार्य पूरा नहीं होगा, उन्हें किश्त प्राप्त नहीं होगी। इसलिए आगामी 31 अक्टूबर तक अभियान चलाकर सभी कार्यवाहियों को पूरा कराया जाए ताकि कोई भी पात्र लाभार्थी किश्त पाने से वंचित न रहे। अभियान का सभी डीएम व सीडीओ द्वारा नियमित रिव्यू किया जाए। पराली न जलाने के लिए किसानों को जागरूक करने के आईईसी एक्टिविटी जारी रखी जाए।

राजस्व वादों के निस्तारण के लिए चलाए जा रहे अभियान की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि अभियान के दौरान एक साल या उससे ऊपर के शत-प्रतिशत पेंडिंग केसेज को निस्तारित किया जाए, साथ ही नवीन दर्ज वादों का नियत समयावधि में निस्तारित कराया जाए। जिन जनपदों की वादों के निस्तारण में स्थित अच्छी नहीं हैं, वहां प्रगति लाई जाए। राजस्व वादों के निस्तारण में तेजी लाने के लिये इनोवेटिव सोल्यूशन निकाला जाए और जनपद में उपलब्ध कर्मियों का बेहतर उपयोग किया जाए। उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन में उत्तर प्रदेश ने बहुत तेजी से प्रगति की और सर्वाधिक कनेक्शन प्रदेश में हुए हैं। अब प्रमाणीकरण, सत्यापन, परियोजनाओं के हैण्डओवर, जल की गुणवत्ताए यूजर चार्ज संग्रहण पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। पंचायती राज विभाग द्वारा आगामी 25 अक्टूबर तक नल जल मित्र का चयन कर सूची तकनीकी शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट विभाग को उपलब्ध करा दी जाए। नल जल मित्र के चयन में महिलाओं को प्राथमिकता दी जाए। बैठक में अपर मुख्य सचिव राजस्व सुधीर गर्ग, प्रमुख सचिव नियोजन आलोक कुमार, आयुक्त एवं सचिव राजस्व परिषद मनीषा त्रिघाटिया, प्रबंध निदेशक उप्र जल निगम (ग्रामीण) बलकार सिंह, सीईओ इनवेस्ट यूपी अभिषेक प्रकाश, सचिव कृषि राज शेखर, एसीईओ इनवेस्ट यूपी प्रथमेश कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

यूपी में पूरी अराजकता और जंगलराज है: अखिलेश

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार में अपराध के क्षेत्र में हर दिन रिकार्ड पर रिकार्ड बनते जा रहे हैं। दिन दहाड़े हत्याएं हो रही है। महिलाओं, बच्चियों से दुष्कर्म की घटनाएं रोज ही घट रही हैं। मुख्यमंत्री अपने बयानों में बड़े-बड़े दावा करते रहते है। अपराधों के खात्मे के बयान भी खूब देते हैं। पर उनकी कोई अधिकारी सुनता हो ऐसा नहीं लगता है। चारों ओर हाहाकार है, लोग परेशान हैं। प्रदेश में पूरी अराजकता और जंगलराज है।

अखिलेश ने कहा कि चंदौली में बेखौफ बदमाशों ने घर के बाहर खड़े युवक पर जान लेवा हमला कर दिया। उसकी अस्पताल में मौत हो गयी। कन्नौज में गनप्वाइंट पर सर्राफा व्यापारी से 20 लाख रूपए लूट लिये गए। सत्ता संरक्षित अपराधी बेखौफहै। अखिलेश ने कहा कि व्यापारियों की सुरक्षा को भाजपा सरकार ने ताक पर रख दिया है। महाराजगंज में कार मालिक को बंधक बनाकर बदमाशो ने जेवरए रुपये लूट लिये। फरेंदा क्षेत्र के कम्हरियां गांव के पास निर्माणाधीन पुल पर कार मालिक को लूट लिया गया। तिर्वा में पेट्रोल पम्प पर बाइक सवार युवक सेल्समैन को पीटकर 60 हजार रू0 लूट कर फरार हो गए। अखिलेश ने कहा कि राजधानी लखनऊ में कोई दिन ऐसा नहीं जाता है जब बंद घरों में ताला तोड़कर चोरी और हत्याओं की खबर न आती हो। महिलाओं और बच्चियों से दुष्कर्म के मामले तो लगातार बढ़ते ही जा रहे हैं। शासन प्रशासन अपराध रोकने में पूरी तरह विफल साबित हो गया है। जनता भाजपा सरकार में बेहाल है। वह भाजपा सरकार से पूरी तरह ऊब चुकी है। जनता की सुरक्षा भगवान भरोसे है। लोग दहशत में जी रहे हैं। उनकी सुरक्षा करने वाला कोई नहीं है।

गृह मंत्रालय दक्ष पुलिस कर्मियों का चयन कर उन्हें बनाए साइबर कमांडो

लखनऊ। विशेष सचिव आन्तरिक सुरक्षा, भारत सरकार एस. सुन्दरी नन्दा व प्रदेश के डीजीपी विजय कुमार की संयुक्त अध्यक्षता में पुलिस मुख्यालय, गोमतीनगर विस्तार में पांचवी ज्वाइन्ट साइबर क्राइम कोआर्डिनेशन टीम (मेवात क्षेत्र) के संबंध में गोष्ठी की गई। गृह मंत्रालय भारत सरकार, दूरसंचार विभाग भारत सरकार, राजस्थान पुलिस, दिल्ली पुलिस, हरियाणा पुलिस, सीबीआई, एनसीआरबी तथा भारतीय रिजर्व बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा हिस्सा लिया गया। मेवात क्षेत्र (उप्र, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली के सीमावर्ती क्षेत्र) में घटित होने वाले साइबर अपराध तथा वर्तमान में प्रचलित अन्य साइबर अपराधों पर गहन चर्चा की गई तथा साइबर अपराधों में प्रयुक्त होने वाले बैंक खातों, फर्जी सिम कार्ड्स को बन्द कराने पर विचार विमर्श किया गया। सीबीआई के अधिकारियों द्वारा इंटरपोल की मदद से डेटा प्राप्त करने के बारे में जानकारी दी गई। साइबर अपराध की जागरूकता के उद्देश्य से स्कूली छात्रों का चयन कर उन्हे साइबर वालेंटियर के रूप में प्रशिक्षित करने तथा तकनीकि रूप से दक्ष पुलिस कर्मियों का चयन कर साइबर कमांडो बनाने के संबंध में चर्चा की गई।

उमेश पाल हत्याकांड में शहीद हुए दोनों गनर के परिजन सीएम के हाथों होंगे सम्मानित

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 21 अक्टूबर को पुलिस स्मृति दिवस के मौके पर पहली सितंबर 2022 से 31 अगस्त 2023 तक की अवधि में कर्तव्यपथ पर वीरगति को प्राप्त हुए यूपी पुलिस के वीर जवानों के परिजनों को सम्मानित करेंगे। बसपा विधायक राजू पाल हत्याकांड के मुख्य गवाह उमेश पाल की प्रयागराज में हुई हत्या के दौरान शहीद हुए उनके दोनों गनर संदीप निषाद और राघवेंद्र सिंह के परिजनों को भी यह सम्मान प्राप्त होगा। डीजीपी मुख्यालय के अनुसार प्रयागराज जिले के दोनों आरक्षी संदीप निषाद, और राघवेन्द्र सिंह को 26 अगस्त 2021 को उमेश पाल की सुरक्षा ड्यूटी में रवाना किया गया था। 24 फरवरी 2023 को शाम पांच बजे उमेश निवासी सुलेम सराय बाजार, थाना धूमनगंज, प्रयागराज व उनके सुरक्षार्थ लगे गनर संदीप निषाद य राघवेन्द्र सिंह अपने घर की ओर जा रहे थे। जैसे ही घर के सामने गाड़ी रोककर गाड़ी से उतरे उसी समय 8-10 अज्ञात लोगों द्वारा फायरिंग व बमबाजी शुरू कर दी। इस हमले में उमेश पाल व उनकी सुरक्षा में लगे गनर संदीप निषाद की उसी दिन मृत्यु हो गई थी, राघवेन्द्र सिंह को चिकित्सकों द्वारा बेहतर इलाज के लिए 26 फरवरी को एसजीपीजीआई, लखनऊ के लिए रेफर किया गया। जहां उपचार के दौरान 1 मार्च 2023 को उनकी भी मृत्यु हो गई। आरक्षी संदीप निषाद एवं आरक्षी राघवेन्द्र सिंह द्वारा कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी गई।

संदीप निषाद, भेदजीत सिंह

बदमाशों का पीछा करते हुए शहीद हुए थे आरक्षी भेदजीत सिंह

डीजीपी मुख्यालय के अनुसार जालौन जिले में तैनात आरक्षी भेदजीत सिंह कोतवाली नगर उरई की चौकी हाईवे पर नियुक्त थे। 10 मई 2023 को दो अज्ञात व्यक्ति एक मोटर साइकिल पर सवार होकर गलत दिशा से झांसी की ओर जा रहे थे। जिनकों संदिग्ध समझ कर आरक्षी भेदजीत सिंह ने रुकने का इशारा किया। उनके न रुकने पर उन्होंने अपनी मोटरसाइकिल से उन संदिग्ध व्यक्तियों का पीछा किया। बदमाशों ने अपने को फंसता देख आरक्षी भेदजीत सिंह को घेर कर नुकीले धारदार व कुन्द हथियार से उनके सिर व शरीर के अन्य कई जगह प्रहार कर गम्भीर रूप से घायल कर दिया। जिससे उनकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। आरक्षी भेदजीत सिंह द्वारा कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने प्राणों की दी गई आहुति के परिणामस्वरूप मुख्यमंत्री उनके परिजनों को सम्मानित करेंगे।

समाज के प्रति दिए गए एनडी तिवारी के योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी की जयंती एवं पुण्यतिथि के मौके पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर अजय राय ने कहा कि उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य के विकास के लिए पंडित नारायण दत्त तिवारी ने जो ऐतिहासिक कार्य किए हैं व समाज के प्रति उनके द्वारा दिए गए उल्लेखनीय योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। सच्चे मायनों में स्व. तिवारी एक विकास पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में प्रदेश उपाध्यक्ष विश्वविजय सिंह, कोषाध्यक्ष शिव पाण्डेय, संगठन सचिव अनिल यादव, पूर्व विधायक श्याम किशोर शुक्ला, गयादीन अनुरागी, पशुपतिनाथ राय, प्रदेश प्रवक्ता पूर्व राज्य मंत्री डॉ. सीपी राय, डॉ. रिचा शर्मा सहित भारी संख्या में कांग्रेसजन शामिल रहे।

राजधानी बसों का किराया 10 प्रतिशत होगा कम

● उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग को भेजा जायेगा समूह क एवं ख की भर्तियों का प्रस्ताव

लखनऊ। परिवहन निगम के अध्यक्ष एवं प्रमुख सचिव वेंकटेश्वर लू की अध्यक्षता में बुधवार को परिवहन निगम के सभागार कक्ष में निदेशक मण्डल की 246वीं बैठक सम्पन्न हुई। बैठक के दौरान पूर्व से संचालित 168 राजधानी बसों का किराया 10 प्रतिशत कम करने, यातायात अधीक्षक एवं यातायात निरीक्षक को 2 सेट वर्दी की धनराशि भी उपलब्ध कराने, निगम में नॉन टिकटिंग राजस्व में वृद्धि, निगम की अप्रयोज्य भूमि संसाधनों के मॉनीटाइजेशन राजस्व प्राप्ति की सम्भावनाओं, ट्रांसपोर्ट प्लानिंग एवं आधुनिक इलेक्ट्रिक बसों हेतु नीति निर्धारण एवं अन्य अनुशांगिक कार्यवाहियों हेतु परामर्शी आबद्ध किये जाने का प्रस्ताव पास किया गया।

चेयरमैन परिवहन निगम ने बताया कि उत्तर प्रदेश परिवहन निगम में समूह क एवं ख श्रेणी के रिक्त पदों की भर्ती हेतु उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रयागराज से कराये जाने हेतु प्रस्ताव शीघ्र भेजा जायेगा। इसके अलावा परिवहन निगम में कार्यरत संविदा एवं आउटसोर्स कर्मचारियों को नियमित कर्मचारियों की भांति पारिवारिक यात्रा पास की सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी। दुर्घटनारहित संचालन करने वाले संविदा चालक, परिचालक के लिए सुरक्षित चालन प्रोत्साहन योजना के तहत प्रतिमाह दुर्घटना शून्य भत्ता सम्मिलित होगा। दुर्घटना घटित होने के उपरान्त चालकध् परिचालक को उत्तमध्उत्कृष्ट प्रोत्साहन योजना से हटा दिया जायेगा । चेयरमैन वेंकटेश्वर लू ने बताया कि 100 नई स्टैंडर्ड वातानुकूलित इलेक्ट्रिक बसों को क्रय कर बस बेड़े में सम्मिलित किया जायेगा तथा 250 नग स्टैंडर्ड वातानुकूलित इलेक्ट्रिक बसों को जीसीसी मॉडल पर अनुबन्ध पर लिया जायेगा। प्रत्येक क्षेत्र के अधिक ऑफरोड वाले एक.एक डिपो में बसों का रख.रखाव आउटसोर्स एजेन्सी के माध्यम से की जायेगी। नवीन अनुबन्धित योजना के अंतर्गत निजी संचालक द्वारा परिचालक भी उपलब्ध कराया जायेगा। बैठक में प्रबंध निदेशक मासूम अली सरवर, अपर प्रबंध निदेशक अन्नपूर्णा गर्ग, विशेष सचिव केपी सिंह, निदेशक आईआईएम देवाशीष दास गुप्ता सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

किसानों को पराली न जलाने की दिलाई शपथ

कृषकों के हितों को संरक्षित करने के लिए संकल्पित होकर काम कर रहा प्रशासनः डीएम

लखीमपुर खीरी। किसानों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के उद्देश्य से बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम महेंद्र बहादुर सिंह की अध्यक्षता में किसान दिवस का आयोजित हुआ। इस दौरान किसानों ने अधिकारियों के सामने समस्याएं रखीं। डीएम ने अफसरों को किसानों की समस्याओं का समय से व गुणवत्तापरक निस्तारण कराने का निर्देश देते हुए मौजूद किसानों को पराली ना जलाए जाने का संकल्प दिलाया। डीएम ने कहा कि किसानों की समस्याओं का निदान शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। किसानों के हितों को संरक्षित करने के लिए शासन.प्रशासन करते संकल्पित होकर काम कर रहा है। इसके लिए केंद्र एवं प्रदेश सरकार किसानपरक योजनाओं के जरिए उन्हें समृद्ध बनाने के लिए नित नए कदम उठा रही है।

डीएम ने कहा कि शासन पराली जलाने की घटनाओं को लेकर काफी गंभीर है। कई किसान भाई जानकारी के अभाव में फसल अवशेष जैसे धान की परालीए गन्ने की पत्ती आदि जला दे रहे हैए इससे फसल अवशेषों को जलाने से वातावरण पर दुष्प्रभाव पड़ने के साथ अन्य कई प्रकार की हानियां हो रही है। यदि कोई भी कम्बाइन हार्वेस्टर सुपर स्ट्रा मैनेजमेन्ट सिस्टम अथवा स्ट्रा रीपर अथवा स्ट्रा रेक एवं बेलर या अन्य फसल अवशेष प्रबन्धन यन्त्रों के बगैर चलते हुयी पायी जाये तो उसको तत्काल सीज करते हुये कम्बाइन मालिक के स्वयं के खर्च पर सुपर स्ट्रा. मैनेजमेन्ट सिस्टम लगवाकर ही छोड़ा जाये।

डीएम ने मौजूद किसानों की न केवल समस्याएं सुनी बल्कि निराकरण के संबंध में मौजूद अफसरों को निर्देश दिए। अधिकारी अपने स्तर से किसानों की जिन समस्याओं का समाधान न कर सकेए उसके बारे में अवगत कराएं ताकि उनका समाधान उचित फोरम पर कराया जा सके। किसान दिवस किसानों की समस्याओं के निस्तारण के लिए एक बेहतर मंच प्रदान करता है। इस दिवस पर किसान अपनी समस्याओं को न केवल निस्तारण करा सकते हैं बल्कि विशेषज्ञों से अपनी सभी जिज्ञासाओं को भी शांत कर सकते हैं।

डीएम ने पत्नी संग परिषदीय विद्यालय जाकर कराया कन्याभोज

लखीमपुर खीरी। बुधवार को डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने सपत्नीक अपने गोद लिए परिषदीय विद्यालय नगर क्षेत्र में विद्यालय की छात्राओं को श्रद्धापूर्वक कन्या भोज कराया। इस दौरान एसपी गणेश प्रसाद साहा ने भी अपनी धर्मपत्नी डॉ कोमल संग भोजन परोसा। कन्याभोज का शुभारंभ डीएम की पत्नी और आकांक्षा चीफअल्पना सिंह ने एसपी की पत्नी डॉ कोमल साहा ने अन्य अपनी महिला साथियों के साथ कन्याओं का विधिवत पूजन किया और शक्ति की प्रतीक कन्याओं को अपने हाथ से भोजन परोसा। डीएम व उनकी धर्मपत्नी आकांक्षा चीफअल्पना सिंह ने विद्यालय की कन्याओं का पूजन करते हुए उन्हें स्वादिष्ट भोजनए फलए मिष्ठान आदि परोसा। उपहार देकर कन्याओं से आशीर्वाद भी लिया। कन्याभोज के दौरान अल्पना सिंह और डॉ कोमल एक.एक करके सभी कन्याओं के पास गई और उनकी थाली में अपने हाथों से भोजन परोसा और बाकायदा पूछ.पूछ कर खिलाया। भोजन के बाद डीएमए आकांक्षा चीफने सभी कन्याओं को अपने हाथ से उपहार और दक्षिणा देकर आशीर्वाद प्राप्त किया। उनका दुलारए प्यार देख बच्चे खुश नजर आए। डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने कहा कि शक्ति उपासना के इस पर्व पर कन्याओं का सम्मान सबसे बड़ी आराधना है। आज की कन्याएं शक्तिपुंज बनकर देशए प्रदेश एवं जिले का नाम रोशन कर रहीं है और विकास में अपना महान योगदान दे रही है। यह गर्व और गौरव की बात है। आकांक्षा अध्यक्ष अल्पना सिंह ने कहा कि ष् नवरात्रि मातृ शक्ति के सम्मान से जुड़ा महत्वपूर्ण पर्व है। इसलिए वर्ष में दो बार और मातृ शक्ति के प्रति सर्वोच्च सम्मान व्यक्त करने के लिए लोग इन आयोजनों से जुड़ते हैं। एसपी की पत्नी डॉ कोमल ने माँ आदिशक्ति की उपासना के महापर्व शारदीय नवरात्र पर मैया की कृपा से हर घर.आँगन में सुखए समृद्धिए खुशहाली आये और प्रेमए सौहार्द के मधुर प्रकाश से हर जीवन आलोकित होता रहें।

नवरात्रि के चतुर्थ दिवस पर मंदिरों में श्रद्धालुओं का रेला

गुरसहायगंज (कन्नौज)। नवरात्रि के चतुर्थ दिवस पर श्रद्धालुओं ने मंदिरों में पहुंचकर विधि विधान से मां की पूजा अर्चना कर आरती वंदना की। सुबह से ही मंदिरों में भक्तों की कतारे लगना शुरू हो गई। देर शाम तक लोगों ने मंदिरों में पहुंचकर मां की आरती वंदना कर आराधना की। बुधवार को नवरात्रि के पावन पर्व के चतुर्थ दिवस पर सुबह से ही श्रद्धालुओं की मंदिरों में कतारें लगना शुरू हो गई। श्रद्धालुओं ने मंदिरों में पहुंचकर देवी कुष्मांडा के दर्शन कर पूजा अर्चना व पुष्प अर्पित कर मनोकामना पूर्ण होने की प्रार्थना की। नगर के प्रमुख मंदिर सती माता मंदिर, प्राचीन काली मंदिर, संतोषी माता मंदिर, श्री राम मंदिर, श्री गंगेश्वर नाथ मंदिर, श्री मनकामेश्वर मंदिर, पशुपतिनाथ मंदिर, रेलवे स्टेशन परिसर स्थित शिव मंदिर, तिर्वा रोड, रामगंज स्थित आदि मंदिरों में महिला व पुरुष भक्तों ने आरती वंदना कर विधि विधान से पूजा अर्चना की। जबकि पावर हाउस स्थित श्री गंगेश्वरनाथ मंदिर में भव्य दुर्गा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भव्य आरती व हवन पूजन भक्तों द्वारा प्रतिदिन किया जा रहा है। इस दौरान पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि इन्द्र कुमार गुप्ता, नीरज मिश्रा, मनोज अग्रवाल, हरिओम गुप्ता, विकास गुप्ता, सुगम दुवे, सुमित सक्सेना, रविन्दर, उमाकान्त सैनी, बृजेश गुप्त धर्मेन्द्र गुप्ता बडे, परमजीत आदि मौजूद रहे।

दो पहिया वाहन चलाते समय हेल्मेट लगाना जरूरी

कन्नौज। पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद के निर्देशानुसार एवं क्षेत्राधिकारी यातायात अशोक कुमार सिंह के नेतृत्व में यातायात प्रभारी द्वारा मुस्लिम मोहम्मदिया इंटर कॉलेज शेखाना रोड कन्नौज में प्रधानाचार्य अबुल कलाम के सहयोग से यातायात जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें यातायात प्रभारी द्वारा छात्र एवं छात्राओं को यातायात नियमों के बारे में बेसिक जानकारी दी गई। हेलमेट के बारे में एवं सीट बेल्ट के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि साइकिल चलाते हुये दाहिने बाएं मुड़ते समय दाहिने, बाएं देखने के बाद ही हाथ देकर मुड़ना चाहिए। बताया गया कि दो पहिया वाहन में दो ही लोगों के बैठने के लिए कंपनी द्वारा सीट और फुट रेस्ट दिए गए हैं जब भी तीसरा व्यक्ति बैठता है तो वह सिंगल राइडर को बाधा पहुंचाता है। जिससे दुर्घटना हो जाती है, इसलिए दो पहिया वाहन पर दो व्यक्तियों को ही बैठना चाहिए। वहीं यातायात प्रभारी द्वारा एसबीएस इंटर कॉलेज के विनोद कुशवाहा एनसीसी अध्यापक की सहायता से छात्रों को यातायात संचालन की ड्रिल सिखाई गई। इस संबंध में यातायात प्रभारी से पूछा गया तो बताया कि जब कभी वीवीआईपी का आगमन होता है या बहुत भीड़ होने की संभावना रहती है वहां पर एनसीसी कैडेट्स को यातायात व्यवस्था में मदद के लिए लगाया जा सकता है।

दवंगों के आतंक से परेशान होकर पलायन को मजबूर संग्रामपुर का परिवार

बरेली।सिरौली थाना क्षेत्र के गांव देवसारा उर्फ संग्रामपुर में दवंगों के आतंक से परेशान होकर एक परिवार गांव से पलायन करने को मजबूर है। उस परिवार ने दवंगों से परेशान होकर अपने मकान, दुकान व खेतों पर विकाऊ का वोर्ड लगा दिया है।देवसारा उर्फसंग्रामपुर के गौरव सक्सेना ने सिरौली पुलिस से शिकायत कर बताया कि बह अपने खेत से घर आ रहे थे तभी बस स्टैंड पर गांव के ही सुरेश पुत्र पूरनलाल ने मुझसे गाली गलौच व मारपीट की थी।बह वहां से किसी तरह बचकर भाग आए थे। 08 अक्टूबर को सुबह करीब 5 बजे इसी बात को लेकर उक्त सुरेश अपने भाई पप्पू उर्फउमेश पुत्रगण पूरनलाल व भतीजे राहुल व विशाल पुत्रगण पप्पू उर्फउमेश को साथ लेकर लाठी डन्डे लेकर मेरे घर में जवरन घुस आये और गालीगलौज करने लगे।विरोध करने पर उक्त लोगों ने मारपीट की।गौरव सक्सेना ने उक्त मामले में सिरौली पुलिस को लिखित प्रार्थना पत्र दिया।सिरौली पुलिस ने मारपीट के मामले में सुरेश,उमेश,राहुल व विशाल के खिलाफमुकदमा दर्ज कर लिया है।सिरौली इंस्पेक्टर राजेश कुमार ने बताया कि उक्त प्रकरण में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।अग्रिम कार्यवाही की जा रही है।

महिलाओं को शिक्षा, सुरक्षा और कानून की जानकारी देने पर जोर

लखीमपुर खीरी। बेटी बचाओ.बेटी पढ़ाओ योजना के अंतर्गत अभिमुखीकरण कार्यक्रम में महिलापरक कानूनों की जानकारी देने के साथ महिला शिक्षा और सुरक्षा पर विशेष फोकस रहा। बुधवार को ब्लॉक कुंभी ;गोलाद्ध सभागार में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ भाजपा नेता धर्मेंद्र गिरीए खंड विकास अधिकारी हनुमंत प्रसाद मिश्रा ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर किया। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। भाजपा नेता धर्मेंद्र गिरी ने कहा कि देश की लगभग आधी आबादी महिलाओं के सशक्तीकरण और सुरक्षा को लेकर सरकार द्वारा बड़े कदम उठाये जा रहे हैं। सरकार ने महिलाओं और बालिकाओं के लिए अनेक कल्याणकारी योजना संचालित की हैए जिनका उन्हें भरपूर लाभ मिल रहा है। बीडीओ हनुमंत प्रसाद मिश्र ने कहा कि इस योजना का उद्देश्य केवल महिलाओं को पढ़ाना ही नहीं बल्कि लिंगानुपात को समान करना है। यह तभी हो सकता है जब मानसिक परिवर्तन के साथ.साथ सामाजिक सहभागिता का सहयोग उपलब्ध हो। महिला सशक्तिकरण एवं समाज मे व्यापक बदलाव हेतु हमें शुरूआत स्वयं से करनी होगी और अपने आस.पास की बालिकाओं एवं महिलाओं हेतु एक नजीर पेश करनी होगीए जिससे वे अपने क्षेत्र एवं समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने सके। प्रभारी निरीक्षक ;महिला थानाद्ध शकुंतला उपाध्याय ने बेटी बचाने और पढ़ाने का संकल्प दिलाया। सीडीपीओ माया देवी ने महिलापरक योजनाओं का न केवल एक.एक कर जिक्र किया बल्कि उनसे जुड़कर महिलाएं.बालिकाएं कैसे अपने जीवन को संवार सकती इसकी जानकारी दी। संरक्षण अधिकारी अनुज चतुर्वेदीए महिला कल्याण अधिकारी आर्य मित्रा बिस्टए जिला समन्वयक निक्की गुप्ता ने मिलकर समाज में विद्यमान घरेलू हिंसा को समाप्त करने तथा महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार के बारे में अवगत कराया गया।

पिता की स्मृति में आम का पौधा रोपित किया

नगर निगम की ''उपहार उपवन योजना''

शाहजहांपुर। नगर निगम की न्यू सिटी ककरा में संचालित जैव-विविधता पार्क में ''उपहार उपवन योजना'' मे आनन्दपुरम कॉलोनी के गौरव अग्रवाल द्वारा न्यू सिटी ककरा स्थित शहीद पार्क (जैव-विविधता पार्क) में संचालित उपहार उपवन योजना में 5,100 की धनराशि देकर अपनी पत्नी ज्योति के साथ अपने पिता गोपाल कृष्ण अग्रवाल की स्मृति में आम का पौधा रोपित किया । इस अवसर पर नगर निगम की इस अनोखी पहल की प्रशंसा की । इस योजना के अन्तर्गत अपने जन्मदिन, अपने विवाह की वर्षगांठ तथा अपनों की याद में एक पौधों लगाये जाने की अपील की गई। इसके अतिरिक्त नगर आयुक्त सन्तोष कुमार शर्मा ने जन-सामान्य से अपील की वे अपने नगर को स्वच्छ वातावरण दिये जाने हेतु हरे-भरे पौधों को अपने बच्चों के जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ, अपने प्रियजनों एवं अपनों की यादों को सहजने हेतु नगर निगम द्वारा संचालित इस योजना के अन्तर्गत अपने निकटतम स्थित पार्क में पौधों को रोपित किये जाने का आह्वान किया उनके द्वारा यह भी बताया गया कि इस योजना के अन्तर्गत प्राप्त धनराशि का उपयोग नगर शाहजहाँपुर में स्थित पार्को के उचित रख-रखाव तथा सुरक्षा के लिये किया जायेगा। बताया गया कि इस योजना के अन्तर्गत लगाये जाने वाले पौधों की देखरेख व पूर्ण सुरक्षा नगर निगम टीम द्वारा की जायेगी। इससे एक ओर नगर स्वच्छ वातावरण व हरियाली की ओर विकसित होगा, तो वही दूसरी ओर आने वाली पीढियों के लिये रोपित किया गया पौधा एक यादगार पल भी साबित होगा। इस अवसर पर नगर निगम से लिपिक अनुज गुप्ता, उद्यान लिपिक अमर दीप एवं अन्य कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

डायट से राजापुर तक बनी क्रिटिकल गैप से सीसी रोड केंद्रीय मंत्री ने किया लोकार्पण

लखीमपुर खीरी। क्रिटिकल गैप योजना 2023.24 के तहत स्वीकृत आसाम रोड से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान ;डाइटद्ध तक नवनिर्मित सीसी रोड का बुधवार को केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र श्टेनीश् ने विधायकए सदर योगेश वर्माए डीएम महेन्द्र बहादुर सिंहए डीसीबी चेयरमैन विनीत मनार संग फीता काटकर एवं शिलापट का अनावरण कर लोकार्पण किया।इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने विधायकए डीएम संग पूरी रोड का पैदल भ्रमण कर मौजूद ग्रामीणों से संवाद किया। वहां के वाशिंदोए प्रशिक्षणर्थियों एवं नौनिहालो ने इस रोड के बनने पर केंद्रीय मंत्री के समक्ष खुशी जाहिर की। बताते चले कि मुख्य मार्ग से डायटए प्राथमिक विद्यालयए अभ्युदय कक्षाओं को जाने वाले मार्ग जीणशीघ्र होने से काफी सुविधाओं का सामना करना पड़ रहा थाए जिसका डीएम ने स्वतः संज्ञान लेकर फौरन इस मार्ग को बनाने के लिए निर्देशित किया। डीएम ने इस 100 मीटर मार्ग पर छह मीटर चौड़ाई की सीसी सड़क नाली सहित न केवल बनाने की स्वीकृति दी बल्कि सीडीओ के नेतृत्व में निर्माण कार्ड की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को स्थलीय निरीक्षण के लिए भेजा। इस अवसर पर डीएसटीओ अरविंद वर्माए एडीएसटीओ सूर्य प्रकाशए आरईडी के ईई हेमन्त सक्सेनाए प्राचार्य डाइट बृजभूषण सिंहए सेवायोजन अधिकारी रोहित कुमारए बीएसए प्रवीण तिवारीए सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी ;सर्व शिक्षा अभियानद्ध जीएस पांडेयएजेई प्रदीप वर्माए सहित जनप्रतिनिधिए अधिकारी मौजूद रहे।

डीजे पर डांस को लेकर विवाद में हुई फायरिंग

बरेली। विवाह समारोह में डीजे पर डांस करने को लेकर विवाद हो गया उस समय तो हमलावर धमकाते हुए चले गए लेकिन अगले ही दिन मौका पाकर युवक के साथ मारपीट कर फायरिंग की घटना सीसीटीवी में कैद हो गई कुछ लोगों ने मोबाइल से वीडियो भी बनाई पुलिस ने चार नामजद समेत आठ अज्ञात लोगो के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी ।बारादरी के एजाजनगर गौटिया निवासी साजिद हुसैन ने बताया कि वह 15 अक्टूबर को पड़ोसी फैजान में शामिल होने के लिए ताज पैलेस बारात घर गया था जहां डांस करने को लेकर मोहल्ले के अरबाज, रिजवान, अरशु और अयान से झगड़ा हो गया चारों ने देख लेने की धमकी दी अगले दिन वह पीलीभीत बाईपास रोड स्थित एक होटल से बलीमें की दावत मे खाना खाकर निकला तो चारों आरोपियों ने अपने आठ अज्ञात साथियों के साथ घेर लिया ।गाली गलौज कर जान से मारने की नियत से रिजवान ने तमंचे से फायर कर दिया साजिद हुसैन बाल-बाल बचा हमलावरों ने उसके साथ मारपीट की अय्यूव और यूनुस ने साजिद को हमलावरों से बचाया पूरी घटना की रिकार्डिंग सीसीटीवी कैमरे में हो गई,जबकि कुछ लोगों ने घटना की वीडियो अपने मोबाईल से बनाई पुलिस सभी हमलावरों के खिलाफ जानलेवा हमला, मारपीट, जान से मारने की धमकी समेत कई धाराओं में दर्ज कल कार्रवाई शुरू कर दी।

बाइक की टक्कर से किसान घायल:बरेली । खेत में घुस रहे गोवंशीय पशुओं को भगाते समय एक मोटरसाइकिल सवार युवक पशुओं से टकराकर जमीन पर गिर पड़ा युवक ने किसान पर उसी की लाठी से हमला कर दिया जिससे किसान घायल हो गया उसे इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया घटना की शिकायत पुलिस से कर दी गई है।कैंट थाना क्षेत्र के गांव उमरिया निवासी राम बहादुर पुत्र राम प्रसाद को आज सुबह घायल अवस्था में जिला अस्पताल में भर्ती कराया जहां उसके घर वालों ने बताया कि राम बहादुर आज सुबह अपने खेत पर गए थे जहां पर वह खेत में घुस रहे गोवंशिय पशुओं को लाठी से भाग रहे थे इसी दौरान सड़क पर दौड़े पशुओं से सामने से आ रही एक मोटरसाइकिल टकरा गई।

दिव्यांग सशक्तीकरण अभियान के तहत शिविर का आयोजन किया गया

बाराबंकी। आर्यावर्त बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय बाराबंकी द्वारा दिव्यांग सशक्तिकरण अभियान शिविर का आयोजन किया गया।इसमे जिलाधिकारी सत्येन्द्र कुमार, आर्यावर्त बैंक के अध्यक्ष संतोष एस क्षेत्रीय प्रबन्धक संजीव कुमार आर्यावर्त बैंकउपस्थित रहे। आर्यावर्त बैंक की बाराबंकी जनपद के अंतर्गत जिले मे 94 शाखाएँ कार्यरत हैए जिनके द्वारा निरंतर सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो तक लगातार वित्तीय सेवाएँ प्रदान की जा रही है द्य इसी क्रम मे दिव्यांग सशक्तिकरण हेतु बैंक द्वारा वृहद अभियान आरंभ किया गया ह,ए जिसका उद्देश्य दिव्यांगजनो का आर्थिक सशक्तिकरण करते हुये समाज की मुख्य धारा मे जोड़ना है द्य इस योजना मे आच्छादित किये जाने वाले दिव्यांगजनो को न्यूनतम ब्याज दर पर बैंक द्वारा रोजगारपरक ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। जिलाधिकारी द्वारा '118 लाभार्थियो' को स्वीकृत पत्र वितरित किये गये जिसमे जिलाधिकारी महोदय द्वारा उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुये आर्यावर्त बैंक की इस पहल की सराहना की गयी उन्होने यह भी कहा कि बैंक द्वारा भविष्य मे ऐसे आयोजन किये जाते रहने चाहिए द्य जिससे समाज मे ऐसे लोगो का सशक्तिकरण कि समग्र प्रक्रिया से मदद किया जा सके।

शराबी ने घर में घुसकर महिलाओं से की छेड़छाड़

बरेली । नशे की हालत में एक शराबी ने घर में मौजूद महिलाओं के साथ घर में घुसकर छेड़छाड़ कर दी घटना की शिकायत पुलिस से करते हुए कार्रवाई की मांग की गई ।बिथरी चौनपुर थाना क्षेत्र के गांव में रहने वाले युवक ने थाने में शिकायत दर्ज कराते हुए बताया कि वह कल शाम को अपने काम से घर से बाहर गया था उस समय उसके घर में महिलाएं मौजूद थी लेकिन इसी दौरान गांव का रहने वाला संतोष पुत्र डोरी लाल शराब के नशे में उसके घर में घुस गया और वहां मौजूद उसकी भाभी,बहन और पत्नी के साथ छेड़छाड़ की शोर मचाने पर गांव के लोग मौके पर आ गए जिन्हें देखकर संतोष फरार हो गया जब वह घर वापस लौटा तो उसे घटना की जानकारी हुई।

श्री श्री 1008 महाराज अग्रसेन की जयंती पर निकली शोभायात्रा

बरेली। अग्रवाल सेवा समिति के तत्वाधान में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री श्री 1008 महाराज अग्रसेन जी की पावन जयंती के अवसर पर साहूकारा से भव्य शोभायात्रा निकाली इस शोभायात्रा के मुख्य अतिथि कैन्ट विधायक संजीव अग्रवाल ने महाराजा अग्रसेन का पूजन करने के बाद शोभायात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया ।कैन्ट विधायक संजीव अग्रवाल ने बताया भव्य शोभा यात्रा में बाहर से आई 10 झांकियां जिसमें केदारनाथ , राम मंदिर गणेश जी , हनुमान जी और 18 घोड़े पर झांकियां सजाई गई है । यह शोभायात्रा साहूकारा से शुरू होकर बड़ा बाजार , कुतुबखाना , साहू गोपीनाथ , श्यामगंज , साई मंदिर होते हुए आनंद आश्रम पर पहुचेगी। इस शोभायात्रा में रामकुमार अग्रवाल , राजकुमार अग्रवाल, प्रेम शंकर अग्रवाल , के पी गोयल , हरिओम अग्रवाल , अनिल अग्रवाल , अजय अग्रवाल , रिशुल अग्रवाल सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

हेल्पलाइन नम्बर डायल कर सहायता मांग सकती है महिला

बरेली । मिशन शक्ति,नारी सुरक्षा ,हेतु थाना सुभाष नगर की टीम ने आज एम पी पब्लिक स्कूल बरेली में केम्प लगाकर महिलाओं,स्कूल स्टाफ एवम छात्राओं को जानकारी दी कि महिलाए कैसे अपनी सुरक्षा हेतु किस किस नम्बर पर कॉल कर अपनी समस्याओं का हल करै महिला हेल्पलाइन नम्बर डायल कर सहायता मांग सकती है मिशन शक्ति के तहत आपके पास पुलिश तुरंत पहुचेगी इस अवसर पर स्कूल प्रधानाचार्या मंजू शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया स्कूल प्रवंधक सर्वेश पाठक, क्षेत्रीय सभासद चंद्रपाल आर्या,स्कूल टीचर रेनू सागर, खुशबूपाल नीतू , अनुराधा मिश्रा , जिउती कश्यप, शांति ,रीना पाण्डेय , रजनी सागर ,संगीता, सहित अनेक महिलाएं उपस्थित रही स्कूल संस्थापक मिथलेश पाठक ने महिलाओं के सम्बंध में बताए गए नियमो की जानकारी , महिला सुरक्षा,जानकारी के लिये आई हुए टीम का धन्यबाद प्रकट किया।

विश्वविद्यालय में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू

लखनऊ। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालयए बेंगलूरु में पोस्टग्रैज्युएशन डिप्लोमा इन एजुकेशन . एजुकेशनल असेसमेंट कोर्स में वर्ष 2024.25 के लिए दाख़िले की प्रक्रिया शुरु हो चुकी है। जिसके प्रवेश हेतु आवेदन की अंतिम तारीख़ 05 नवंबरए 2023ए साक्षात्कार नवंबर.दिसंबरए 2023 एवं कक्षाओं की शुरुआत 05 फरवरीए 2024 हैं । अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की कुलपति इंदु प्रसाद ने कहा कि ष्अच्छी मूल्यांकन पद्धतियाँ बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद करती हैं और शिक्षक बेहतर ढंग से पढ़ाते हैं। मूल्यांकन के तरीक़ों में लगातार सुधार करने के लिए शिक्षा से जुड़े प्रमुख लोगों . शिक्षकोंए शिक्षक प्रशिक्षकोंए शिक्षा प्रशासकोंए परीक्षा बोर्डों की क्षमता बढ़ाना महत्त्वपूर्ण है। यह एक वर्षीय पार्ट.टाइम डिप्लोमा का पाठ्यक्रम है।

युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

बरेली ।मायके गई पत्नी से विवाद के बाद गुस्साए पति ने घर वापस लौटने के बाद फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर मामले की जांच शुरू कर दी । कैंट थाना क्षेत्र के गांव झील गोटिया निवासी विष्णु श्रीवास्तव पुत्र राम नाथ ने बीती रात घर में ही छत के कुंड से दुपट्टा बांधकर फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली पोस्टमार्टम हाउस पर मौजूद मृतक के घर वालों ने बताया कि विष्णु सैटलाइट बस स्टैंड के पास लगने वाले एक खाने के ठेले पर काम करता था उसकी पत्नी खुशबू 2 दिन पहले चनहेटी गांव में स्थित अपने मायके गई थी विष्णु कल उसे बुलाने के लिए अपनी ससुराल गया था जहां उसकी पत्नी से किसी बात पर विवाद हो गया तब विष्णु घर वापस लौटाया और रात में उसने छत के कुंड से दुपट्टा बांधकर फांसी लगा ली।

सी, डी व ई, रैंक वाली योजनाओं से संबधित अधिकारियों को नोटिस जारी करने के निर्देश

शाहजहांपुर। जिलाधिकारी उमेश प्रातप सिंह की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में सीएम डैशबोर्ड की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। सीएम डैशबोर्ड पर विगत माह 63वीं रैंकिंग के प्राप्त होने के सापेक्ष माह सितम्बर में सीएम डैशबोर्ड पर जनपद की रैंकिंग 13वीं प्राप्त हुयी। बैठक के दौरान खराब प्रगति वाली योजनाओं के संबध में सबंधित अधिकारियों से जानकारी ली तथा समस्त अधिकारियों को सचेत करते हुए कहा कि अधिकारी सीएम डैशबोर्ड पर विभागीय प्रगति से संबंधित आंकड़ों को समय से फीड करना सुनिश्चित करें। इस दौरान उन्होने कहा कि जिन योजनाओं में जनपद की रैंकिंग खराब है उनमे अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। और जिन योजनाओं की प्रगति अच्छी है उन्हे अपनी स्थिति को बनाये रखने के लिये प्रयास करना है। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिन योजनाओं में आधार सीडिंग कराया जाता है, उनमें सभी अधिकारीगण शतप्रतिशत आधार सीडिंग कराना सुनिश्चित करें अन्यथा की स्थिति में संबधित के विरूद्ध कठोर कार्यवाही की जायेगी। जिलाधिकारी ने जिला पंचायत राज विभाग की खराब रैंकिंग पर 02 सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले प्रधान एवं सचिव के विरूद्ध कार्यवाही हेतु डीपीआरओ को निर्देश दिये। सामाजिक वानिकी विभाग द्वारा कराये गये कार्यो को भौतिक सत्यापन नायब तहसीलदार से कराये जाने हेतु निर्देशित किया।

केवट ने श्रीराम ,लक्ष्मण सीता , को पार कराई गंगा : अपने पुत्र के वियोग में राजा दशरथ ने त्यागे प्राण

शाहजहांपुर। ऑर्डनेंस ड्रामेटिक क्लब के कुशल तथा अनुभवी कलाकारों के द्वारा बुधवार के मंचन में दर्शाया गया प्रभु श्रीराम वन पहुंचते हैं उनको निषाद राज जी मिलते हैं जो कि भीलो के राजा होते हैं वे उनकी सेवा करते हैं वंदना करते हैं प्रभु श्री राम माता सीता और लक्ष्मण जी सरयू तट पर पहुंचते हैं जहां उन्हें केवट मिलते हैं केवट उनको गंगा पार कराते हैं उसके बाद प्रभु चित्रकूट में निवास करते हैं इधर सुमंत जी राम जी को छोड़कर अयोध्या वापस आते हैं दशरथ उनसे अपने पुत्र श्रीराम लक्ष्मण पुत्र वधू सीता को वापस लाने को कहते हैं पर सुमंत जी रोने लगते हैं दशरथ जी दिन-रात अपने पुत्र की प्रतीक्षा करते हैं और प्रतीक्षा करते करते अपने प्राण त्याग देते हैं सारी अयोध्या में सन्नाटा छा जाता है गुरु वशिष्ठ भरत और शत्रुघ्न को ननिहाल से बुलाते हैं आज के मंचन में राम रोहित ,लक्ष्मण देवेंद्र , भरत अंकित , रोहित शत्रुघ्न , सुमंत कौशलेंद्र पांडे, केवट अरुण डी आर , भारद्वाज एस एल सिंह , शुभम सक्सेना निषाद राज , रानी मिश्रा सीता ,आदि कलाकार सम्मिलित रहे । मेला एवं प्रदर्शनी में मेला महासचिव हितेश अग्रवाल एवं श्री राम लीला मंचन संयोजन समिति के अध्यक्ष एस सी सिंह ने निरीक्षण किया और दुकानदारों को हिदायत दी मेले में पॉलिथीन का प्रयोग पूर्णतया प्रतिबंधित है। कोई भी पॉलिथीन का प्रयोग नहीं करें। सभी खाने पीने की दुकनादारों और ठेले वाले को अवगत कराते हुए बताया कि अपनी दुकानध्ठेले के पास डस्टबिन रखें ताकि मेले में कूड़ा नही फैले। यदि इनका उल्लंघन पाया गया तो उनको इस एरिया से बाहर किया जा सकता है। इस मौके पर श्री रामलीला मंचन संयोजन समिति के अध्यक्ष एस सी सिंह , सचिव रवि बाबू, संयुक्त सचिव एवं निर्देशक पैट्रिक दास , संयुक्त सचिव देवेश दीक्षित, सदस्य एवं निर्देशक अंकित सक्सेना , कलाकार सुरक्षा महेंद्र दीक्षित , एवं टीम कंट्रोलर अरुण डी आर ,मंचन मीडिया प्रभारी रोहित सक्सेना ,मंच संचालक मनीष मुनि, राजीव सिंह , आदि के साथ ऑर्डनेंस ड्रामाटिक क्लब के कलाकार व मंचन समिति के समस्त पदाधिकारी उपस्थित रहे ।

पायनियर
नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 19 अक्टूबर, 2023

पीएम मोदी का स्वच्छ भारत का सपना साकार करें ग्राम पंचायतें: सांसद पटेल

●शिवरामपुर और अकबरपुर गांवों में किया ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्रों का शुभारंभ

संवाददाता। चित्रकूट

बांदा-चित्रकूट सांसद आर के सिंह पटेल ने बुद्धवार को सदर विकास खंड चित्रकूटधाम कर्वी के शिवरामपुर और अकबरपुर ग्राम पंचायत में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र (आरआरसी) का फीता काटकर किए शुभारंभ। इस मौके पर सांसद ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन के दूसरे चरण के तहत मोदी सरकार द्वारा गांवों को स्वच्छ और सुंदर बनाने का काम कर रहीं है। उन्होने कहा कि जब गांव साफ-सुथरे होगें। तभी मोदी सरकार का स्वच्छ भारत निर्माण का सपना साकार होगा।

स्वच्छ भारत मिशन के दूसरे चरण के तहत केंद्र सरकार द्वारा शिवरामुपर और अकबरपुर ग्राम पंचायतों में बनवाये गये ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र (आरआरसी) का उदघाटन करने पहुंचे बांदा-चित्रकूट सांसद आर के सिंह पटेल का शिवरामपुर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि प्रमोद जायसवाल और सचिव रामशरण राही और अकबरपुर में ग्राम प्रधान शंभू सिंह चंदेल ने फूल मालाओं से लादकर स्वागत किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सांसद श्री पटेल ने कहा कि मोदी सरकार गरीब कल्याण को संकल्पित है। बताया कि स्वच्छ भारत मिशन के पहले चरण के तहत गांवों में शौचालयों का निर्माण कराया गया था। वहीं दूसरे चरण तहत लगभग एक करोड़ की लागत से ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र (आरआरसी) का निर्माण कराया जा रहा है।

उन्होने कहा कि जब गांव और घर स्वच्छ होगें। तभी स्वच्छ भारत के निर्माण का मोदी सरकार का सपना साकार होगा। उन्होंने कहा कि कचरे से खाद का निर्माण होगा। जिससे किसानों की फसलों का उत्पादन बढ़ेगा।

बलखड़िया गिरोह के साथ पुलिस पर फायरिंग करने वालों को पांच वर्ष कैद

संवाददाता। चित्रकूट

दस्यु बलखड़िया गिरोह के साथ हुई मुठभेड़ में पुलिस टीम पर फायरिंग करने के मामले में दोष सिद्ध होने पर विशेष न्यायाधीश ने दो आरोपियों को पांच-पांच साल सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही प्रत्येक को 13 हजार रुपए के अर्थदण्ड से दण्डित किया है।

सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी सुशील सिंह ने बताया कि बीती 18 जनवरी 2014 को तत्कालीन बहिलपुरवा थाना प्रभारी हरिशरण सिंह ने इस मामले की रिपोर्ट दर्ज की थी। वादी के अनुसार लखनपुर गांव में बलखडिया गैंग के आने की सूचना पर तत्कालीन क्षेत्राधिकारी सदर द्वारा पीएसी के साथ लखनपुर जाने को कहा गया था। जिसके बाद वह पुलिस और पीएसी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। जहां बलखडिया गैंग प्राइमरी पाठशाला के पीछे तालाब के समीप अपने 9-10 साथियों के साथ कहीं से आर रही भोजन सामग्री का इंतजार कर रहा था। पुलिस टीम ने नजदीक जाकर देखा तो तालाब के भीठे में ददरी माफी गांव के चौधडा निवासी बबली उर्फ विजय पटेल पुत्र हीरालाल पटेल और लखनपुर निवासी मुन्ना पटेल पुत्र सत्यनारायण पटेल व लवलेश कोल आदि पहचान में आ गए। इस दौरान बबली पटेल ने चिल्लाकर पुलिस के आने की सूचना दस्यु सरगना बलखडिया को दे दी और इसके बाद बलखडिया ने पूरी पुलिस टीम को खत्म करने की बात कहते हुए फायरिंग शुरू करा दी। जिसमें पुलिस टीम पर लगभग 150-200 फायर किए गए। इसके कुछ दिनों बाद हुई पुलिस मुठभेड़ में दस्यु सरगना बलखडिया और फिर दस्यु लवलेश कोल मारे गए। अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद बुधवार को दस्यु प्रभावित क्षेत्र अधिनियम न्यायालय के विशेष न्यायाधीश नीरज श्रीवास्तव ने निर्णय सुनाया।

जिलाधिकारी का कड़ा रुख, अवैध खनन और परिवहन गतिविधियां बर्दाश्त नहीं होंगी

●बैठक में दिये निर्देश, बिना रॉयल्टी एवं फर्जी रॉयल्टी वाले बख्शे न जाएं

संवाददाता। उरई, जालौन

जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय की अध्यक्षता में कल देर शाम कलेक्ट्रेट सभागार में अवैध खनन व परिवहन के प्रभावी अंकुश लगाने सम्बंध में समस्त उप जिलाधिकारी, सीओ, खान अधिकारी व एआरटीओ के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री के दिशा निर्देशों के क्रम में जीरो टॉलरेंस की नीति के तहत जनपद में अवैध खनन एवं परिवहन पर पूर्ण रूप से अंकुश लगाते हुए वैध खनन को प्रेरित कर राजस्व में बढ़ोतरी की जाए। उन्होंने स्पष्ट निर्देशित किया कि जनपद में किसी भी हाल में अवैध खनन व परिवहन को बर्दाश्त नही किया जाएगा। बिना रॉयल्टी के माल बेचने वालों पर एफआईआर के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि बार बार अवैध खनन करने वाले लाइसेंस धारकों का पट्टा निरस्त के साथ दण्डात्मक कार्यवाही भी की जाएगी। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि बिना रॉयल्टी एवं फर्जी रॉयल्टी वालों को किसी भी हालत में बख्सा न जाए। उन्होंने कहा कि जनपद में किसी भी सूरत में अवैध खनन को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा ऐसा करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी चाहे वह कितना भी प्रभावशाली व्यक्ति क्यों न हो।

रामलला के गर्भगृह में विराजने तक हर दिन जलाएं दीपक और पढ़ें हनुमान चालीसा

चित्रकूट। श्री तुलसी पीठाधीश्वर जगदगुरु स्वामी रामभद्राचार्य ने अयोध्या में रामलला के गर्भ गृह में जानें तक आज से हर दिन दीपक जलाने और हनुमान चालीसा का पाठ करने का सभी देश वासियों से की अपील की है। बुद्धवार को तुलसी पीठाधीश्वर ने देश-विदेश में रहने वाले सभी भक्तों से निवेदन किया है कि अब से लेकर 22 जनवरी तक रोज दीपक जलाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें। उन्होंने कहा कि हम लोगों को इस बार 100 दिनों की दिवाली माननी चाहिए। उन्होंने कहा कि ये भी प्रभु की कृपा है कि मेरा अमृतमहोत्सव और श्री राम का गर्भगृह में प्रवेश एक ही समय में हो रहा है।जन्मभूमि अयोध्या में 1008 कुंडीय हनुमंत महायज्ञ भी हो रहा है। उन्होंने कहा कि प्रभु श्री राम अपने गर्भगृह में प्रवेश कर रहे है और उसी समय मेरे जीवन का 75 वां वर्ष प्रारंभ हो रहा है। राम मंदिर के लिए जो मेरी गवाही है वो आप सभी लोग जानते हैं। मेरा आप सभी से निवेदन है कि तब तक प्रतिदिन एक दीपक जलाएँ और हनुमान चालीसा का पाठ कर करें।

विद्युत समस्या से त्रस्त ग्रामीणों ने केंद्रीय राज्यमंत्री को सौंपा ज्ञापन

जालौन, उरई। ग्रामीण क्षेत्र में बिजली की समस्या को लेकर शेखपुरा फीडर में रहने वाले उपभोक्ताओं ने नियमित बिजली की सप्लाई को लेकर केंद्रीय राज्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा।

वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्र में बिजली की समस्या को लेकर किसान व ग्रामीण परेशान हैं। उदोतपुरा केंद्र से जुड़े शेखपुरा फीडर के गांव के निवासी शम्भू सिंह, मंगल सिंह, गंगा सिंह, अरविंद पांडेय आदि ने केंद्रीय राज्यमंत्री भानुप्रताप वर्मा को ज्ञापन सौंपकर बताया कि शेखपुरा फीडर से लगभग 20 गांवों में बिजली की सप्लाई की जा रही है। आरोप लगाया कि बिजली विभाग के कर्मचारी धनौरा फीडर पर पर्याप्त बिजली की आपूर्ति नहीं दे रहे हैं। जब कभी आधा, आधा घंटे के टुकड़ों में बिजली की आपूर्ति की जाती है। 24 घंटे में इस फीडर से चार से पांच घंटे भी बिजली नहीं मिल रही है। थोड़ी बहुत बिजली मिलती भी है तो वह पर्याप्त नहीं है। इससे न तो उनके घरों के इंवर्टर चार्ज हो पाते हैं और न ही कोई अन्य इलेक्ट्रिक आइटम चल पाते हैं। दूसरी ओर इस समय खेतों में पलेवा हो रहा है। नहरों में पर्याप्त पानी न आने से किसान नलकूप से सिंचाई करने पर निर्भर हैं। लेकिन लाइट न आने से नलकूप भी नहीं चल पा रहे हैं। जिससे रवी की फसल की बुवाई भी नही हो पा रही है।

भारत जानो प्रतियोगिता के विजेता छात्रों को बांटे गए प्रमाण पत्र

उरई, जालौन। भारत विकास परिषद् मुख्य शाखा उरई द्वारा शाखा स्तर की भारत को जानो प्रतियोगिता 2023 बीकेडी एल्ड्रिच पब्लिक स्कूल झांसी रोड उरई पर आयोजित की गई। भारत माता, विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तदुपरांत भारत को जानो प्रतियोगिता में सफल छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर उनकी हौसला अफजाई की। जूनियर वर्ग में प्रथम स्थान सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज उरई, द्वितीय स्थान डॉल्स डिलाइट पब्लिक स्कूल, तृतीय स्थान एल्ड्रिच पब्लिक स्कूल राम नगर उरई, एवं सीनियर वर्ग में प्रथम स्थान सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज उरई द्वितीय स्थान श्री गांधी इंटर कॉलेज उरई, एवं तृतीय स्थान डॉल्स डिलाइट पब्लिक स्कूल रहे।

तहसील स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का रंगारंग कार्यक्रम के साथ हुआ समापन

संवाददाता। जालौन, उरई

तहसील स्तरीय तहसील जालौन की प्रतियोगिताओं का समापन रंगारंग प्रोग्राम के साथ संपन्न हुआ जिसका संचालन पूर्व प्रधानाचार्य एवं पूर्व जिला क्रीड़ा सचिव कौशल किशोर सिंह गुर्जर एवं सुशील कुशवाहा द्वारा किया गया प्रतियोगिताओं का समापन मुख्य अतिथि एसडीएम के प्रतिनिधि तहसीलदार गौरव, विद्यालय के उप प्रबंधक वीरेंद्र सिंह निरंजन एवं विद्यालय के कार्यकारिणी के सदस्य प्रताप सिंह राजा द्वारा किया गया।

समापन सत्र में पारितोषिक वितरण कार्यक्रम में गौरव गुप्ता द्वारा एवं अन्य उपस्थित तहसील के समस्त प्रधानाचार्य जिसमें धर्मेंद्र मिश्रा, अश्वनी मिश्रा, चंद्रपाल सिंह गुर्जर, महाराणा प्रताप के प्रबंधक मंगल सिंह चौहान, एमएलबी के प्रबंधक भूपेश बाथम प्रतियोगिताओं को संपन्न कराने में जिनकी अहम भूमिका रही उनमें उमाकांत श्रीवास्तव प्रवक्ता बंशीधर महाविद्यालय उरई, राजेश चंदेल व्यायाम शिक्षक जखा, सुजीत श्रीवास्तव, मनोज गुप्ता, धीरज गुप्ता, यशवंत राव, उमाशंकर, विद्यालय के क्रीड़ा अध्यक्ष रजत कुलश्रेष्ठ के द्वारा सभी प्रधानाचार्य एवं व्यायाम शिक्षकों आए हुए विद्यालयों के शिक्षकों का माल्यार्पण एवं वेज अलंकरण कर स्वागत किया गया।

जालौन रोड पर विश्व कप मैचों पर सट्टेबाजी का धंधा जारी

उरई, जालौन। क्रिकेट विश्वकप मैचों की श्रृंखला शुरू होने के साथ ही मैचों पर सट्टा लगाने वाले माफियाओं ने जिला मुख्यालय में मजबूत नेटवर्क स्थापित कर लिया हैं जहां अपरान्ह बाद जैसे ही मैच शुरू होते हैं वहां पर सट्टा लगाने वालों का आना जाना शुरू हो जाता है। सूत्रों की मानें तो जालौन रोड स्थित एसपी आवास के बमुश्किल 100 मीटर की दूरी पर एक दोमंजिला भवन में क्रिकेट विश्वकप मैचों पर सट्टा लगाने का सुरक्षित अड्डा बना हुआ है। सूत्रों का तो यहां तक कहना है कि उक्त दोमंजिला भवन में सट्टा माफिया ने सीसीटीवी कैमरे भी लगवा रहे है ताकि यदि पुलिस टीम छापामार कार्यवाही करने पहुंचे तो वह पुलिस की गतिविधियों पर नजर रख सके। यही कारण है कि सट्टा माफिया आज भी खुली हवा में चैन की सांस लेकर कानून को ही बौना साबित करने के प्रयास में लगे हुये है।

क्विक न्यूज

आकाशीय बिजली गिरने से पति की मौत, पत्नी झुलसी

फतेहपुर। सुल्तानपुर घोष थाना क्षेत्र के हिसामपुर मजरे मंडवा गांव निवासी हीरालाल यादव पत्नी गुलाब कली के साथ खेत में बाजरा काट रहे थे। तभी हल्की बूंदाबांदी संग बिजली कड़कने लगी। मौसम खराब देख पति-पत्नी पास ही पेड़ की छांव में जाकर खड़े हो गए। तभी तेज आवाज के साथ पेड़ के ऊपर बिजली गिर गई। जिसमे नीचे खड़े वृद्ध दंपति बिजली की चपेट में आकर झुलस गए। जानकारी पर परिजनों ने दोनों को तत्काल सीएचसी हथगाम पहुंचाया। गंभीर रूप से झुलसे हीरालाल की रास्ते में सांसे थम गई थी। डाक्टर ने देखते ही मृत करार कर दिया। जबकि उसकी पत्नी को प्राथमिक उपचार के बाद डाक्टर ने घर भेज दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

एसपी ने छात्राओं को नारी सुरक्षा व स्वावलंबन का पढ़ाया पाठ

फतेहपुर। मिशन शक्ति अभियान के फेज-4 के तहत महिलाओं एवं बालिकाओं को जागरूक करने के उद्देश्य से समूचे जनपद में मिशन शक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। बुधवार को आरएस एक्सेल इंग्लिश एकेडमी में भी मिशन शक्ति अभियान आयोजित हुआ। जिसमें एसपी ने छात्राओं को नारी सुरक्षा व स्वावलंबन का पाठ पढ़ाया। मुख्य अतिथि एसपी उदय शंकर सिंह ने शिरकत की। उपस्थित छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि छात्राएं निर्भीक बनें और सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाएं। उधर समाज में नारी सुरक्षा व सम्मान एवं नारी स्वावलंबन हेतु असोथर थाना प्रभारी निरीक्षक ने स्कूल की छात्राओं को प्रोत्साहित करने के लिए असोथर स्थित आवासीय विद्यालय के कक्षा 8 की छात्रा कु. पूर्णिमा को एक दिवसीय कार्यवाहक थानाध्यक्ष बनाया।

लोडर की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

फतेहपुर। गागीपुर थाना क्षेत्र के सामियाना गांव निवासी स्व. मायाराम का 25 वर्षीय पुत्र राहुल गांव निवासी दोस्त कंधई व आशीष के साथ बाइक से गांव की रिश्ते में मौसी की बरीक्षा में शामिल होने के लिए थाना क्षेत्र के पैगम्बरपुर बकरी गांव जा रहा था। जैसे ही कस्बे के औगासी रोड टैम्पो स्टैंड के पास पहुंचा पीछे से तेज रफ्तार लोडर ने टक्कर मार दी। सड़क पर गिरे राहुल के सिर को कुचलता हुआ लोडर गुजर गया। घटना देख स्थानीय लोगों ने नाजुक हालत में उसे गागीपुर सीएचसी पहुंचाया जहां डाक्टर ने उसे देखते मृत घोषित कर दिया।

केंद्रीय राज्यमंत्री ने निर्माण कार्य शुरू न होने पर बैठक में जताई नाराजगी

●निर्धारित समय पर यदि निर्माण कार्य पूर्ण न किया तो होगी शिकायत

संवाददाता। फतेहपुर

जिले की सांसद व केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने बुधवार को पीडब्ल्यूडी डाक बंगले में लोक निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता प्रयागराज विजय कनौजिया व अधीक्षण अभियंता प्रयागराज एनके यादव समेत अन्य अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए स्वीकृत कार्यों में निर्माण कार्य शुरू न होने पर नाराजगी का इजहार किया।

उन्होंने कहा कि यदि तय समय में निर्माण कार्य पूर्ण न किए गए तो शासन स्तर पर इसकी शिकायत की जायेगी। बैठक में अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग व सभी सहायक अभियंताओं ने भी हिस्सा लिया। बैठक के दौरान केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने विकास कार्यों की समीक्षा की। समीक्षा में पाया कि जनपद के कई स्वीकृत कार्यों पर निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ है। जिस पर उन्होने नाराजगी व्यक्त की। प्रमुख रूप से चौडगरा से बिंदकी जोनिहा बंधवा होते हुए बहुआ मार्ग पर अभी तक निर्माण न शुरू होने पर सख्त हिदायत दिया कि कार्य प्रारंभ कर शीघ्र निर्माण पूर्ण कर लिया जाए वरना शासन स्तर पर इसकी शिकायत कर कार्यवाही कराएंगी। उपस्थित अधिकारियों ने केंद्रीय राज्यमंत्री को जानकारी दिया कि कई मार्गों को वित्तीय स्वीकृति मिल चुकी है। जिसका जनरल आर्डर होना शेष है।

जिसमें मुख्य रूप से गाजीपुर से विजयीपुर मार्ग के अलावा बिंदकी से फतेहपुर मार्ग किशनपुर मार्ग से गढा कोट मार्ग, ललौली से मुत्तौर मार्ग, चौडगरा से घाटमपुर होते हुए भोगनीपुर मार्ग प्रमुख मार्ग है। उपस्थित अधिशासी अभियंता अरविंद कुमार से कहा कि राष्ट्रीय राजमार्ग रायबरेली से बात करके यह सुनिश्चित करें कि जब तक बेंदाघाट पुल बनकर तैयार नहीं हो जाता उनके रास्ते पर चलने वाली सारी गाड़ियां लोक निर्माण विभाग की रोड ध्वस्त कर रही हैं।

पराली जलाने पर होगी कड़ी कार्रवाई: एसडीएम

बिंदकी, फतेहपुर। पराली जलाने पर आरोपी के खिलाफकड़ी कानूनी कार्रवाई होगी। अर्थदंड के साथ मुकदमा भी दर्ज किया जाएगा। यह बात नगर के राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में बुधवार को कृषि विभाग फतेहपुर द्वारा आयोजित पराली नहीं जलाएंगे प्रदूषण को भगाएंगे कृषक जागरूकता गोष्ठी में उप जिलाधिकारी अनिल यादव ने कही। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में कहीं भी कभी भी पराली जलाने की शिकायत नहीं मिलना चाहिए। उन्होंने मौजूद लेखपाल तथा अन्य अधिकारियों कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिया, सभी लोग गांव में किसानों के साथ बैठक करें और उन्हें जागरूक करें। इस मौके पर उप संभागीय कृषि प्रसार अधिकारी ओपी रावत ने कहा कि जिन किसानों के पास अधिक पराली है, वह जलाने के बजाय निशुल्क गौशाला भेजने का काम करें, ताकि वहां पर मौजूद गाय व अन्य मवेशी चारे के साथ पराली खा सके।

ग्राम पंचायत अलादातपुर के विकास कार्यों की डीएम ने जानी हकीकत

फतेहपुर। तेलियानी विकास खंड की ग्राम पंचायत अलादातपुर में कराये गये विकास कार्यों व सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं से लाभार्थियों को आच्छादित किए जाने की जानकारी जिलाधिकारी सी. इन्दुमती ने ग्राम बस्तापुर में की। ग्राम पंचायत अधिकारी को निर्देशित किया कि सर्वे कर व्यक्तिगत शौचालय से कितने परिवार अच्छादित है और इसका उपयोग कर रहे हैं या नहीं उसकी रिपोर्ट से अवगत कराएं। साथ ही जिन परिवारों के पास व्यक्तिगत शौचालय नहीं है, नियमानुसार कार्यवाही करते हुए शौचालय से अच्छादित किया जाये।

डीएम ने कहा कि जो पात्र लाभार्थी निराश्रित महिला पेंशन, दिव्यांग पेंशन, वृद्धा पेंशन, राशन कार्ड से अच्छादित नहीं है उनको चिन्हित करते हुए मुनादी कराकर कैम्प लगाकर शत-प्रतिशत योजना से अच्छादित किया जाये। जिन दिव्यांगों के पास दिव्यंगता प्रमाण पत्र नहीं है कैम्प के माध्यम से उनका दिव्यंगता प्रमाण पत्र बनवाया जाये। यदि दिव्यांगजन को किसी उपकरण व बीमारी में इलाज की आवश्यकता है तो नियमानुसार कार्यवाही करके लाभान्वित किया जाये।

एडीएम की अध्यक्षता में हुआ किसान दिवस का आयोजन

कानपुर देहात। अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व की अध्यक्षता में किसान दिवस का आयोजन विकास भवन स्थित सभागार में किया गया। आयोजित किसान दिवस में उप कृषि निदेशक कानपुर देहात, जिला कृषि अधिकारी, उप संभागीय कृषि प्रसार अधिकारी, उप मुख्य पशु चिकित्सा, अधिकारी सहायक निबंधक सहकारिता क्षेत्रीय प्रबंधक के साथ-साथ स्थानीय किसान नेताओं एवं अन्य प्रगतिशील कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। जिला कृषि अधिकारी द्वारा किसानों को खरीफ की तैयारी एवं जनपद में उपलब्ध कृषि निवेशों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम समन्वयक कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा किसानों को पराली जलाने से होने वाले पर्यावरणीय नुकसानों एवं मृदा स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्परिणामों के संबंध में जानकारी प्रदान करते हुए उनसे अपेक्षा की गई कि वह पराली को जलने के स्थान पर उसे खेतों में ही सलाहकार जैविक उर्वरक के रूप में प्रयोग करें जिससे मृदा में जीवांश कार्बन में वृद्धि हो। जिला उद्यान अधिकारी कानपुर देहात द्वारा किसानों को उद्यान विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे ड्रिप स्प्रिंकलर रंगन आदि पर अनुदान के संबंध में जानकारी प्रदान की गई तथा अवगत कराया गया कि विभाग में आलू का बीज उपलब्ध है जिन किसानों द्वारा आलू के बीज हेतु आवेदन किया गया था वह दो दिन दिवस के अंदर आलू प्राप्त कर सकते हैं।

पेज एक का शेष

गाजा के...

अमेरिका संघर्ष के दौरान नागरिक जीवन की सुरक्षा के लिए स्पष्ट रूप से खड़ा है, और हम इस त्रासदी में मारे गए या घायल हुए मरीजों, चिकित्सा कर्मचारियों और अन्य निर्दोष लोगों के लिए शोक व्यक्त करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कहा कि हमला 'अभूतपूर्व पैमाने पर' था। वेस्ट बैंक और गाजा के लिए डब्ल्यूएचओ के प्रतिनिधि रिचर्ड पीपरकोर्न ने कहा कि हमने कब्जे वाले फलस्तीनी क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा पर लगातार हमले देखे हैं। यह हमला अभूतपूर्व है। इस बीच घटना की कई वैश्विक नेताओं ने निंदा की। मध्यपूर्व में निकटतम पश्चिमी सहयोगियों में से एक जॉर्डन किंग अब्दुल्ला ने चेतावनी दी कि यह युद्ध, जो एक खतरनाक चरण में प्रवेश कर चुका है, इस क्षेत्र को एक अकथनीय आपदा में डुबो देगा।

यूपी के...

दवाएं बेहद कम दरों पर उपलब्ध कराई जाएंगी। साथ ही डॉक्टरों की सलाह पर महज 30-40 रुपये में 3 से 5 मिनट में खून की जांच हो जाएगी। इस परीक्षण में विभिन्न बुखार प्रोफ़ाइल जैसे मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, यकृत, पीलिया, शुगर आदि शामिल हैं। इसके अलावा, ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में लोगों की आय को ध्यान में रखते हुए, चयनित डिजिटल डॉक्टर क्लीनिक अल्ट्रासाउंड सेवाएं भी प्रदान करेंगे, जिसकी लागत 200 से 300 रुपये के बीच होगी। प्रत्येक डिजिटल डॉक्टर क्लिनिक में एक स्वास्थ्य देखभाल सहायक होगा जो मरीजों को अपने मोबाइल फोन का उपयोग करके डिजिटल डॉक्टर क्लिनिक में लॉग इन करने में मदद करेगा। उसके बाद मरीज की बीमारी के आधार पर वे मरीज को ऑनलाइन कॉन्फ्रेंस के जरिए सर्वश्रेष्ठ एमबीबीएस डॉक्टर से जोड़ेंगे।

शिक्षा अर्जित कीजिए और उसे उत्थान में लगाइए

संवाददाता। मेरठ

शिक्षा अर्जित करने का मकसद सिर्फ रोजगार प्राप्त करने तक नही होना चाहिए अपितु देश, समाज और मानव उत्थान में भी उसका योगदान देना चाहिए। आप बडे बनो तरक्की करो लेकिन राष्ट्र निर्माण के प्रति भी अपने दायित्व याद रखो तभी आपके शिक्षित होने का कोई अर्थ होगा। यह विचार राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने यहां बुधवार को आयोजित चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के 35वें दीक्षांत समारोह में व्यक्त किए। विश्वविद्यालय के नेताजी सुभाष चन्द बोस प्रेक्षागृह व आयोजित 35वें दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने कहा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इस ऐतिहासिक शहर की अपनी एक अलग सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व आर्थिक पहचान है।

चौव चरण सिंह विश्वविद्यालय ने नैक मूल्यांकन में न सिर्फ अच्छी रैंक प्राप्त की है वल्कि नयी शिक्षा नीति पर अमल करने और अकादमिकए प्रशासनिक व वित्तीय में बेहतर प्रदर्शन कर सराहनीय काम किये हैं। एशियाई और साउथ एशियाई यूनिवर्सिटीज रैंकिंग में विश्वविद्यालय ने बेहतर रेंक प्राप्त की है। शोध और पेटेंट के क्षेत्र में भी अच्छा काम हुआ है। विश्वविद्यालय और कालेजों को नैक मूल्यांकन अथवा एनआरआई से भागना या घबराना नही है । कहा कि नैक और एनआरआई के मूल्यांकन से ही हम बेहतर करने की दिशा में आगे बढ सकते हैं। उन्होंने कहा कि सरकारेंए शिक्षा विभाग और विश्वविद्यालय सभी शिक्षा के उत्थान के लिए मिलकर काम कर रहे हैं छात्र भी ऐसे काम करें जिससे विश्व में देश का नाम रोशन हो। अभिभावकों से बेटे और बेटियों में भेदभाव और असमानता न करने का आह्वान राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने किया। कहा कि 21वीं सदी में बेटियों को भी आत्मनिर्भर व स्वाबलम्बी बनायें जिससे भविष्य में आने वाली हर तरह की चुनौतियों का वह सामना कर सकें। बेटियां अब हर क्षेत्र में बेटों से बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने कहा कि शिक्षा सिर्फ डिग्री प्राप्त करने के लिए नही होनी चाहिए वल्कि देश और मानव हित में भी उसका योगदान रहना चाहिए। उन्होंने सदाचार और आचरण से आदर्शो का पालन करने का आह्वान किया। छात्र और छात्राओं से सामाजिक सरोकारों के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आयुष मंत्रालय के सचिव पद्म श्री डाक्टर वैद्य राजेश कोटेजा ने कहा कि दुनियां आज आयुर्वेदए योग और अन्य पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों के महत्व को फिर से समझ रही है। यही वजह है कि डब्ल्यूएचओ ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन का पहला केंद्र भारत में स्थापित करने जा रहा है। इस अवसर पर राज्यपाल व अन्य अतिथियों ने सामूहिक रूप से छात्र व छात्राओं को उपाधि और पदक प्रदान किए। एमडीएस 2023 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए प्रियंका मिश्रा को कुलाधिपति स्वर्ण पदक ए एमकॉम में आरजू को पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर शंकर दयाल शर्मा स्वर्ण पदक ए बीएससी कृषि में हिमांशु सैनी तथा दीपक कुमार को चौव चरण सिंह स्मृति प्रतिभा पुरस्कार दिए गए। इसके अलावा 65 प्रायोजित स्वर्ण पदक दिए गए जिनमें कृषि संकाय में एक ए कला संकाय में 22 ए वाणिज्य एवं व्यावसायिक प्रशासन संकाय में चार ए शिक्षा संकाय में दो ए अभियांत्रिक एवं प्रौद्योगिक संकाय में चार ए विधि संकाय में दो ए चिकित्सा संकाय में एक और विज्ञान संकाय में 29 छात्र व छात्राओं को प्रदान किये गये।

कुलपति स्वर्ण पदक एवं विशिष्ट योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त करने वालों में कृषि संकाय के 14 ए कला संकाय के 55 ए वाणिज्य एवं व्यावसायिक प्रशासन संकाय के नौ ए शिक्षा संकाय के छह ए अभियांत्रिक एवं प्रौद्योगिक संकाय के नौ ए विधि संकाय के चार ए चिकित्सा संकाय के 31 ए विज्ञान संकाय के 44 तथा आयुर्वेद एवं यूनानी संकाय के 18 छात्र व छात्राऐं रहे। विश्वविद्यालय परिसर के विशिष्ट योग्यता प्रमाण पत्र पाने वालों छात्र व छात्राओं में कला संकाय के पांच ए वाणिज्य एवं व्यावसायिक प्रशासन से एक ए शिक्षा संकाय से तीन ए विधि संकाय से एक एवं विज्ञान संकाय से एक रहे। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने इस अवसर पर आंगनबडी महिला कार्यकर्ताओं को किट जबकि प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को पुस्तक ए फल व मिष्ठान वितरित किये।

इजराइल को और अधिक सैन्य सहायता भेज रहा अमेरिका

दो हजार सैनिकों को अलर्ट पर रखा

एपी। वाशिंगटन

फलस्तीन के चरमपंथी समूह हमास द्वारा सात अक्टूबर को इजराइल पर हमला करने के कुछ घंटों के भीतर ही अमेरिका ने क्षेत्र में युद्धपोतों और विमान भेजना शुरू कर दिया था ताकि हमास के हर हमले का पलटवार करने के लिए इजराइल की मदद के लिए तैयार रहा जा सके।

अमेरिका ने इजराइल की मदद के लिए मंगलवार को और भी सैन्य जहाज तथा सेना भेजी है। इसके अलावा अमेरिका में अन्य सैनिकों को तैयार रखा गया जो जरूरत पड़ने पर मदद के लिए तैयार रहेंगे।

एक अमेरिकी विमानवाहक पोत और उसका प्रहार करने वाला दल पहले से ही पूर्वी भूमध्य सागर में तैनात है और दूसरा दल अमेरिका से क्षेत्र की ओर भेजा जा चुका है। इसके अलावा, तीन समुद्री युद्धपोत भी भेजे जा चुके हैं। मध्य पूर्व के आसपास अमेरिकी सैन्य अड्डों पर बीसियों विमान भेजे जा चुके हैं और अमेरिकी का एक विशेष दल योजना तैयार करने और खुफिया जानकारी जुटाने में इजराइली सेना की मदद कर रहा है। अमेरिकी की ओर से मंगलवार तक हथियारों की पांच बड़ी खेप इजराइल भेजी जा चुकी है।

इस मुद्दे पर अमेरिका की बढ़ती चिंता दर्शाती है कि हमास और इजराइल के बीच चल रहा युद्ध आने वाले दिनों में और भी घातक हो सकता है। अमेरिका द्वारा बड़ी संख्या में जहाजों और विमानों को तैनात करने की एक वजह यह भी है कि हमास का समर्थन करने वाले हिजबुल्लाह, ईरान या अन्य को मौके का फायदा उठाने से रोक सके।

नौसेना के जहाज और विमान: अमेरिकी जहाज (यूएसएस) गेराल्ड आर. फोर्ड विमानवाहन पोत के प्रहार दल को हमले के कुछ घंटों के भीतर पूर्वी भूमध्य सागर की ओर से भेज दिया गया था। अमेरिकी रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन ने मंगलवार को बताया कि जहाज की छह महीने की तैनाती को बढ़ा दिया गया और उन्हें कब वापस बुलाया जाएगा इस बारे में कोई तारीख नहीं बताई है। रक्षा मंत्री लॉयड आस्टिन ने हाल में दिए गए आदेश में यूएसएस ड्वाइट डी आइजनहॉवर विमानवाहक प्रहार समूह को पूर्व भूमध्य सागर में फोर्ड का सहयोग देने का आदेश दिया है। पोतों का यह बेड़ा अभी अटलांटिक महासागर में आगे बढ़ रहा है।

पेंटागन ने यह भी बताया था कि वह यूएसएस बाटन जल और थल में चलने वाले पोत को भी इस क्षेत्र में भेज रहा है। इसके बेड़े में तीन पोत है जो 26वीं मैरीन एक्सपीडिशिनरी यूनिट के हजारों नौसैनिकों को ले जा रहे हैं। एक अमेरिकी अधिकारी ने नाम उजागर न करने की शर्त पर बताया कि सैन्य सामग्री के परिवहन में इस्तेमाल होने वाला यूएसएस मेसा वर्डे को भूमध्य सागर में, हमले के लिए काम आने वाला बाटन तथा जहाजों को उतारने के लिए काम आने वाला यूएसएस कार्टर हॉल खाड़ी क्षेत्र तथा लाल सागर की ओर से भेजे जा चुके हैं। हालांकि, जहाज किस जगह तैनात हैं, उन्होंने इसकी जानकारी साझा नहीं की।

इन पोतों में हथियार और प्रहार यान भेजे जा रहे हैं जो अशांत क्षेत्रों में मैरीन को उतार सकते हैं अथवा चिकित्सा या अन्य आवश्यकताओं को उपलब्ध करा सकते हैं।

हथियार और विशेष अभियान बल: अमेरिकी हथियारों से लदे विमान इजराइल पहुंचने लगे हैं। गाजा के पूर्व में हवाई अड्डे पर शुक्रवार को एक सी-17 विमान को उतारा गया। पेंटागन ने मंगलवार को कहा कि हथियारों से ऐसी पांच खेप पहले ही पहुंचाई जा चुकी है। और भी पहुंचाई जा सकती है। अमेरिकी रक्षा अधिकारियों का कहना है कि प्रशासन पहले ही इजराइल को छोटे बम, अन्य युद्ध सामग्री और मिसाइलें उपलब्ध करवा चुका है।

अमेरिका ने विशेष बलों का एक प्रकोष्ठ भी स्थापित कर दिया है जो कि बंधकों को वापस लाने के लिए योजना बनाने और इजराइल की सेना को खुफिया जानकारी देने में मदद कर रहा है। पेंटागन ने कहा है कि उनके सैनिक बंधकों बचाने के लिए चलाए जा रहे किसी भी अभियान का हिस्सा नहीं हैं और इजराइल में कोई अन्य अमेरिकी सैन्य बल नहीं है।

वायु सेना: पेंटागन ने वायुसेना के अतिरिक्त दस्ते ए-10, एफ-15 और एफ-16 पूरे मध्य पूर्व के अड्डों पर भेज दिए हैं। जरूरत पड़ने पर और भी दस्ते भेजे जाएंगे।

बिना एनेस्थीसिया, फर्श पर घायलों की सर्जरी करने को विवश डॉक्टर

गाजा में अस्पताल पर हमला: खान यूनिस (गाजा पट्टी)। गाजा शहर में अल-अहली अस्पताल पर हुए हमले में घायल लोगों का इलाज करने में चिकित्सक मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। चिकित्सा सामग्री की कमी के चलते उन्हें बेहोश करने की दवा एनेस्थीसिया के बिना अस्पताल के फर्श पर घायलों की सर्जरी करनी पड़ रही है। इजराइल की तरफ से हो रही बमबारी और क्षेत्र की नाकाबंदी के बीच हुए इस हमले में अस्पताल के करीब शरण लेने वाले कई लोगों की मौत हो गई है। चरमपंथी समूह हमास ने अस्पताल पर हमले के लिए इजराइल को जिम्मेदार बताया है जबकि इजराइली सेना का कहना है कि फलस्तीनी चरमपंथियों की ओर से दागा गया एक रॉकेट निशाना चूक गया, जिसकी वजह से यह घटना हुई। हमास द्वारा संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार हमले में कम से कम 500 लोगों की मौत हुई है। अल-अलही अस्पताल में काम करने वाले प्लास्टिक सर्जन ग़ासन अबू सित्ता ने कहा कि उन्होंने एक जोरदार विस्फोट की आवाज सुनी और उनके ऑपरेशन कक्ष की छत गिर गई।

मिस्र को गाजा तक सीमित मानवीय सहायता पहुंचाने की अनुमति देगा इजराइल

खान यूनिस (गाजा पट्टी)। इजराइल ने बुधवार को कहा कि वह मिस्र को गाजा पट्टी में मानवीय सहायता की सीमित खेप पहुंचाने की अनुमति देगा। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने कहा कि इजराइल की यात्रा पर आए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के अनुरोध पर यह फैसला लिया गया है। उसने एक बयान में कहा कि वह खाद्य सामग्री, पानी और दवा की आपूर्ति को नहीं रोकेगा, बशर्ते कि आपूर्ति हमास तक न पहुंचे। बयान में अत्यधिक आवश्यक ईंधन का कोई जिक्र नहीं किया गया। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि सहायता कब से पहुंचानी शुरू की जाएगी। मिस्र की राफा सीमा से आवश्यक सहायता की गाजा तक आपूर्ति की क्षमता सीमित है और मिस्र ने कहा कि इजराइली हवाई हमलों में सीमा क्षेत्र में नुकसान पहुंचा है। गाजा में सीमा चौकियों पर नियंत्रण रखने वाले इजराइल ने कहा कि वह अपने क्षेत्र से आपूर्ति पहुंचाने की अनुमति नहीं देगा। उसने यह भी मांग की है कि इंटरनेशनल रेड क्रॉस को गाजा में बंधक बनाए गए अपहृत इजराइलियों से मिलने की अनुमति दी जाए।

अमेरिका ने इजराइल-हमास युद्ध से संबंधित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव पर वीटो किया

संयुक्त राष्ट्र। अमेरिका ने बुधवार को संयुक्त राष्ट्र के एक प्रस्ताव को वीटो कर दिया, जिसमें इजराइल पर हसास के हमलों, नागरिकों के खिलाफ हिंसा की निंदा करने और गाजा में फलस्तीनियों को मानवीय मदद पहुंचाने का आग्रह किया गया था। पंद्रह सदस्य सुरक्षा परिषद के 12 सदस्यों ने प्रस्ताव के पक्ष में जबकि अमेरिका ने विरोध में मतदान किया, जबकि दो सदस्य अनुपस्थित रहे। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी दूत लिंडा थॉमस ग्रीनफील्ड ने मतदान के बाद कहा कि राष्ट्रपति जो बाइडन मध्य पूर्व पहुंचकर राजनयिक वार्ता कर रहे हैं और हमें उस कूटनीति की आवश्यकता है। उन्होंने प्रस्ताव में इजराइल के आत्मरक्षा के अधिकार के बारे में कुछ नहीं कहे जाने पर भी आपत्ति जताई। ब्राजील द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव पर वीटो होने से पहले परिषद के सदस्यों ने इसमें रूस के दो संशोधनों को खारिज कर दिया। इन दो संशोधनों में मानवीय संघर्ष विराम का आह्वान करना और गाजा में नागरिकों एवं अस्पतालों और स्कूलों पर अंधाधुंध हमलों की निंदा करना शामिल था।

सिंगापुर ने इजराइल-हमास संघर्ष के संबंध में लोगों के एकत्र होने पर प्रतिबंध लगाया

सिंगापुर। सिंगापुर के अधिकारियों ने कहा कि सार्वजनिक सुरक्षा के मद्देनजर, इजराइल-हमास संघर्ष को लेकर लोगों के एकत्र होने एवं कार्यक्रमों के आयोजन पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। सिंगापुर पुलिस बल (एसपीएफ) और नेशनल पार्क्स बोर्ड (एनपार्क्स) ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन के संबंध में आवेदन खारिज कर दिए जाएंगे। चैनल न्यूज एशिया ने अधिकारियों के हवाले से खबर दी, दोनों के बीच बढ़े तनाव को देखते हुए पुलिस का आकलन है कि इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन से लोगों की सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। एनपार्क्स ने भी इसी तरह की चिंता साझा की है। पुलिस ने कहा कि उसे पता है कि संघर्ष को लेकर कार्यक्रमों और जनसभाओं का आयोजन किया जा रहा है और एनपार्क्स को भी इसी तरह के कार्यक्रम के आयोजन के लिए आवेदन मिले हैं। एसपीएफ ने कहा कि वह इस तरह की जनसभाओं की अनुमति नहीं दे सकता जो दूसरे देशों या विदेशी संस्थानों के राजनीतिक मकसदों की हिमायत करता हो या इस तरह की भावनाओं को भड़का सकता हो जिससे लोगों की सुरक्षा खतरे में पड़े।

अमेरिका ने हमास के 10 सदस्यों और वित्तीय नेटवर्क के एक समूह के खिलाफ प्रतिबंध लगाए

वाशिंगटन। अमेरिका ने हमास के 10 सदस्यों और फलस्तीनी आतंकवादी संगठन के गाजा, सूडान, तुर्किए, अल्जीरिया तथा कतर में फैले वित्तीय नेटवर्क के एक समूह के खिलाफ बुधवार को प्रतिबंधों की घोषणा की। उसने इजराइल पर हमास के अचानक किए हमले में 1,000 से अधिक लोगों के मारे जाने या उन्हें अपहृत किए जाने की प्रतिक्रिया में यह कदम उठाया है। इजराइल के प्रति समर्थन व्यक्त करने के लिए मंगलवार देर रात पश्चिम एशिया पहुंचे राष्ट्रपति जो बाइडन ने इजराइल और हमास के बीच बढ़ते युद्ध में तनाव कम करने की कोशिश की है लेकिन इन प्रयासों को गाजा के एक अस्पताल में बड़े धमाके में करीब 500 लोगों की मौत से झटका लगा है। वित्त विभाग के विदेश संपत्ति नियंत्रण कार्यालय ने बुधवार को जिन लोगों पर प्रतिबंध लगाया है उनमें हमास के निवेश का प्रबंधन करने वाले सदस्य, ईरान सरकार से करीबी संबंध रखने वाला कतर में स्थित एक वित्त पोषक, हमास का एक प्रमुख कमांडर और गाजा में स्थित आभासी मुद्रा विनिमय शामिल हैं।

आइए राम, सीता, गांधी के विचारों को आत्मसात करें

न्यूयॉर्क सिटी के मेयर एडम्स का दिवाली संदेश

भाषा। न्यूयॉर्क (अमेरिका)

न्यूयॉर्क सिटी के मेयर एरिक एडम्स ने कहा है कि दिवाली हम सभी को अंधकार को चीरकर प्रकाश की ओर बढ़ने की याद दिलाती है। उन्होंने लोगों से भगवान राम, देवी सीता और महात्मा गांधी के विचारों को आत्मसात करने तथा बेहतर मानव बनने का आह्वान किया।

अपने न्यूयॉर्क आवास ग्रेसिया मैंशन पर आयोजित वार्षिक दिवाली समारोह में एडम्स ने लोगों से दुनिया में अंधकार को दूर कर रोशनी फैलाने का आह्वान किया।

एडम्स ने कहा, दिवाली सिर्फ एक छुट्टी नहीं है। यह हम सभी को याद दिलाती है कि हमें दुनिया से अंधकार को मिटाना होगा और प्रकाश फैलाना होगा। रोशनी का त्योहार इसी बारे में है। इस वार्षिक समारोह में सैकड़ों भारतवंशी अमेरिकी और दक्षिण एशियाई समुदाय के नागरिक तथा अन्य देशों से आए प्रवासियों का समुदाय एवं सरकारी अधिकारी शामिल हुए। एडम्स ने कहा कि दिवाली मोमबत्ती या दिए जलाने से कहीं अधिक हमारे जीवन को प्रकाशमान करने के बारे में है।

उन्होंने कहा, दुनिया में बहुत अधिक अंधकार है जो हम हर दिन देखते हैं। इसलिए अगर हम वास्तव में रामायण के जीवन, सीता के जीवन, गांधी के जीवन में विश्वास करते हैं तो हमें निश्चित रूप से गांधी के नक्शे कदम पर चलना होगा।

एडम्स ने कहा कि ऐसे वक्त में जब दुनियाभर में अंधकार छाया हुआ है और दुनिया बेकसूर लोगों की मौत का गवाह बन रही है, ऐसे में हम इसे (अंधकार को) हमारे भविष्य को और मानवता को निगलते हुए नहीं देख सकते। उन्होंने कहा, आइए बेहतर मनुष्य बनें। दिवाली के सार को आत्मसात करें। गांधी की विचारधारा को आत्मसात करें। सीता की विचारधारा को अपनाएं। राम की विचारधारा को जिएं और तभी हम सही मायने में इस दिन की मूल भावना को आत्मसात कर पाएंगे जो वास्तव में इसका अर्थ है।

न्यूयॉर्क राज्य की विधायक जेनिफर राजकुमार ने कहा कि भारतीय-अमेरिकी समुदाय इससे पहले कभी इतना ताकतवर नहीं रहा। राजकुमार के प्रयासों से ही न्यूयॉर्क सिटी में स्कूलों में दिवाली के दिन छुट्टी की घोषणा की गई।

ब्रिटेन की एक सिख पूर्व पुलिस अधिकारी को स्कूली छात्र को थप्पड़ मारने के लिए सजा सुनाई गई

लंदन। एक ब्रिटिश सिख महिला पुलिस अधिकारी को बर्मिंघम में पिछले साल छुट्टी पर रहते हुए एक झड़प के दौरान 12-वर्षीय स्कूली छात्र को थप्पड़ जड़ने के मामले में दोषी ठहराते हुए 12 महीने की सामुदायिक सजा सुनाई गई है। शरणजीत कौर ने पिछले महीने वेस्ट मिडलैंड्स पुलिस कांस्टेबल (पीसी) के पद से इस्तीफा दे दिया था। ब्रिटेन के इंडिपेंडेंट ऑफिस फॉर पुलिस कंडक्ट (आईओपीसी) की ओर से जांच किए जाने के बाद कौर को आरोपित किया गया था। पिछले हफ्ते, 41-वर्षीय कौर बर्मिंघम मजिस्ट्रेट कोर्ट के सामने पेश हुई थी जिसने उसे 12 महीने की सामुदायिक सजा सुनाई। यदि किसी दोषी व्यक्ति का अपराध जेल की सजा देने लायक नहीं होता है तो न्यायाधीश या मजिस्ट्रेट सामुदायिक आदेश सुना सकता है। आईओपीसी के क्षेत्रीय निदेशक डेरिक कैंपबेल ने कहा, पुलिस अधिकारी केवल तभी बल प्रयोग कर सकता है जब यह आवश्यक, आनुपातिक और परिस्थितियों की दृष्टि से उचित हो। महिला पुलिस अधिकारी के पास उस लड़के पर हमला करने का कोई पुलिसिंग उद्देश्य या अन्य उचित कारण नहीं था, क्योंकि अधिकारी को कोई वास्तविक खतरा नहीं था।

पाकिस्तान ने अबाबील हथियार प्रणाली का सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण का दावा किया

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान ने अपनी प्रतिरोधक क्षमता को और मजबूत करने के लिए अबाबील हथियार प्रणाली का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है। सेना ने यह जानकारी दी।

सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) के एक बयान के अनुसार यह परीक्षण हथियार प्रणाली के डिजाइन, तकनीकी मापदंडों और प्रदर्शन को फिर से परखने के लिए किया गया था।

बयान में कहा गया है कि मिसाइल प्रणाली का उद्देश्य प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करना और क्षेत्र में रणनीतिक स्थिरता को बढ़ाना है। सेना की ओर से मिसाइल प्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दी गई है।

ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ कमेटी (सीजेसीएससी) के अध्यक्ष जनरल साहिर शमशाद मिर्जा और रणनीतिक संगठनों के वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक और अभियंता परीक्षण के मौके पर मौजूद थे। जनरल मिर्जा ने सफल परीक्षण में योगदान देने वाले सभी लोगों के तकनीकी कौशल, समर्पण और प्रतिबद्धता की सराहना की।

रूसी राष्ट्रपति पुतिन और चीनी नेता शी बीजिंग में मिले, करीबी नीति समन्वय का आह्वान किया

एपी। ताइपे

रूसी राष्ट्रपति पुतिन और चीनी नेता शी चिनफिंग ने बुधवार को बीजिंग में मुलाकात की और विदेश नीति में करीबी समन्वय का आह्वान किया, क्योंकि यूक्रेन पर मास्को के आक्रमण और ताइवान के खिलाफ बीजिंग के बढ़ते जोखिम पर पश्चिम के साथ संभावित टकराव को लेकर चिंताएं बढ़ रही हैं। अपनी सुबह की बैठक में शी जिनपिंग और व्लादिमीर पुतिन ने व्यापार और शी की महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव पहल की 10वीं वर्षगांठ पर चर्चा की।

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के तहत दुनियाभर में बिजली संयंत्र, सड़कें, रेलमार्ग और बंदरगाह बनाए गए हैं तथा अफ्रीका, एशिया, लातिनी अमेरिका और पश्चिम एशिया के साथ चीन के संबंध गहरे हुए हैं। लेकिन परियोजनाओं को वित्तपोषित करने वाले भारी ऋण ने गरीब देशों पर बड़ा कर्ज का बोझ डाल दिया है, जिससे कुछ मामलों में चीन ने उन संपत्तियों पर नियंत्रण कर लिया है। पुतिन ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में कहा, मौजूदा कठिन परिस्थितियों में, करीबी विदेश नीति समन्वय की विशेष रूप से आवश्यकता है। उन्होंने कहा, इसलिए, द्विपक्षीय संबंधों के संदर्भ में, हम बहुत आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि द्विपक्षीय व्यापार इस साल रिकॉर्ड 200 अरब अमेरिकी डॉलर को पार करने की राह पर है। पिछले फरवरी में यूक्रेन पर रूस की कार्वाई से कुछ हफ्ते पहले, पुतिन ने बीजिंग में शी से मुलाकात की थी और दोनों पक्षों ने असीमित रिश्तों का वादा करते हुए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। यूक्रेन पर रूस के युद्ध में खुद को तटस्थ शांति के पैरोकार एवं मध्यस्थ के रूप में पेश करने की बीजिंग की कोशिशों को अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने व्यापक रूप से खारिज कर दिया है। इस बीच, चीन ने स्व-शासित ताइवान के खिलाफ अपने रुख को और कड़ा कर दिया है।

पाकिस्तान की अदालत ने इमरान को बेटों से फोन पर बात करने की इजाजत दी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की एक विशेष अदालत ने जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को अपने दोनों बेटों से फोन पर बातचीत करने की बुधवार को अनुमति दे दी। मीडिया में आई एक खबर से यह जानकारी सामने आई है। विशेष अदालत के न्यायाधीश अबुल हसनत ज़ुल्करनैन ने एक पेज के लिखित आदेश में अडियाला जेल के अधीक्षक को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि इमरान खान अपने बेटों सुलेमान खान और कासिम खान से फोन पर बातचीत कर सकें। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान (71) राजनयिक संदेश को लीक करने को लेकर सरकारी गोपनीयता मामले में रावलपिंडी स्थित अडियाला जेल में बंद हैं।

भारत-वियतनाम सामरिक साझेदारी क्षेत्र में सुरक्षा, स्थिरता और प्रगति का स्रोतः विदेश मंत्री जयशंकर

भाषा। हो ची मिन्ह (वियतनाम)

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने बुधवार को कहा कि भारत और वियतनाम की व्यापक सामरिक साझेदारी "क्षेत्र में सुरक्षा, स्थिरता और प्रगति के स्रोत" के रूप में उभर रही है।

जयशंकर ने यह टिप्पणी उस वक्त की जब उन्होंने भारतीय प्रशिक्षण जहाज आईएनएस सुदर्शिनी का दौरा किया। संयोगवश, पोत वियतनाम की उनकी चार-दिवसीय आधिकारिक यात्रा के दौरान स्थानीय बंदरगाह पर था।

विदेश मंत्री ने आईएनएस सुदर्शिनी पर उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा, वियतनाम एकमात्र राष्ट्र है, जिसे भारत ने पूरी तरह से संचालित मिसाइल कार्वेट आईएनएस कृपाण उपहार में दिया है। इस प्रकार के सहयोग हमारे रक्षा संबंधों को और मजबूत कर सकते हैं। इसलिए, आज जब आईएनएस सुदर्शिनी हो ची मिन्ह सिटी में है, तो मैं कहना चाहता हूं कि हमारी बढ़ती साझेदारी की मजबूत और अनुकूल हवाएं हमारे बढ़ती साझेदारी को और तेज गति प्रदान करने में मदद करेंगी।

उन्होंने कहा, "ब्रीफिंग से मुझे जो समझ आया, यह प्रशिक्षण जहाज अनुशासन, कड़ी मेहनत, अनुकूलन की क्षमता और अप्रत्याशित परिस्थितियों का सामना करने के साहस के महत्व पर प्रकाश डालता है।"

उन्होंने कहा, आज हमारी रक्षा गतिविधियां रक्षा उद्योग के क्षमता निर्माण, संयुक्त राष्ट्र शांतिसेना, पनडुब्बी और पायलट प्रशिक्षण और निश्चित रूप से द्विपक्षीय जहाज यात्राओं और युद्धाभ्यासों के व्यापक विस्तार तक फैली हुई हैं।

जयशंकर ने आईएनएस सुदर्शिनी पर कार्यक्रम के तुरंत बाद, अपनी यात्रा की तीन तस्वीरों के साथ सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया, आईएनएस सुदर्शिनी का दौरा करके खुशी हुई, जो आज सुबह हो ची मिन्ह सिटी बंदरगाह पहुंचा। इसकी यात्रा हमारी लंबी समुद्री परंपरा की पुष्टि करती है। हमारी व्यापक सामरिक साझेदारी क्षेत्र में सुरक्षा, स्थिरता और प्रगति के स्रोत के रूप में उभर रही है।

जयशंकर ने चालक दल के युवा सदस्यों, वियतनामी सैन्यकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से बातचीत की।

उन्होंने अपने वियतनामी समकक्ष बुई थान सोन के साथ विभिन्न मुद्दों पर बातचीत की। दोनों मंत्रियों ने आर्थिक, व्यापार, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग पर भारत-वियतनाम संयुक्त आयोग की 18वीं बैठक की सह-अध्यक्षता की और विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग सहित भारत-वियतनाम के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी पर हुई प्रगति की समीक्षा की।

जयशंकर ने प्रधानमंत्री फाम मिन्ह चिन्ह से भी मुलाकात की और वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के बाह्य संबंध आयोग के अध्यक्ष ले होई ट्रुंग के साथ भी चर्चा की।

चार साल बाद पाकिस्तान लौट रहे नवाज शरीफ ने अदालत से संरक्षण जमानत मांगी

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की शनिवार को स्वदेश वापसी से पहले उनके वकीलों ने इस्लामाबाद उच्च न्यायालय में संरक्षण जमानत याचिका दायर कर अधिकारियों को उनके यहां पहुंचने पर गिरफ्तार करने से रोकने का अनुरोध किया है।

शरीफ (73) को एवेनफील्ड और अल-अजीजिया मामलों में दोषी ठहराया गया था और तोशाखाना वाहन मामले में भगोड़ा अपराधी घोषित किया गया था। तोशाखाना मामला इस्लामाबाद में एक जवाबदेही अदालत के समक्ष लंबित है। नवाज जब 2019 में इलाज के लिए ब्रिटेन गए थे तो इन मामलों में जमानत पर थे। पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) अध्यक्ष ब्रिटेन में अपने चार साल के स्व-निर्वासन को समाप्त करते हुए 21 अक्टूबर को पाकिस्तान लौटने वाले हैं। याचिका के अनुसार नवाज ने अदालत में आत्मसमर्पण करने से पहले संरक्षण जमानत का अनुरोध किया है। याचिका में अनुरोध किया गया है कि इस्लामाबाद उच्च न्यायालय अधिकारियों को नवाज को हवाईअड्डे पर गिरफ्तार नहीं करने का निर्देश दे ताकि वह अदालत में आत्मसमर्पण कर सकें। इसमें कहा गया है कि नवाज स्वास्थ्य कारणों से समय पर नहीं लौट सके और कोविड-19 महामारी के कारण सेहत संबंधी समस्या और बढ़ गई थी।

PUBLIC NOTICE
CORRIGENDUM
This is to inform general public at large that a Public Notice was issued on 6/10/23 in "The Pioneer" newspaper where my client, Anita Devi intends to avail loan against her Entire Ground Floor (without roof/terrace rights) Part of Property No. 3-A, area measuring 87 Sq. Yds. part of Khasra No. 350, situated in the Lal Dora of Village Pitam Pura, Delhi from Piramal Capital & Housing Finance Limited, the documents pertaining to the property have been lost and in lieu of which FIR was already lodged on 3.10.2023 and the Public Notice was published.
In the Public Notice, The lost Original Relinquishment Deed dated 22-09-2005 is in favour of Mr. Surender Singh S/o Late Ram Chander only, the name of rohtash came inadvertently
This Corrigendum is to be read with Public Notice issued on 6/10/23
Kamal Kant Gupta (Advocate)
Unit No. FF-2, First floor, Mahaluxmi Metro Tower Sec-4, Vaishali, Gzb., U.P., Mob. 9810063351

PUBLIC NOTICE
To, be known to all that my client, SMT. PROMIL GROVER W/O SHRI ASHOK GROVER R/O FLAT NO.725, GROUND FLOOR, POCKET-A, SARITA VIHAR, NEW DELHI, is the owner of DDA SFS FLAT NO.725, ON GROUND FLOOR, POCKET-A, CATEGORY-III, SITUATED AT SARITA VIHAR, NEW DELHI, VIDE DDA FILE NO. F.128(184)84/SFS/SV/III. The original documents i.e. Original DEMAND LETTER of the above said property have been lost or misplaced by my client and is not traceable inspite of his best efforts. An F.I.R./NCR to this effect has been lodged in the Police Station, Crime Branch, Delhi (LR No. 1031339/2023 dated 17.10.2023). Any person(s) claiming any rights, interest, having any objection or found in possession of original documents, may write/contact with above named person at above Address/Phone No. within 15 days from the date of publication of this notice. The person claiming any right, interest, objection with respect to this property, can personally inform or write to Deputy Director (LAB Housing) LIG or Director (Housing), Vikas Sadan, New Delhi.
Naveen Aggarwal (Advocate)
Ch.No. M-7, Near SBI, Western Wing, Tis Hazari Court, Delhi-54

सार्वजनिक सूचना
आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि श्री भरत शर्मा, श्रीमती माया शर्मा और श्री उदित ने ग्राम शाहपुर, बम्हेटा, तहसील और जिला गाजियाबाद,(यूपी) में स्थित टाउनशिप क्रिसेंट पार्क में "स्प्रिंगव्यू फ्लोर्स" के नाम से जाने जानी वाली प्रोजेक्ट में, फ्लैट नंबर ए-1002, बिना छत अधिकार के प्रथम तल, एरिया परिमाप 120.68 वर्ग मीटर, स्वर्गीय श्री मोहन चंद्र शर्मा के निधन के बाद श्री भरत शर्मा, श्रीमती माया शर्मा और श्री उदित शर्मा के पक्ष में राजस्व विभाग द्वारा जारी जीवित सदस्य प्रमाणपत्र के आधार पर मालिक एवं कब्जेदार होने का दावा किया है अब श्री भरत शर्मा, श्रीमती माया शर्मा और श्री उदित उक्त संपत्ति को श्री अभिनव श्रीवास्तव और श्रीमती नम्रता श्रीवास्तव को बेच दी हैं और श्री अभिनव श्रीवास्तव और श्रीमती नम्रता श्रीवास्तव ने वित्तीय सहायता के लिए आईडीबीआई बैंक लिमिटेड से सम्पर्क किया है इसलिए उक्त बैंक के पास गिरवी रखना होगा। हम यह सार्वजनिक सूचना देते हैं कि यदि किसी व्यक्ति को स्वामित्व और/या उक्त संपत्ति के किसी भी हिस्से को आईडीबीआई बैंक लिमिटेड के पक्ष में बंधक बनाने के संबंध में कोई दावा/आपत्ति है तो नीचे दिए गए उल्लेखित पते पर दस्तावेजी साक्ष्य के साथ अधोहस्ताक्षरी को लिखित रुप में सूचित करने का अनुरोध किया जाता है, ऐसा न करने पर, ऐसे व्यक्तियों के दावे को मुक्त और/या परित्यक्त माना जाएगा और हमारा मुवक्किल उक्त संपत्ति पर ऋण के संवितरण और उसके संबंध में इसे बंधक रखने की प्रक्रिया करेगा।
For Juris NextGen Law Offices
E-56, LGF, Greater Kailash Enclave Part-1
New Delhi-110048

आम सूचना
सर्व साधारण को यह सूचित किया जाता है कि दुकान नं. 63, सेक्टर-49, सैनिक कॉलोनी, फरीदाबाद जो कि श्री भगवत प्रसाद पुत्र श्री निरंजन सरूप के नाम से अलॉट थी, वो दुकान मेरे मुवक्किल श्रीमती अरूणा पुत्री श्री डालचंद के नाम एक रजिस्टर्ड वसीयत के द्वारा ट्रान्सफर की जा रही है। यदि किसी व्यक्ति को इस बारे में कोई एतराज है तो वो अपना एतराज लिखित में दस्तावेजों के साथ इस नोटिस के 30 दिनों के अंदर सम्पदा अधिकारी, नगर निगम, फरीदाबाद को भेज सकता है। उसके बाद इस प्रकार का कोई भी क्लेम व्यर्थ और शून्य माना जायेगा और मेरे मुवक्किल की किसी प्रकार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।
विकास ठुकराल
एडवोकेट

PUBLIC NOTICE
Notice is hereby given that my client Rajender Khandelwal & Sangeeta Khandelwal are in process to purchase the Plot No. 29-Q, having land area measuring 76 Sq. Yds., pertaining to the Khasra No. 1017/342, situated at Gali No. 4, Industrial Estate, New Rohtak Road, in the area of Village Sadhora Khurd, Delhi (availing loan from PCHFL) from Mrs. Balwinder Kaur, who acquired the same vide Relinquishment Deed dated 09-10-2023 (doc. 11751) executed by Mr. Sukhwant Singh, Mr. Kulwant Singh and Mrs. Ravinder Kaur
All person/s having any claim against or in respect of the said Property, or any part thereof, by way of sale, exchange, mortgage (equitable/registered or otherwise), gift, trust, inheritance, family arrangement, maintenance, bequest, partnership, possession, lease, sublease, tenancy, license, lien, charge, pledge, easement or otherwise howsoever, are hereby requested to notify the same in writing to us with supporting documentary evidence at the address mentioned below within 7 days from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person or persons will be considered to have been waived and/or abandoned.
Kamal Kant Gupta (Advocate)
Unit No. FF-2, First floor, Mahaluxmi Metro Tower Sec-4, Vaishali, Gzb., U.P., Mob. 9810063351

PUBLIC NOTICE
To, be known to all that my client, SMT. ASHA KATYAL W/O LATE SHRI NARENDER KUMAR KATYAL R/O FLAT NO.73, THIRD FLOOR, POCKET-B, SUKHDEV VIHAR, NEW DELHI-110025, is the owner of DDA SFS FLAT NO.73, ON THIRD FLOOR, POCKET-B, SITUATED AT SUKHDEV VIHAR, NEW DELHI-110025, VIDE DDA FILE NO.F.78(507)82/SV/II. The original. documents i.e. Original DEMAND LETTER, FIFTH & FINAL DEMAND LETTER, POSSESSION LETTER, NOC FOR WATER & ELECTRICITY CONNECTION and SITE POSSESSION SLIP of the above said property have been lost or misplaced by my client and is not traceable inspite of his best efforts. An F.I.R./NCR to this effect has been lodged in the Police Station, Crime Branch, Delhi (LR No.1036684/2023 dated 18.10.2023). Any person(s) claiming any rights, interest, having any objection or found in possession of original documents, may write/contact with above named within 15 days from the person at above Address/Phone No.. .... date of publication of this notice. The person claiming any right, interest, objection with respect to this property, can personally inform or write to Deputy Director (LAB Housing) SFS or Director (Housing), Vikas Sadan, New Delhi.
Naveen Aggarwal (Advocate)
Ch.No. M-7, Near SBI, Western Wing, Tis Hazari Court, Delhi-54

PUBLIC NOTICE
Public at large is hereby informed that my client(s)MR.BINOD KUMAR SINGH is interest to buy FREE-HOLD PROPERTY BEARING FLAT NO.7012, on FIRST FLOOR, with SCOOTER GARAGE, CAT.SFS.III, situated at SECTOR-D, POCKET-7, VASANT KUNJ, NEW DELHI-110070 (hereinafter called the said property) vide DDA File No.F.126(1461)84/SFS/VK/III, presently owned and possessed by SMT.POONAM KHATRI W/o Late Sh.Anil Khatri and SH.AMIT KHATRI S/o Late Sh.Anil Khatri by virtue of CONVEYANCE DEED dated 26.04.2016 Reg.No.5963, Book No.1, Volume No.5871, Page no.194-196, in the office of Sub-Registrar-VII, New Delhi. As per the owners version the said property is free from all sorts of encumbrances & disputes.
It is hereby notified that any person or entity, firm, company, bank, HUF, Financial institution etc. having any claim, charge, interest, lien or claim in the above said property of any nature, whatsoever, is hereby required to make known in writing alongwith documentary proof for his/her/their claim either to us or our client within 02 weeks from the date of the present publication, failing which any further or future claim, objection/s shall be rejected and my client (prospective buyer/s) shall conclude the transfer/Sale transaction proposed to be executed in his/her/their favour or in the name of his/her/their nominees and the ownership of our client (prospective buyer/s) deemed to be clear and marketable without any defect, encumbrance, flaw and impediment, whatsoever.
FOR S.K. ASSOCIATES
ADVOCATES & CONSULTANTS
Ch. No. 537, Sec-10, Dwarka Court Complex
New Delhi-110075
M. No. 9899445060

PUBLIC NOTICE
Notice is hereby given that my client Bhu Parkash and Atul Kumar are the owners of House no. A720 area measuring 125 sq. Yards of Plot no. 68, Part of Khasra no. 1184/6, 1186/7, situated in the area of Village of Sadhora Khurd in Shastri Nagar, in Block D-2, Delhi State, Delhi having acquired the same after the death of Chatar Lal vide will dated 16.09.1988 (doc. No.15436) and whereas chatar lal purchased the same vide Sale Deed dated 05.05.1967 (doc. no. 4820.) executed by Avtar Singh, Kuldip Singh Datta
All person/s having any claim against or in respect of the said Property, or any part thereof, by way of sale, exchange, mortgage (equitable/registered or otherwise), gift, trust, inheritance, family arrangement, maintenance, bequest, partnership, possession, lease, sublease, tenancy, license, lien, charge, pledge, easement or otherwise howsoever, are hereby requested to notify the same in writing to us with supporting documentary evidence at the address mentioned below within 7 days from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person or persons will be considered to have been waived and/or abandoned.
Kamal Kant Gupta (Advocate)
Unit No. FF-2, First floor, Mahaluxmi Metro Tower Sec-4, Vaishali, Gzb., U.P., Mob. 9810063351

आईडी कार्ड खोने के संबंध में
सार्वजनिक सूचना
समस्त जन साधारण को सूचना दी जाती है कि आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड द्वारा तेजश्री मल्होत्रा को जारी एक आईडी कार्ड : आईडी कार्ड नंबर 2347597 दिनांक 17-10-2023 को पूर्वा. 10.00 बजे कहीं खो गया/गुम हो गया है। किसी भी व्यक्ति, जिसको उक्त आईडी कार्ड मिले, से उक्त आईडी कार्ड रिलायबल डेट मैनेजमेंट लीगल सर्विसेज, प्लॉट नंबर 6, कार्यालय नंबर 101, गली नंबर 3, ईस्ट गुरू अंगद नगर, दिल्ली-110092 को लौटाने का अनुरोध किया जाता है।
अतएव, आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के सभी ग्राहकों को एतद्द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि वे उक्त आईडी कार्ड नंबर 2347597 धारक किसी भी अनधिकृत व्यक्ति को कोई भुगतान नही करें।
कृपया आगे सूचित हों कि उक्त आईडी कार्ड धारक किसी भी व्यक्ति को कोई भुगतान करने वाला व्यक्ति ऐसा अपनी स्वयं की लागत, जोखिम और खतरे पर ऐसा करेगा तथा आईसीआईसीआई बैंक किसी भी भुगतान के लिए बाध्य नहीं होगा तथा/अथवा जिम्मेदार नहीं होगा..................
आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड नई दिल्ली
वास्ते :-
आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड
एस.डी
तिथि : 19-10-2023
स्थान : दिल्ली

पायनियर
नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 19 अक्टूबर, 2023

खेती में नए प्रयोग के लिए जाने जाते हैं बिहार के किसानः राष्ट्रपति

भाषा। पटना

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को कहा कि बिहार के किसान खेती में नए प्रयोगों के लिए जाने जाते हैं, वहीं उन्होंने कृषि के परंपरागत तरीकों को बचाए रखा है। राष्ट्रपति ने इसे आधुनिकता के साथ परंपरा के सामंजस्य का अच्छा उदाहरण बताया। राष्ट्रपति ने यहां बिहार का चौथा कृषि रोड मैप (2023-2028) का लोकार्पण करते हुए कहा, आज कृषि बिहार की लोक-संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। बटोहिया और बिदेसिया से लेकर कटनी और रोपनी गीतों तक की बिहार की लोक संस्कृति और साहित्य की यात्रा ने पूरे विश्व में अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने कहा, मैंने सूरीनाम की अपनी यात्रा के दौरान वहां पुरातन बिहार की झलक देखी। विशाल भौगोलिक दूरी और अलग-अलग टाईम जोन में होने के बावजूद बिहार से गए लोगों ने जहां एक ओर अपनी संस्कृति और परंपरा को संजोए रखा वहीं वे स्थानीयता में भी रच-बस गए हैं। राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, बिहार की सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। मानव सभ्यता के विकास और कृषि के बीच घनिष्ठ संबंध रहा है। कृषि बिहार की अर्थव्यवस्था का आधार है। कृषि और संबद्ध क्षेत्र में न केवल राज्य का लगभग आधा कार्यबल लगा हुआ है बल्कि राज्य जीडीपी में भी इसका अहम योगदान है। इस प्रदेश की उन्नति के लिए कृषि क्षेत्र का सर्वांगीण विकास अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा, यह प्रसन्नता का विषय है कि बिहार सरकार वर्ष 2008 से ही कृषि रोड मैप का क्रियान्वयन कर रही है। मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि पिछले तीन कृषि रोड मैप के क्रियान्वयन के फलस्वरूप राज्य में धान, गेहूं और मक्का की उत्पादकता लगभग दुगनी हो गई है। साथ ही बिहार मशरूम, शहद, मखाना और मछली उत्पादन में भी अग्रणी राज्यों में शामिल हो गया है।

राष्ट्रपति ने कहा, बिहार के किसान खेती में नए-नए प्रयोगों को आजमाने और अपनाने के लिए जाने जाते हैं।

पटना में एक कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार

यही वजह है कि नोबेल पुरस्कार से सम्मानित एक अर्थशास्त्री ने नालंदा के किसानों को वैज्ञानिकों से भी महान कहा था। यह प्रसन्नता की बात है कि आधुनिक पद्धति को अपनाते हुए भी यहां के किसानों ने कृषि के परंपरागत तरीकों और अनाज की किस्मों को बचाए रखा है। उन्होंने कहा कि जैविक उत्पादों की मांग देश-विदेश में तेजी से बढ़ रही है और बिहार के किसानों को इसका लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर खुशी जताई कि बिहार सरकार ने जैविक खेती के लिए गंगा नदी के तटीय जिलों में जैविक कोरिडोर बनाया है। मुर्मू ने कहा कि बिहार में अधिकांश किसान सीमांत किसान हैं और उनके लिए आधुनिक यंत्रों का उपयोग आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक नहीं होता है। उन्होंने कहा कि इसलिए कृषि और पशुपालन को एक दूसरे का पूरक बनाया जाना चाहिए जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। राष्ट्रपति ने कहा, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है। यह पूरी मानवता के अस्तित्व के लिए संकट है। लेकिन इसका सबसे ज्यादा प्रभाव गरीब और वंचित लोगों पर पड़ता है। हाल के वर्षों में बिहार में बहुत कम बारिश हुई है। उन्होंने कहा कि बिहार एक जल-सम्पन्न राज्य माना जाता रहा है और नदियां एवं तालाब इस राज्य की पहचान रही हैं। उन्होंने कहा कि इस पहचान को बनाए रखने के लिए जल संरक्षण पर ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मौजूदा कृषि पद्धति में बदलाव लाकर जैव विविधता को बढ़ावा दिया जा सकता है और जल स्रोतों का दोहन कम किया जा सकता है। राष्ट्रपति ने कहा, मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि बिहार की एक प्रमुख फसल मक्के से इथेनॉल का उत्पादन किया जा रहा है। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने, पर्यावरण संरक्षण और देश की ऊर्जा सुरक्षा की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि बिहार भगवान बुद्ध और अशोक की धरती है, जिन्होंने सम्पूर्ण मानवता को शांति और सद्भाव का पाठ पढ़ाया। उन्होंने कहा कि इस पावन धरती के वासी से अपेक्षा की जाती है कि वे ऐसे समाज का आदर्श प्रस्तुत करें जिसमें द्वेष और कलह की कोई गुंजाइश नहीं हो।उन्होंने कहा कि विकसित भारत के सपने को पूरा करने में इस प्रदेश का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन इस सपने को सच्चाई में बदलने के लिए हमें मानव निर्मित संकीर्णताओं से बाहर निकलना होगा। राष्ट्रपति ने कहा कि बिहार को विकसित राज्य बनाने के लिए समेकित विकास के अलावा कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा कि राज्य के नीति-निर्माताओं और जनता को बिहार की प्रगति के लिए एक रोडमैप निर्धारित करना होगा और उस पर चलना होगा।

सरकार ने चीनी निर्यात पर लगे अंकुश 31 अक्टूबर से आगे बढ़ाए

भाषा। नई दिल्ली

सरकार ने चीनी निर्यात पर लगे अंकुश को इस साल 31 अक्टूबर से आगे अगले आदेश तक बढ़ा दिया है। इस कदम का मकसद त्योहारी सीजन के दौरान घरेलू बाजार में चीनी की बेहतर उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इससे पहले चीनी निर्यात पर इस साल 31 अक्टूबर तक के लिए अंकुश लगाए गए थे। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने बुधवार को एक अधिसूचना में कहा, चीनी (कच्ची चीनी, सफेद चीनी, परिष्कृत चीनी और जैविक चीनी) के निर्यात पर अंकुश 31 अक्टूबर, 2023 से आगे बढ़ा दिया गया है। यह अगले आदेश तक लागू रहेगा। अन्य शर्तों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। हालांकि अधिसूचना में यह स्पष्ट किया गया है कि ए अंकुश सीएक्सएल और टीआरक्यू शुल्क छूट कोटा के तहत यूरोपीय संघ और अमेरिका को भेजी जाने वाली चीनी पर लागू नहीं होंगे। सीएक्सएल और टीआरक्यू (शुल्क दर कोटा) के तहत एक निश्चित मात्रा में चीनी का निर्यात किया जाता है। अंकुश वाली श्रेणी के तहत किसी निर्यातक को चीनी निर्यात करने के लिए सरकार से लाइसेंस या अनुमति लेने की जरूरत होती है। भारत दुनिया में चीनी का सबसे बड़ा उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है। सरकार पूरे देश में चीनी की स्थिति की निगरानी रख रही है। इसमें चीनी उत्पादन, उपभोग, निर्यात, थोक और खुदरा बाजारों में मूल्य रुझान शामिल हैं। भारतीय चीनी मिल संघ (इस्मा) का अनुमान है कि चालू विपणन सत्र 2023-24 में चीनी का उत्पादन 317 लाख टन रहेगा। उत्पादन का यह आंकड़ा एथनॉल के लिए 45 लाख टन अलग करने के बाद का है। घरेलू मांग 280 लाख टन रहने का अनुमान है। वहीं चीनी का शुरुआती स्टॉक 55 लाख टन रहेगा।

क्विक न्यूज

राकांपा के प्रतिद्वंद्वी गुटों ने दिल्ली में अपने अलग-अलग कार्यालय खोले

नई दिल्ली (भाषा)। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के दोनों गुटों ने राष्ट्रीय राजधानी में अलग-अलग कार्यालय खोले हैं क्योंकि राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा गंवाने के बाद राकांपा को रविशंकर शुक्ला लेन स्थित मुख्यालय को खाली करना पड़ा था। राकांपा के अजीत पवार गुट ने 79, नॉर्थ एवेन्यू में अपने नए केंद्रीय कार्यालय का उद्घाटन किया, जहां कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल ने नवरात्रि के मौके पर हवन किया। पटेल ने कहा कि अजित पवार जल्द ही पार्टी की एक महत्वपूर्ण बैठक की अध्यक्षता करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी का दौरा करेंगे। हाल में, शरद पवार नीत गुट ने 81, लोधी एस्टेट में अपना केंद्रीय कार्यालय खोला था। गोवा, मणिपुर और मेघालय में चुनाव हारने के बाद अप्रैल में राकांपा ने अपना राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा गंवा दिया था।

मधुमेह रोगियों के लिए निश्चित खुराक वाली दवा पेश

नई दिल्ली (भाषा)। ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स ने मधुमेह के इलाज के लिए तीन-निश्चित खुराकों (एफडीसी) वाली एक दवा पेश की है। मुंबई की इस दवा कंपनी ने बुधवार को कहा कि जिटा ब्रांड नाम वाली इस दवा में टेनेलिग्लिप्टिन, डेपाग्लिफ्लोजिन और मेटफॉर्मिन का संयोजन किया गया है। कंपनी का दावा है कि यह दवा टाइप-2 मधुमेह रोगियों में ग्लाइसेमिक को नियंत्रण में रखने में मदद करेगी। ग्लाइसेमिक से पता चलता है कि भोजन में मौजूद कार्बोहाइड्रेट से खून में शर्करा की मात्रा किस अनुपात में बढ़ती है। ग्लेनमार्क ने इस दवा की कीमत 14 रुपए प्रति टैबलेट (प्रति दिन) रखी है। इससे मधुमेह रोगियों के लिए इलाज की दैनिक लागत 30 प्रतिशत तक कमी आने का दावा कंपनी ने किया है।

कुकी जो महिलाओं ने राज्यपाल उइके को रास्ते में रोका, अलग प्रशासन की मांग की

चुराचांदपुर(भाषा)। मणिपुर की राज्यपाल अनुसूइया उइके को चूराचांदपुर कस्बे में वॉल ऑफ रिमेंम्ब्रेंस के पास कुकी जो समुदाय की कुछ महिलाओं ने सुबह करीब 10.40 बजे रोक लिया और अपने लिए अलग प्रशासन की मांग की। पुलिस ने यह जानकारी दी। राज्यपाल जिले में ईसीए चर्च सोंगगेल और ईसीए चर्च तुइबोंग में स्थित दो राहत शिविरों का दौरा करने जा रही थीं, तभी उन्हें रोका गया। राज्य में गत तीन मई को भड़की जातीय हिंसा के बाद से इन शिविरों में सैकड़ों कुकी लोगों ने शरण ले रखी है। उइके ने रास्ते में महिलाओं को देखा तो वह अपनी गाड़ी से उतरीं और उन्हें बताया कि वह राहत शिविरों में लोगों की स्थिति देखने आई थीं। राज्यपाल ने कहा कि वह देखना चाहती थीं कि पिछले चार महीने से राहत शिविरों में रहने वाले लोगों के लिए पर्याप्त चिकित्सा आपूर्ति हो पा रही है या नहीं। एक अधिकारी के अनुसार, राज्यपाल ने महिलाओं से कहा कि उन्होंने अनेक मंचों पर कुकी जो समुदाय के लोगों के मुद्दे को उठाया है, जिसके बाद उन्हें जाने दिया गया। चूराचांदपुर के उपायुक्त धरुन कुमार ने पीटीआई-भाषा से कहा कि राहत शिविरों की ओर जा रहीं राज्यपाल को रास्ते में रोकना सही बात नहीं है। उन्होंने कहा, यदि कोई आपके इलाके में आता है तो आपकी जिम्मेदारी है कि उनका स्वागत करें। राज्यपाल जनता के लिए कुछ अच्छा करना चाहती हैं और उनके साथ हुआ व्यवहार दुर्भाग्यपूर्ण है।

धर्मस्थलों के प्रबंधन का अधिकार देने के अनुरोध वाली याचिका पर विचार करने से न्यायालय का इनकार

नई दिल्ली (भाषा)। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को उस जनहित याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया, जिसमें हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख धर्म के अनुयायियों को मुस्लिमों, पारसियों और ईसाइयों की तरह अपने धार्मिक स्थलों की स्थापना, प्रबंधन और रखरखाव का अधिकार देने का अनुरोध किया गया था। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि मामला विधायिका के अधिकार क्षेत्र में आता है और अदालत इस पर विचार नहीं करना चाहेगी। न्यायालय ने याचिका दायर करने वाले अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय से कहा, उचित याचिका दायर कीजिए। ए कैसे आवेदन हैं? क्या इस तरह की राहत दी जा सकती है? इस याचिका को वापस लीजिए और याचिका में ऐसी प्रार्थना कीजिए जिसे पूरा किया जा सके। यह प्रचार के लिए दाखिल याचिका लगती है। यह विचारणीय नहीं है। उपाध्याय ने अपनी याचिका में धार्मिक और परमार्थ संस्थानों के लिए समान संहिता की मांग की थी और देशभर में हिंदू मंदिरों पर सरकारी प्राधिकारों के नियंत्रण का उल्लेख करते हुए कहा कि कुछ धार्मिक आस्था वाले लोगों को अपने संस्थानों के प्रबंधन की अनुमति होती है। अधिवक्ता अश्विनी कुमार दुबे के माध्यम से दायर याचिका में कहा गया कि अनुच्छेद 26 के तहत संस्थानों का प्रबंधन करना सभी समुदायों के लिए नैसर्गिक अधिकार है। याचिका के अनुसार, लेकिन हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख धर्म के लोगों को यह विशेषाधिकार नहीं दिया गया है। इसमें कहा गया कि देश में करीब नौ लाख हिंदू मंदिरों में से करीब चार लाख मंदिर सरकार के नियंत्रण में हैं। उपाध्याय की याचिका के अलावा शीर्ष अदालत ने हिंदू संत स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती की याचिका पर भी विचार करने से इनकार कर दिया जिसमें इसी तरह के निर्देश देने की मांग की गई थी।

गोली लगने से सेना के जवान की मौत, रियासी में अंतिम संस्कार किया गया

पुंछ, जम्मू (भाषा)। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर तैनात सेना के एक जवान की संदिग्ध हालात में गोली लगने से मौत हो गई। रियासी जिले में बुधवार को पूरे सैन्य सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। अधिकारियों ने बताया कि रिधम शर्मा (22) नियमित ड्यूटी के दौरान बालाकोट क्षेत्र के सीमावर्ती इलाके में घायल अवस्था में मिले। उनको गोली लगी थी। उन्होंने बताया कि मंगलवार को चिकित्सा केंद्र में उन्होंने दम तोड़ दिया। शव का पोस्टमार्टम कराकर पुलिस को सौंप दिया गया। शर्मा रियासी जिले के सेरवाड गांव के निवासी थे।

आठ उच्च न्यायालयों में 17 न्यायाधीशों की नियुक्ति

नई दिल्ली (भाषा)। दिल्ली सहित आठ उच्च न्यायालयों में बुधवार को 11 न्यायिक अधिकारियों और छह अधिवक्ताओं को न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया। नई नियुक्तियों की घोषणा कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने एक्स पर की। चार अधिवक्ताओं को आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय में अतिरिक्त न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया जबकि तीन न्यायिक अधिकारियों को बंबई उच्च न्यायालय में अतिरिक्त न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया है। इसी तरह, तीन न्यायिक अधिकारियों को केरल उच्च न्यायालय में अतिरिक्त न्यायाधीश और दो अन्य को दिल्ली उच्च न्यायालय में अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया। छत्तीसगढ़ और कर्नाटक उच्च न्यायालयों में एक-एक वकील को अतिरिक्त न्यायाधीश बनाया गया। एक-एक न्यायिक अधिकारी को गुजरात उच्च न्यायालय और त्रिपुरा उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया। एक अन्य न्यायिक अधिकारी को त्रिपुरा उच्च न्यायालय का अतिरिक्त न्यायाधीश बनाया गया।

कॉलेजियम ने उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के रूप में 13 वकीलों के नाम की सिफारिश की

नई दिल्ली (भाषा)। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व वाले उच्चतम न्यायालय कॉलेजियम ने विभिन्न उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के रूप में 13 अधिवक्ताओं के नामों की सिफारिश की है। कॉलेजियम में न्यायमूर्ति संजय किशन कौल और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना भी शामिल हैं। इसने गुवाहाटी उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के रूप में अधिवक्ता एन उन्नी कृष्णन नायर और कौशिक गोस्वामी के नामों की सिफारिश की।

शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर कहा गया, 29 मई 2023 को, गुवाहाटी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने अपने दो वरिष्ठतम सहयोगियों के परामर्श से उपरोक्त अधिवक्ताओं को उस उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत करने की सिफारिश की। हमने असम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम और नगालैंड राज्यों के संवैधानिक अधिकारियों से प्राप्त विचारों पर विधिवत ध्यान दिया है। वेबसाइट पर अपलोड किए गए प्रस्ताव में कहा गया है, उच्च न्यायालय में पदोन्नति के लिए उपरोक्त नामित व्यक्तियों की योग्यता और पात्रता का पता लगाने के लिए, हमने गुवाहाटी उच्च न्यायालय के मामलों से परिचित अपने सहयोगियों से परामर्श किया है। कॉलेजियम ने कहा कि उच्च न्यायालय में पदोन्नति के लिए उपरोक्त उम्मीदवारों की योग्यता और पात्रता का आकलन करने के उद्देश्य से उसने फ़ाइल में न्याय विभाग द्वारा की गई टिप्पणियों के साथ-साथ कुछ उम्मीदवारों के खिलाफ प्राप्त शिकायतों सहित रिकॉर्ड पर रखी गई सामग्री की पड़ताल और मूल्यांकन किया है। कॉलेजियम ने एक अन्य फैसले में, उत्तराखंड उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति के लिए अधिवक्ता सिद्धार्थ साह और आलोक माहरा के नामों की सिफारिश की है। इसने पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के रूप में नियुक्ति के लिए वकील हरमीत सिंह ग्रेवाल, दीपिंदर सिंह नलवा, सुमीत गोयल, सुदीप्ति शर्मा और कीर्ति सिंह के नामों की भी सिफारिश की है। कॉलेजियम ने मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति के लिए वकील विनय सराफ, विवेक जैन, आशीष श्रोती और अमित सेठ के नामों की भी सिफारिश की है। इसने कहा, 11 नवंबर, 2022 को मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने अपने दो वरिष्ठतम सहयोगियों के परामर्श से उपरोक्त सिफारिश की। हमने उपरोक्त उम्मीदवारों की उपयुक्तता को लेकर फाइल में दर्ज राज्य के मुख्यमंत्री और राज्यपाल के विचारों पर विधिवत ध्यान दिया है।

राहुल को राजनीति का कोई ज्ञान नहीं: हिमंत

गुवाहाटी (भाषा)। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने वंशवाद की राजनीति पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी की हालिया टिप्पणी को लेकर उनकी आलोचना की और उन्हें एक अनपढ बच्चा बताया, जिसे राजनीति के बारे में कोई ज्ञान नहीं है। गांधी ने मंगलवार को चुनावी राज्य मिजोरम में संवाददाता सम्मेलन के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बेटे के भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में पद का जिक्र किया था। गांधी ने एक प्रश्न पर कहा था, अमित शाह का बेटा क्या करता है? वास्तव में वह क्या कर रहा है? राजनाथ सिंह का बेटा क्या करता है? मैंने सुना था कि अमित शाह का बेटा भारतीय क्रिकेट को संचालित कर रहा है...भाजपा के नेताओं को देखें और खुद से सवाल पूछें कि उनके बच्चे क्या कर रहे हैं? उनके कई बच्चे वंशवाद से आए हैं। शर्मा ने यहां कहा, अमित शाह का बेटा कैसे सामने आया? वह भारतीय जनता पार्टी में नहीं हैं, लेकिन राहुल का पूरा परिवार राजनीति में है...राहुल को लगता है कि बीसीसीआई भाजपा की एक शाखा है। मुझसे उनके बारे में ज्यादा मत पूछिए, वह एक अनपढ बच्चा हैं। शर्मा ने कहा, क्या राजनाथ सिंह के बेटे, जो अभी यूपी में विधायक हैं, की तुलना प्रियंका गांधी से की जा सकती है? क्या वह भाजपा को नियंत्रित करते हैं? मुख्यमंत्री ने कहा कि राहुल को नए लोगों को मौका देना चाहिए, फिर वंशवाद की राजनीति पर बात करनी चाहिए। शर्मा ने कहा, राहुल को राजनीति के बारे में कोई ज्ञान नहीं है और यह अहसास नहीं है कि वह वंशवाद की राजनीति के मूल में हैं। एक परिवार से हर कोई राजनीति में रहा है- मां, पिता, पड़दादा, बहन, भाई...और पार्टी को नियंत्रित करते रहे हैं।

अनिश्चितताओं के लिए सदैव तैयार रहे सेना: राजनाथ

भाषा। नई दिल्ली

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को सेना की अभियान संबंधी तैयारियों के उच्च मानकों के लिए उसकी तारीफ की और कहा कि युद्ध संबंधी तैयारी एक सतत प्रक्रिया होनी चाहिए और सेना को हमेशा अनिश्चितताओं के लिए तैयार रहना चाहिए। सेना के शीर्ष कमांडरों को संबोधित करते हुए सिंह ने पूर्वी लद्दाख के हालात का जिक्र किया और किसी भी आकस्मिक स्थिति से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए सेना पर पूरा विश्वास जताया। उन्होंने यह भी कहा कि विवाद के शांतिपूर्ण समाधान के लिए दोनों पक्षों के बीच वार्ता सभी स्तरों पर जारी रहेगी।

रक्षा मंत्री ने सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) के प्रयासों की सराहना की, जिसने कठिन परिस्थितियों में काम करते हुए पश्चिमी और उत्तरी दोनों सीमाओं पर सड़क नेटवर्क में अतुलनीय सुधार किया है। रक्षा मंत्री ने कहा कि वर्तमान जटिल और कठिन वैश्विक परिस्थितियां वैश्विक स्तर पर

सभी को प्रभावित करती हैं। उन्होंने सेना के शीर्ष अधिकारियों का आह्वान किया कि अप्रत्याशित स्थितियों के अनुरूप योजना तैयार करें, रणनीति बनाएं और निपटने की तैयारी करें। उन्होंने कहा कि गैर-परंपरागत युद्ध, भविष्य के पारंपरिक युद्धों का हिस्सा होगा और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे संघर्षों में भी यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो रहा है।

दिल्ली में सोमवार से शुरू हुए पांच दिवसीय सैन्य कमांडर सम्मेलन में चीन के साथ लगी सीमाओं समेत अन्य मोर्चों पर संभावित राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों पर विचार करते हुए सेना की समग्र लड़ाकू क्षमताओं को मजबूत करने पर बातचीत की जा रही है। रक्षा मंत्री ने कहा कि आत्मनिर्भरता के माध्यम से हर जवान के लिए शस्त्रों का आधुनिकीकरण सरकार के ध्यान देने वाला प्रमुख बिंदु है। उन्होंने सैन्य कमांडरों को संबोधित करते हुए कहा, रक्षा कूटनीति, स्वदेशीकरण, सूचना युद्ध, रक्षा बुनियादी ढांचे और बल आधुनिकीकरण से संबंधित मुद्दों पर हमेशा ऐसे मंच पर विचार किया जाना चाहिए। सिंह ने कहा कि राष्ट्र को अपनी सेना पर गर्व है और सरकार सेना-सुधार और क्षमता-आधुनिकीकरण की राह पर आगे बढ़ने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खतरे से निपटने में केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलापुलिस बलों और सेना के बीच उत्कृष्ट तालमेल की सराहना की। सिंह ने हाल ही में हुए एशियाई खेल में सेना के खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन के लिए भारतीय सेना की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि पूरा देश सेना को सबसे विश्वसनीय और प्रेरणादाई संगठनों में से एक के रूप में देखता है।

नक्सली देश के विकास के विरोधी: अमित शाह

नई दिल्ली (भाषा)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को कहा कि वामपंथी उग्रवादी और उनकी विचारधारा देश के विकास और उज्ज्वल भविष्य के खिलाफ हैं। शाह ने यहां जनजातीय युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत 200 जनजातीय युवाओं के साथ संवाद किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 200 करोड़ रुपए की लागत से देश के स्वाधीनता संग्राम में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में देशभर में 10 जनजातीय संग्रहालय बनाने का निर्णय किया है। उन्होंने कहा कि हिंसा से रोजगार नहीं मिल सकता और विकास तथा बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए समाज की मुख्यधारा से जुड़ना जरूरी है। उन्होंने कहा, वामपंथी उग्रवादी और उनकी विचारधारा देश के विकास और उज्ज्वल भविष्य के खिलाफ हैं। गृह मंत्री ने कहा कि जो लोग वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में मोबाइल टावर, सड़कें और अन्य आवश्यक सुविधाएं नहीं चाहते हैं, वे युवाओं के उज्ज्वल भविष्य की राह में बाधाएं पैदा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आदिवासी युवाओं को देश से वामपंथी उग्रवाद के विचार को खत्म करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। शाह ने कहा कि जनजातीय समुदाय के लोगों के लिए बहुत सारे अवसर उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा कि जनजातीय युवाओं की जिम्मेदारी है कि वे न तो गलत रास्ते पर चलें और न ही दूसरों को ऐसा करने दें।

गृह मंत्री ने कहा कि जनजातीय युवाओं को देश भ्रमण के बाद अपने घर वापस जाकर सभी को बताना चाहिए कि देश आज हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है और जनजातियों के लिए हर क्षेत्र में अपार संभावनाएं मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि यह गर्व की बात है कि एक जनजातीय महिला द्रौपदी मुर्मू देश की राष्ट्रपति हैं।

बच्चों में बहरेपन को लेकर समाज में जागरूकता पैदा की जानी चाहिएः भागवत

नागपुर (भाषा)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने बुधवार को कहा कि बच्चों में बधिरता (बहरेपन) के मामलों को लेकर समाज में जागरूकता पैदा की जानी चाहिए। भागवत ने यहां एक निजी अस्पताल द्वारा आयोजित बधिरता जागरूकता कार्यक्रम में यह बात कही। उन्होंने कहा कि बच्चे समाज का भविष्य होते हैं, और इसलिए समाज को बच्चों में बहरेपन के मुद्दे के बारे में व्यापक जानकारी और जागरूकता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि संघ भी इस मिशन में मदद करेगा। भागवत ने आगे कहा कि बच्चों में बहरेपन के पीछे के कारणों पर शोध किया जाना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान आंख-कान-गला (ईएनटी) रोग विशेषज्ञ डॉ. मिलिंद किर्तने ने कहा कि कॉक्लियर इम्प्लांट (जो सुनने में सुधार कर सकता है) से संबंधित उपकरणों पर जीएसटी की दर काफी ज्यादा है और भागवत को सरकार से इस मुद्दे पर गौर करने के लिए कहना चाहिए।

अडाणी मुद्दे पर राहुल के आरोपों के बाद भाजपा ने गांधी परिवार को घेरा

नई दिल्ली (भाषा)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कोयला आयात में अडाणी समूह द्वारा कीमतें बढ़ा-चढ़ाकर दिखाए जाने की खबरों पर सरकार के खिलाफ राहुल गांधी के आरोपों को लेकर बुधवार को उन पर पलटवार किया। भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने दावा किया कि उद्योग समूह से जुड़ा मामला उच्चतम न्यायालय में है और इस मुद्दे पर राहुल गांधी के बयान दर्शाते हैं कि उन्हें संविधान या उच्चतम न्यायालय पर भरोसा नहीं है। गांधी परिवार को दुनिया में सबसे भ्रष्ट परिवार करार देते हुए भाटिया ने संवाददाताओं से कहा कि राहुल गांधी स्वयं नेशनल हेराल्ड मामले में जमानत पर हैं।

भाजपा नेता ने कहा कि पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष अपने खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों पर या अपने बहनोई रॉबर्ट वाद्रा के कथित घोटालों के बारे में कभी नहीं बोलते। इससे पहले राहुल गांधी ने आज दिन में ब्रिटिश समाचार पत्र फाइनेंशियल टाइम्स में प्रकाशित अडाणी समूह से संबंधित एक खबर का हवाला देकर इस कारोबारी समूह पर कोयले के आयात में ज्यादा कीमत दिखाकर 12,000 करोड़ रुपए की चोरी करने का आरोप लगाया। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से सवाल किया कि अडाणी समूह के खिलाफ लगे आरोपों में जांच क्यों नहीं हो रही है? भाटिया ने इजराइल और हमास के बीच जारी संघर्ष के मुद्दे पर फलस्तीन पर कुछ विपक्षी नेताओं के रुख को लेकर उन पर भी हमला बोला। उन्होंने इजराइल पर हमास चरमपंथियों के हमले के संदर्भ में कहा कि विदेश नीति भारत सरकार का अधिकार क्षेत्र है, लेकिन कुछ विपक्षी दल केवल तुष्टीकरण की राजनीति में रुचि रखते हैं और एक आतंकवादी संगठन की निंदा नहीं कर सकते।

भाटिया ने आरोप लगाया कि कुछ सांसद खुद को देश से ऊपर समझते हैं और उन्होंने देश के हितों की अनदेखी करने वाले बयान दिए। विपक्ष के अनेक नेताओं ने हाल में यहां फलस्तीन के राजदूत से मुलाकात कर फलस्तीनी लोगों के साथ एकजुटता प्रदर्शित की थी और गाजा पर हमलों को लेकर इजराइल की आलोचना की। कांग्रेस कार्य समिति ने इस संबंध में पिछले दिनों एक प्रस्ताव पारित किया था जिसमें हमास के सात अक्टूबर के हमले का कोई संदर्भ नहीं होने पर भाजपा उस पर लगातार निशाना साध रही है। भाटिया ने संवाददाता सम्मेलन में कर्नाटक के मंत्री और कांग्रेस नेता शिवानंद पाटिल पर तेलंगाना में नोट बरसाए जाने का मुद्दा उठाया और विपक्षी दल पर चुनाव में भ्रष्टाचार के पैसे का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया।

इंट्रा मूट कोर्ट प्रतियोगिता का समापन

बाराबंकी। इन्स्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज, श्रीराम स्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी में तीन दिवसीय द्वितीय इन्ट्रा मूट कोर्ट प्रतियोगिता का आज समापन हुआ। इस मौके पर जजों के रूप में आमन्त्रित मुख्य अतिथि पूर्व जिला न्यायाधीश श्रीचंद्र पाठक एवं अन्य पांच लोगों की बेंच ने फाइनल राउंड की विजेताओं का निर्णय लिया। इस प्रतियोगिता में 21 टीमों ने भाग लिया। मूट कोर्ट को-आर्डिनेटर अभिनव मिश्रा ने कुशल संचालन किया। ऋषिकेश, अर्चिता श्रीवास्तव, आदर्श मिश्रा, लक्ष्मण सिंह एवं अन्य 21 लोगों ने टीमों का प्रतिनिधित्व किया। उपरोक्त निर्णायक मंडल एवं चांसलर पंकज अग्रवाल, प्रो. चांसलर पूजा अग्रवाल, एवं वाइस चांसलर प्रो. डीके शर्मा ने बच्चों से संवाद स्थापित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। डायरेक्टर प्रो. रोहित पी साबरन ने अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने विधि के क्षेत्र में क्वालिटी एजुकेशन के लिए संस्था की

प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए कार्यक्रमों की सफलता को यूनिवर्सिटी के सकारात्मक वातावरण का असर बतया और कहा किी बाकी कोर्सेज के प्रैक्टिकल की भांति विधि शिक्षण जगत में मूट कोर्ट ही वास्तविक प्रयोगशाला है जहां से निर्भीक, अनुशासित, व्यावहारिक एवं शिष्टाचार से युक्त कुशल एडवोकेट एवं न्यायाधीशों का निर्माण सम्भव है। उन्होंने संस्था में अध्ययनरत हाल में ही ज्यूडिशियरी परीक्षाओं में सफल 8 छात्र-छात्राओं का उदाहरण छात्रों के सामने रख कर उनसे प्रेरणा लेकर आगे की तैयारी करने का आह्वान किया।

पायनियर
नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 19 अक्टूबर, 2023

न्यूजीलैंड ने अफगानिस्तान को 149 रन से हराया

भाषा। चेन्नई

युवा बल्लेबाज ग्लेन फिलिप्स और कप्तान टॉम लैथम की शतकीय साझेदारी और गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन से न्यूजीलैंड ने बुधवार को यहां अफगानिस्तान को 149 रन से करारी शिकस्त देकर आईसीसी एकदिवसीय विश्व कप में अपनी लगातार चौथी जीत दर्ज की।

न्यूजीलैंड ने अफगानिस्तान के स्पिनरों के सामने कुछ विषम पलों से गुजरने के बावजूद छह विकेट पर 288 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाया। रविवार को गत चैंपियन इंग्लैंड को हराकर टूर्नामेंट का पहला उलटफेर करने वाली अफगानिस्तान की टीम इसके जवाब में 34.4 ओवर में 139 रन पर आउट हो गई।

फिलिप्स ने 80 गेंद पर चार चौकों और इतने ही छक्कों की मदद से 71 रन बनाए। लैथम ने 74 गेंद पर 68 रन बनाए जिसमें तीन चौके और दो छक्के शामिल हैं। इन दोनों ने पांचवें विकेट के लिए 144 रन की साझेदारी की जिससे न्यूजीलैंड आखिरी 10 ओवर में 103 रन जोड़ने में सफल रहा। इन दोनों से पहले विल यंग (64 गेंद पर 54 रन, चार चौके, तीन छक्के) ने भी अर्धशतकीय पारी खेली। अफगानिस्तान की टीम ने किसी भी समय उस तरह का जोश और जज्बा नहीं दिखाया जो उसने इंग्लैंड के खिलाफ दिखाया था। उसका क्षेत्ररक्षण खराब रहा जबकि उसके गेंदबाजों ने न्यूजीलैंड को वापसी का मौका दिया। बल्लेबाजों ने भी जल्दबाजी दिखाई जबकि इस बीच कीवी टीम की गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण शानदार रहा। न्यूजीलैंड की तरफ से मिशेल सैंटनर (39 रन देकर तीन) और लॉकी फर्ग्यूसन (19 रन देकर तीन) सबसे सफल गेंदबाज रहे जबकि ट्रेंट बोल्ट (18 रन देकर दो) ने उनका अच्छा साथ दिया। अफगानिस्तान ने अपने आखिरी चार विकेट आठ गेंद और पांच रन के अंदर गंवाए। न्यूजीलैंड इस जीत से चार मैच में आठ अंक लेकर तालिका में शीर्ष पर पहुंच गया है। अफगानिस्तान ने पहले 10 ओवर में केवल 28 रन बनाए और इस बीच तीन गेंद के अंदर दोनों सलामी बल्लेबाजों रहमनउल्लाह गुरबाज (11) इब्राहिम जादरान (14) विकेट गंवाए। मैट हेनरी की गेंद गुरबाज के बल्ले का किनारा लेकर विकटों में समाई जबकि इब्राहिम ने बोल्ट की गेंद पर कवर में आसान कैच दिया। सैंटनर ने फर्ग्यूसन की गेंद पर कप्तान हसमतउल्लाह शहीदी (29 गेंद पर 08) का स्क्वायर लेग पर एक हाथ से अविश्वसनीय कैच लिया जिससे अफगानिस्तान का स्कोर तीन विकेट पर 43 रन हो गया। रहमत शाह (62 गेंद पर 36) और अजमत ओमारजई (32 गेंद पर 27) ने इसके बाद सतर्कता बरती और चौथे विकेट के लिए 70 गेंद पर 54 रन की साझेदारी की। लैथम ने ऐसे में बोल्ट को गेंद सौंपी और उन्होंने ओमारजई को विकेट के पीछे कैच कराकर कप्तान को निराश नहीं किया। स्पिनर रचिन रविंद्र ने रहमत शाह का अपनी ही गेंद पर कैच लेकर और सैंटनर ने अनुभवी मोहम्मद नबी (07) को बोल्ड करके अफगानिस्तान की उम्मीदों पर तुषारापात कर दिया। इसके बाद अफगानिस्तान की पारी सिमटने में देर नहीं लगी। इससे पहले अफगानिस्तान का क्षेत्ररक्षण अच्छा नहीं रहा और उसने कम से कम पांच कैच टपकाए। उसकी तरफ से अजमत ओमारजई और नवीन उल हक ने दो-दो विकेट लिए।

न्यूजीलैंड के लिए शुरूआत अनुकूल नहीं रही। पहले उसने टॉस गंवाया और फिर सातवें ओवर में फॉर्म में चल रहे सलामी बल्लेबाज डेवोन कॉनवे (20) का विकेट। मुजीब उर रहमान की अपील अंपायर ने ठुकरा दी थी, लेकिन डीआरएस के बाद कॉनवे को पवेलियन का रास्ता नापना पड़ा।

यंग और रचिन रविंद्र (41 गेंद पर 32) ने अफगानिस्तान के लचर क्षेत्ररक्षण का फायदा उठाकर सहजता से रन बटोरे तथा दूसरे विकेट के लिए 79 रन जोड़े। न्यूजीलैंड ने इस तरह से लगातार चौथे मैच में दूसरे विकेट के लिए कम से कम अर्धशतकीय साझेदारी निभाई। इन दोनों बल्लेबाजों को अपनी पारी के शुरू में जीवनदान मिला था। न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों ने अनुभवी स्पिनर मोहम्मद नबी पर दबाव बनाया। यंग ने अपने तीन में से दो छक्के इस गेंदबाज पर लगाए जबकि रविंद्र ने भी एक बार उनकी गेंद छह रन के लिए भेजी। यंग ने राशिद खान पर चौका जड़कर लगातार दूसरा अर्धशतक जमाया। न्यूजीलैंड ने इसके बाद आठ गेंद के अंदर तीन विकेट गंवा दिए। ओमारजई ने पारी के 21वें ओवर में दोनों जमे हुए बल्लेबाजों को पवेलियन भेजा। उन्होंने पहले रविंद्र की गिल्लियां बिखेरी और फिर यंग को विकेटकीपर के हाथों कैच कराया। राशिद ने अगले ओवर में नए बल्लेबाज डेरिल मिशेल (01) को वापसी का रास्ता दिखाया। इससे स्कोर एक विकेट पर 109 रन से चार विकेट पर 110 रन हो गया। फिलिप्स और लैथम ने लगभग 25 ओवर तक विकेट नहीं गिरने गया लेकिन उन पर दबाव साफ दृष्टिगोचर हो रहा था। यही वजह थी कि 21वें से 30वें ओवर तक 29 और 31वें से 40वें ओवर तक 47 रन बने। इस बीच केवल चार चौके और एक छक्का लगा।

स्कोर बोर्ड

न्यूजीलैंड पारी: डेवोन कॉनवे पगबाधा मुजीब उर रहमान 20, विल यंग का अलिखिल बो ओमरजाई 54, रचिन रविंद्र बो ओमरजाई 32, डेरिल मिशेल का जदरान बो राशिद 01, टॉम लैथम बो नवीन 68, ग्लेन फिलिप्स का राशिद बो नवीन 71, मार्क चैपमैन नाबाद 25, मिशेल सैंटनेर नाबाद 07, **अतिरिक्त:** (बाई:01, **लेग बाई:** 03, नोबॉल: 01, वाइड: 05) 10 **कुल योग:** (50 ओवर में छह विकेट पर) 288 रन **विकेट पतन:** 1-30, 2-109, 3-110, 4-110, 5-254, 6-256 **गेंदबाजी:** मुजीब 10-0-57-1, फारूखी 7-0-39-0, नवीन, 8-0-48-2 नबी 8-1-41-0, राशिद 10-0-43-1, ओमरजाई 7-0-56-2

अफगानिस्तान पारी: रहमानुल्लाह गुरबाज बो हेनरी 11, इब्राहिम जदरान का सैंटनर बो बोल्ट 14, रहमत शाह का एवं बो रविंद्र 36, हशमतुल्लाह शहीदी का सैंटनर बो फर्ग्यूसन 08, अजमतुल्लाह ओमरजई का लैथम बो बोल्ट 27, इक्राम अलीखिल नाबाद 19, मोहम्मद नबी बो सैंटनर 07, राशिद खान का मिशेल बो फर्ग्यूसन 08, मुजीब उर रहमान का यंग बो फर्ग्यूसन 04, नवीन उल हक का चैपमैन बो सैंटनर 00, फजलहक फारूखी का मिशेल बो सैंटनर 00, **अतिरिक्त:** (वाइड: 05) 05 **कुल योग:** (34.4 ओवर में सभी आउट) 139 रन **विकेट पतन:** 1-27, 2-27, 3-43, 4-97, 5-107, 6-125, 7-134, 8-138, 9-139 **गेंदबाजी:** बोल्ट 7-1-18-2, हेनरी 5-2-16-1, सैंटनर 7.4-0-39-3, फर्ग्यूसन 7-1-19-3, फिलिप्स 3-0-13-0, रविंद्र 5-0-34-1

बांग्लादेश से जीत की लय जारी रखने उतरेगी भारतीय टीम

भाषा। पुणे

भारतीय टीम एकदिवसीय विश्व कप मैच में गुरुवार को यहां बांग्लादेश के खिलाफ मैदान पर उतरेगी तो उसकी कोशिश शानदार लय जारी रखते हुए टूर्नामेंट में लगातार चौथी जीत दर्ज करने की होगी। कप्तान रोहित शर्मा की टीम विश्व कप में हाल ही में दो मैचों में उलटफेर और भारत के खिलाफ पिछले चार मैचों में बांग्लादेश के रिकॉर्ड को देखते हुए इस मुकाबले में कोई जोखिम लेने से बचना चाहेगी।

बांग्लादेश ने पिछले चार एकदिवसीय में से तीन में भारत को शिकस्त दी है। इसमें सबसे हालिया मैच एशिया कप का है जहां उसने भारतीय टीम को छह रन से हराया था।

इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ क्रमश: अफगानिस्तान और नीदरलैंड की जीत के बाद भारत किसी भी टीम को हलके में लेने से बचना चाहेगा। बल्लेबाजी के मोर्चे पर कप्तान रोहित अपना शानदार फॉर्म जारी रखना चाहेंगे, जबकि शीर्ष क्रम के बल्लेबाज शुभमन गिल और विराट कोहली बड़ा स्कोर बनाने के लिए उत्सुक होंगे। रोहित पिछले दो मैचों में पाकिस्तान के खिलाफ 86 और अफगानिस्तान के खिलाफ 131 रनों की शानदार पारी खेलकर दबदबा बनाया जिससे भारत ने आसानी से लक्ष्य का पीछा किया। भारत अंक तालिका में शीर्ष स्थान पर है और उनका लक्ष्य अपनी जीत का क्रम आगे बढ़ाना होगा। रोहित के युवा सलामी जोड़ीदार गिल बड़ी पारी के साथ खुद इस मंच पर साबित करने के लिए उत्सुक होंगे। वह पूरी तरह से फिट हो गए हैं और इस साल वनडे में प्रभावशाली प्रदर्शन किया है। पाकिस्तान के खिलाफ कोहली का बल्ला प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहा लेकिन ऑस्ट्रेलिया (85) और अफगानिस्तान (नाबाद 55) के खिलाफ अर्धशतकीय पारियों से उन्होंने लय जारी रखी है। श्रेयस अय्यर ने पाकिस्तान के खिलाफ नाबाद अर्धशतक जड़कर भारतीय बल्लेबाजी को और मजबूत किया। पिच से अगर बल्लेबाजों को मदद मिले तो किसी भी गेंदबाजी के लिए भारतीय टीम को रोकना काफी चुनौतीपूर्ण होगा। इस मैदान पर भारतीय टीम सात में से अपने चार मैच ही जीत पाई है ऐसे में टीम को यहां सतर्क रहना होगा। जसप्रीत बुमराह और कुलदीप यादव की अगुवाई में भारतीय गेंदबाजों ने भी अब तक विरोधी टीमों को बांध कर रखा है। ऑस्ट्रेलिया की टीम 199 तो वहीं पाकिस्तान की टीम भारत के खिलाफ 191 रन पर आउट हो गई थी। पिच पर विकेट निकालने की क्षमता इन गेंदबाजों को खास बनाती है। बांग्लादेश की टीम के लिए सबसे बड़ी चुनौती रोहित शर्मा से निपटने की होगी। शानदार लय में चल रहे रोहित ने इस टीम के खिलाफ 2015 (मेलबर्न) विश्व कप मैच में 137 और 2019 (बर्मिंघम) विश्व कप में 104 रन की पारियां खेली है। भारत 2007 विश्व कप में बांग्लादेश के खिलाफ उलटफेर का शिकार होने के बाद लगातार तीन बार 300 से अधिक रन बनाने में सफल रहा है।

विश्व कप में भारतीय कप्तान के नाम रिकॉर्ड सात शतक है और वह भारतीय समर्थकों से भरे मैदान में एक और प्रभावी पारी खेलने के लिए तैयार है। बांग्लादेश के लिए अच्छी खबर यह है कि उनके कप्तान शाकिब अल हसन बाईं जांघ की चोट से उबर गए है और चयन के लिए उपलब्ध है।

भारत: रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पंड्या, शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, लोकेश राहुल, रविंद्र जडेजा, शार्दुल ठाकुर, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, कुलदीप यादव, मोहम्मद शमी, रविचंद्रन अश्विन इशान किशन ,सूर्यकुमार यादव।
बांग्लादेश: शाकिब अल हसन (कप्तान), लिटन दास, तंजीद हसन तमीम, नजमुल हसन शंटो, तौहीद हृदय, मुशफिकुर रहीम, महमूदुल्लाह रियाद, मेहदी हसन मिराज, नासुम अहमद, महेदी हसन, तास्किन अहमद, मुस्तफिजुर रहमान, हसन महमूद, शरीफुल इस्लाम और तंजीम हसन साकिब।
समय: मैच दोपहर दो बजे से खेला जाएगा।

जब आपका ध्यान सिर्फ अधिक सफल टीमों पर होगा तो उलटफेर होंगे: कोहली

भाषा। पुणे

भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने बुधवार को कहा कि विश्व कप में कोई बड़ी टीम नहीं हैं और इस टूर्नामेंट में जब लोग सिर्फ अधिक सफल टीमों की बात करते हैं तो उलटफेर की संभावना अधिक होती है।

कोहली का यह बयान मौजूदा विश्व कप में दो बड़े उलटफेरों के बाद आया है। अफगानिस्तान ने रविवार को नई दिल्ली में इंग्लैंड को 69 रन से हराया, वहीं नीदरलैंड ने मंगलवार को धर्मशाला में बारिश से बाधित मैच में दक्षिण अफ्रीका को 38 रन से हराकर इस खेल के इतिहास में अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की। कोहली ने बांग्लादेश के खिलाफ गुरुवार के मैच से पहले स्टार स्पोर्ट्स से कहा, विश्व कप में कोई बड़ी टीमें नहीं हैं। जब भी आप केवल अधिक सफल टीमों पर ध्यान केंद्रित करना शुरू करते हैं, तो निराशा होती है।

भारत 2007 विश्व कप में बांग्लादेश के खिलाफ उलटफेर का शिकार हो चुका है। टीम इसके बाद हालांकि लगातार तीन बार इस टीम पर दबदबा बनाने में सफल रही है। कोहली ने कहा कि भारतीय टीम को बांग्लादेश के कप्तान शाकिब अल हसन के खिलाफ सतर्क रहना होगा।

रोहित वनडे रैंकिंग में छठे पायदान पर पहुंचे

भाषा। दुबई

मौजूदा विश्व कप में शानदार लय में चल रहे भारतीय कप्तान रोहित शर्मा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ओर से बुधवार को जारी नवीनतम रैंकिंग में पांच स्थान के सुधार के साथ बल्लेबाजों की सूची में छठे पायदान पर पहुंच गए हैं। रोहित ने अफगानिस्तान के खिलाफ 131 रन की आक्रामक पारी खेलने के बाद चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के खिलाफ 63 गेंद में 86 रन की ताबड़तोड़ पारी खेली। दक्षिण अफ्रीका के विकेटकीपर बल्लेबाज क्विंटन डिकॉक लगातार दो शतकीय पारियों (श्रीलंका के खिलाफ 100 और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 109) के बाद छठे से तीसरे स्थान पर पहुंच गए। उन्होंने टीम के साथी खिलाड़ी रासी वैन डर डुसेन को चौथे स्थान पर खिसका दिया।

डिकॉक इस सूची में और ऊपर चढ़ने में नाकाम रहें क्योंकि नीदरलैंड के खिलाफ वह महज 20 रन की पारी ही खेल सके। इस सूची में बड़ा सुधार करने वालों में अफगानिस्तान के सलामी बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज (19 स्थान के सुधार के साथ 18वें पायदान) और नीदरलैंड के कप्तान स्कॉट एडवर्ड्स (16 स्थान के सुधार के साथ 27वें पायदान पर) शामिल है। इन दोनों बल्लेबाजों ने क्रमश: इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपनी टीम को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। रैंकिंग में शुभमन गिल दूसरे जबकि पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम शीर्ष पर मौजूद है। गिल बीमारी के कारण विश्व कप के शुरुआती दो मैचों को नहीं खेल सके जबकि पाकिस्तान के खिलाफ उन्होंने सिर्फ 12 रन बनाए। इससे बाबर को शीर्ष पर अपनी स्थिति को और मजबूत करने का मौका मिल गया।

न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने के करीब है। बांग्लादेश के खिलाफ 45 रन पर दो विकेट लेने के बाद वह शीर्ष पर काबिज जोश हेजलवुड (660 रेटिंग अंक) से महज एक अंक पीछे है। अफगानिस्तान के करिश्माई स्पिनर राशिद खान दो स्थान के सुधार के साथ गेंदबाजों में चौथे स्थान पर है।

पीसीबी की अहमदाबाद के दर्शकों के व्यवहार पर की गई शिकायत पर कार्रवाई की संभावना नहीं

नई दिल्ली। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) की अहमदाबाद में भारत के खिलाफ विश्व कप मैच के दौरान दर्शकों के कथित अभद्र व्यवहार को लेकर की गई शिकायत पर कार्रवाई होने की संभावना नहीं है क्योंकि नस्लभेदी संहिता केवल व्यक्तिगत मामलों तक सीमित है और उसके तहत एक समूह नहीं आता है। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में एक लाख से भी अधिक दर्शक मौजूद थे। पाकिस्तान का समर्थन करने के लिए पाकिस्तानी मूल के तीन अमेरिकी दर्शक ही उपस्थित थे। मोहम्मद रिजवान जब आउट होकर पवेलियन लौट रहे थे तो दर्शकों के एक समूह ने धार्मिक नारेबाजी की, इसके बाद पीसीबी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के सामने शिकायत दर्ज कराई। पाकिस्तान के क्रिकेट निदेशक मिकी आर्थर ने स्वीकार किया था कि भारत के हाथों सात विकेट की हार के दौरान उनके खिलाड़ी दर्शकों के शोर से परेशान थे। ऐसा समझा जाता है कि आईसीसी ने शिकायत पर संज्ञान लिया है और वह उस पर अपनाई जाने वाली प्रक्रिया का पता लग रही है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) और आईसीसी में काम कर चुके एक वरिष्ठ अधिकारी ने गोपनीयता की शर्त पर पीटीआई से कहा, आईसीसी प्रत्एक शिकायत को बेहद गंभीरता से लेती है लेकिन संहिता व्यक्तियों को लेकर है। मैं नहीं जानता कि पीसीबी क्या चाहता है लेकिन कोई ठोस कार्रवाई करना बेहद मुश्किल होगा।

श्रीलंका के खिलाफ मैच में डीआरएस का फैसला अपने खिलाफ जाने से नाराज वॉर्नर

नई दिल्ली। आस्ट्रेलिया के अनुभवी सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर श्रीलंका के खिलाफ विश्व कप मैच में डीआरएस का फैसला अपने खिलाफ जाने से नाराज और दुखी हैं और उन्होंने व्यवस्था में अधिक जवाबदेही की मांग की है। आस्ट्रेलिया ने लखनऊ में यह मैच पांच विकेट से जीता। वॉर्नर को श्रीलंका के तेज गेंदबाज दिलशान मदुशंका ने पगबाधा आउट किया था। वॉर्नर ने क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू से कहा , मैने कभी नहीं देखा कि हॉक आई ने बताया हो कि तकनीक कैसे काम करती है। यह सिर्फ टीवी के लिए है। उन्हें हमें बताना चाहिए कि यह कैसे काम करती है। इसके बाद हम तय करेंगे कि उन्हें रेफर करना है या नहीं। मैने मैदानी अंपायर से पूछा कि मुझे आउट क्यो दिया गया। उन्होंने कहा कि गेंद पीछे की ओर स्विंग होकर स्टम्प पर लग रही थी। मुझे ऐसा नहीं लगा। उन्होंने यह भी कहा कि यहां बॉल ट्रैकिंग फैसलों में आस्ट्रेलिया की तुलना में अधिक समय लग रहा है।

शेन बांड ने मुंबई इंडियंस से नाता तोड़ा

मुंबई। पिछले नौ साल से मुंबई इंडियंस के गेंदबाजी कोच रहे न्यूजीलैंड के पूर्व स्टार तेज गेंदबाज शेन बांड ने इस आईपीएल टीम से नाता तोड़ लिया है। बांड 2015 में मुंबई टीम से जुड़े थे और उनके गेंदबाजी कोच रहते टीम चार आईपीएल खिताब जीत चुकी है। उन्होंने मुंबई इंडियंस अमीरात के मुख्य कोच के पद से भी इस्तीफा दे दिया। उन्होंने टीम द्वारा जारी एक बयान में कहा, मैं पिछले नौ सत्र में मुंबई इंडियंस परिवार का हिस्सा बनने के लिए अंबानी परिवार को धन्यवाद देता हूं। यह बेहतरीन अनुभव रहा और मैदान के भीतर तथा बाहर काफी अच्छी यादें रही। उन्होंने कहा , इतने महान लोगों , खिलाड़ियों और स्टाफ के साथ काम करने का मौका मिलना सौभाग्य की बात रही। मुझे उन सभी की कमी खलेगी। भविष्य के लिए शुभकामनाएं। बांड 2015, 2017, 2019 और 2020 में खिताब जीतने के समय मुंबई इंडियंस के साथ थे। मुंबई ने इस साल अगस्त में श्रीलंका के लसिथ मलिंगा को गेंदबाजी कोच बनाया है।

हुर्कज उलटफेर के शिकार, ऑगर-अलियासिमे मार्च के बाद पहली बार लगातार दो मैच जीते

एपी। तोक्यो

शंघाई मास्टर्स के विजेता हुबर्ट हुर्काज को यहां जापान ओपन टेनिस के शुरूआती दौर में उलटफेर का शिकार होना पड़ा तो वहीं फेलिक्स ऑगर-अलियासिमे मार्च के बाद पहली बार लगातार दो जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में पहुंचने में सफल रहे।

हुर्काज को विश्व रैंकिंग में 57वें स्थान पर काबिज झांग झीझेन से 3-6, 6-4, 7-6 से हराया। झांग 11वीं रैंकिंग वाले हुर्काज के खिलाफ 10 ऐस लगाते हुए शंघाई में मिली अपनी हार का बदला लिया। कनाडा के 23 साल के ऑगर अलियासिमे ने सेबास्टियन ऑफनेर को 6-4, 6-1 से शिकस्त दी। इस साल मार्च के बाद पहली बार लगातार दो जीत दर्ज करने वाले ऑगर अलियासिमे अगले दौर में अमेरिका के क्वालीफायर मार्कोस गिरोन का सामना करेंगे। गिरोन ने एक और उलटफेर करते हुए आठवीं रैंकिंग वाले कैस्पर रुड को 6-3, 6-4 से हराया। पांचवीं वरीयता प्राप्त टॉमी पॉल ने अमेरिका के साथी खिलाड़ी मैकेंजी मैकडोनाल्ड को 6-4, 6-2 से हराया। वह 12वीं रैंकिंग वाले पॉल बेन शेल्टन या जॉर्डन थॉम्पसन से खेलेंगे।

पेन अमेरिकी खेलों में पदार्पण करेगा ब्रेकिंब, स्पोर्टस क्लाइंबिंग और स्कटबोर्डिंग

सैंटियागो (चिली)। सैंटियागो में होने वाले पेन अमेरिकी खेलों में युवाओं को लुभाने के लिए ब्रेकिंग, स्पोर्टस क्लाइंबिंग और स्केटबोर्डिंग खेलों को शामिल किया जाएगा।

तोक्यो ओलंपिक में स्पोर्टस क्लाइंबिंग और स्केटबोर्डिंग को शामिल किया गया था जबकि ब्रेकडांस अगले साल पेरिस ओलंपिक का हिस्सा होगा। पेन अमेरिकी खेल हर चार साल में अमेरिका में आयोजित होते हैं और आम तौर पर ओलंपिक से एक साल पहले होतेहैं। इस बार नवंबर से होने वाले खेलों में 41 देशों के 6800 खिलाड़ी भाग लेंगे।

इस बार ब्रेकिंग और स्पोर्टस क्लाइंबिंग में पेरिस ओलंपिक के लिए सीधे कोटा मिलेगा।

बेखौफ क्रिकेट से भारत दूसरी टीमों को खौफजदा कर रहा है: हाथुरुसिंघा

भाषा। पुणे

बांग्लादेश के मुख्य कोच चंडिका हाथुरुसिंघा ने गुरुवार को यहां कहा कि भारतीय टीम इस समय बेखौफ क्रिकेट खेलकर प्रतिद्वंद्वी टीमों में खौफ पैदा करने में सफल रही है। बांग्लादेश के सामने शुक्रवार को यहां आईसीसी विश्व कप मैच में भारत की चुनौती होगी। बांग्लादेश ने शुरुआती मैच जीतने के बाद लगातार दो मैच गंवाए हैं, वहीं भारतीय टीम जीत की हैट्रिक लगाने में सफल रही है। हाथुरुसिंघा ने भारत के खिलाफ मैच की पूर्व संध्या पर यहां कहा, मुझे लगता है कि उन्होंने (भारतीय टीम) हर विभाग को दुरुस्त किया है। उनके पास स्ट्राइक गेंदबाज हैं। बुमराह अतीत की तरह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं। उनके पास बीच के ओवरों में अच्छे, अनुभवी स्पिनर हैं। उनकी बल्लेबाजी, विशेष रूप से शीर्ष क्रम आक्रामक है। इस स्तर पर टीम जिस तरह से बेखौफ खेल रही है वह किसी भी टीम के डगवना है। ऐसा लगता है कि वे इस समय अपने क्रिकेट और अपने घरेलू विश्व कप का लुत्फ उठा रहे हैं। उन्हें दर्शकों का काफी समर्थन मिल रहा है। बांग्लादेश के कप्तान शाकिब अल हसन ने जांघ की मांसपेशियों में चोट से सुधार के बाद नेट सत्र में अच्छा समय बिताया। हाथुरुसिंघा ने हालांकि कहा कि यह वामहस्त हरफनमौला भारत के खिलाफ विश्व कप मैच तभी खेलेगा, जब वह पूरी तरह से फिट महसूस करेगा।

पाक की नजर अफरीदी के फॉर्म में लौटने पर

शादाब की जगह ले सकते हैं उस्मा मीर

भाषा। बेंगलुरु

पाकिस्तान के अधिकतर खिलाड़ियों ने जहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शुक्रवार को होने वाले मैच से पहले बुधवार को यहां सहज होकर अभ्यास किया वहीं तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी ने फॉर्म में लौटने के लिए कड़ी मेहनत की।

अफरीदी गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल के साथ चिन्नास्वामी स्टेडियम के मैदान पर पहुंचे। पाकिस्तान के लिए यह राहत की बात है कि उन पर बुखार के कोई लक्षण नहीं दिखे जिसने कि टीम के यहां पहुंचने पर खिलाड़ियों को जकड़ दिया था।

इस 23 वर्षीय तेज गेंदबाज ने मोर्कल की निगरानी में नेट पर छोटे रन अप से गेंदबाजी की। इसके बाद उन्होंने अपनी गति बढ़ाई और दाएं हाथ के बल्लेबाजों को परेशान किया। उन्होंने बाद में बल्लेबाजी में भी हाथ आजमाया। नसीम शाह के चोटिल हो जाने के कारण बाहर हो जाने से पाकिस्तान का दारोमदार अफरीदी पर है लेकिन वह अभी तक अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं। उन्होंने अब तक तीन मैच में केवल चार विकेट लिए हैं और उनका इकोनॉमी रेट 6.31 है। पाकिस्तानी गेंदबाजों में उनसे खराब इकोनॉमी रेट केवल लेग स्पिनर शादाब खान (6.55) का है। उनका औसत भी 34.75 है।

अफरीदी के अलावा पाकिस्तान शादाब की फॉर्म को लेकर भी चिंतित है जिन्होंने अभी तक तीन मैच में दो विकेट लिए हैं और इस बीच काफी रन भी लुटाए हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उनकी जगह पर सियालकोट के रहने वाले 27 वर्षीय लेग स्पिनर उस्मा मीर को अंतिम एकादश में लिया जा सकता है। मीर बुखार से पूरी तरह उबर चुके हैं। उन्होंने अभी तक आठ वनडे मैच खेले हैं जिनमें उनके नाम पर 11 विकेट दर्ज हैं। इस बीच रिजर्व विकेटकीपर मोहम्मद हारिस को छोड़कर पाकिस्तान के सभी खिलाड़ियों ने अभ्यास सत्र में हिस्सा लिया।

क्वालीफाइंग मैच में घुटने की चोट के बाद रोते हुए बाहर गए नेमार

एपी। मोंटेवीडियो (उरूग्वे)

उरूग्वे के खिलाफ विश्व कप क्वालीफाइंग मैच में 2 . 0 से मिली हार के दौरान पहले हाफ में घुटने में चोट लगने के कारण ब्राजील के स्टार फुटबॉलर नेमार रोते हुए मैदान से बाहर गए।

31 वर्ष के नेमार 44वें मिनट में दौड़ते हुए गिर गए। दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने उन्हें घेर लिया जब वह घुटना पकड़कर बैठे थे। उन्हें जब स्ट्रेचर पर ले जाया गया तो उन्होंने अपने हाथों से चेहरा ढक लिया था। उनकी जगह रिचार्लिसन ने मैच खेला। वह बैसाखियों के सहारे स्टेडियम से बाहर गए। ब्राजील के डॉक्टर रौद्रिगो लसमार ने कहा कि अभी यह कहना मुश्किल है कि उनकी चोट किस स्तर की है। उन्होंने कहा , हमने टेस्ट किए हैं और कल फिर करेंगे। इन 24 घंटों में पता चलेगा कि चोट कैसी है।

भारत विजई संयोजन में बदलाव नहीं करेगा: म्हाम्ब्रे

भाषा। पुणे

गेंदबाजी कोच पारस म्हाम्ब्रे ने बुधवार को कहा कि विश्व कप में लगातार चौथी जीत का इरादा रखने वाली भारतीय टीम बांग्लादेश के खिलाफ मुकाबले में अपने विजई संयोजन के साथ छेड़छाड़ नहीं करेगी।

म्हाम्ब्रे की इन बातों से यह साफ हो गया कि सूर्यकुमार यादव और मोहम्मद शमी जैसे खिलाड़ी बेंच पर बने रहेंगे। भारतीय टीम गुरुवार को विश्व कप के अगले मुकाबले में बांग्लादेश का सामना करेगी।

भारत ने पांच बार के चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व कप में अपने अभियान की शानदार शुरुआत करने के बाद अफगानिस्तान और चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान पर एकतरफा जीत दर्ज की। म्हाम्ब्रे ने कहा कि टीम ने सर्वोत्तम हित को ध्यान में रखते हुए शमी, सूर्यकुमार और रविचंद्रन अश्विन जैसे क्षमता वाले खिलाड़ियों को एकादश से बाहर करने का कड़ा फैसला लिया है।

म्हाम्ब्रे ने भारतीय टीम के अभ्यास सत्र से पहले मीडिया से कहा, शुरुआत (जीत की लय) को बरकरार रखना जरूरी है। अभी तक हमारे नजरिए से बदलाव की कोई चर्चा नहीं हुई है। हम इस लय को अगले मैच में भी बरकरार रखना चाहते हैं। म्हाम्ब्रे ने हालांकि माना कि शमी और अश्विन जैसे गेंदबाजों को टीम से बाहर रखने का फैसला मुश्किल है लेकिन टीम प्रबंधन हर खिलाड़ी से बात करता है। उन्होंने कहा, इमानदारी से कहूं तो यह आसान नहीं है लेकिन हम सभी खिलाड़ियों से बात करते हैं। जब भी हम टीम का चयन करते हैं तो यह संदेश साफ होता है कि हम पिच को ध्यान में रखते हुए सर्वश्रेष्ठ टीम का चयन करते हैं।

उन्होंने कहा, ऐसे में कई बार आप टीम से बाहर हो सकते हैं। अश्विन की तरह का गेंदबाज भी टीम से बाहर है और मेरा मानना है कि इसे लेकर उससे हमारी बातचीत बिलकुल स्पष्ट रही है। म्हाम्ब्रे ने कहा कि यही स्थिति सूर्यकुमार और शमी के साथ भी है।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। पत्रवार्ता ऑफिस- एफ-31, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301, उत्तर प्रदेश, दूरभाष- 120-4879900।